!! श्री गणेशाय नमः !!

शुक्लयजुर्वेदीय सरल रुद्राष्टाध्यायी

ॐ

संकलन – संपादन

श्री सिद्ध बाबा

सह–संपादन

श्री राधामोहन शर्मा

श्रीमती कुसुम शर्मा

तृतीय संस्करण

संवत 2072 आषाढ़ मास शुक्ल पक्ष

गुरू पूर्णिमा

31 अगस्त 2015

सम्पर्क सूत्र :–

श्री सिद्धेश्वर महादेव

नगला अकवा, गोवर्धन सौंख रोड,

मथुरा (उ0प्र0)

फोन : 09826111224, 09003257004

: मंदिर आने के लाभ :

पुराने सभी मंदिर धरती के धनात्मक ऊर्जा केन्द्रो पर बनाये गये है ये मंदिर आकाशीय ऊर्जा के ग्रिड है। व्यक्ति मंदिर में नंगे पाँव होता है। इससे शरीर का अर्थ हो जाता है। जब हाथ जोड़ता है तो शरीर का ऊर्जा चक्र चलने लगता है मूर्ति के आगे सिर झुकाता है तो मूर्ति से परावर्तित होने वाली पृथ्वी व आकाशीय ऊर्जा तरंगे मस्तिष्क पर पड़ती है और मस्तिष्क में स्थिर आज्ञा चक्र पर प्रभाव डलती है। इससे शांति मिलती है तथा सकारात्मक विचार आते है व्यक्ति हल्कापन महसूस करने लगता है।

: पूजा के लाभ :

पूजा एक रासायनिक क्रिया है इससे मंदिर के भीतर वातावरण की पीएच वैल्यू तरल पदार्थ को नापने की ईकाई कम हो जाती है और व्यक्ति की पीएच वैल्यू पर असर पड़ता है यह एक आयनिक प्रक्रिया है जो शारीरिक रसायन शास्त्र को बदल देती है यह क्रिया बीमारियों को ठीक करने के लिए प्रभाव डलती है दवाओं से भी यही क्रिया कराई जाती है मंदिर में भी यही होता है मंदिर में शिखर होते है शिखर के भीतर सतह से टकराकर ऊर्जा तरंगे ध्वनि तरंगे व्यक्ति के ऊपर पड़ती है वह परावर्तित तरंगे मानव शरीर की प्राकृति आवृत्ति बनाये रखने में भी सहायक होती है। शरीर एक तरह से धीरे-धीरे मंदिर के भीतरी माहौल से सामन्जस्य स्थापित कर लेता है और इस तरह असीम सुख का अनुभव होता है।

संकलन : श्रीमती कुसुम शर्मा

आत्म निवेदन

*भगवान सदाशिव की उपसना में '**रूद्राष्टाध्यायी**' का विशेष महात्म्य है। जो साधक मन, कर्म तथा वाणी से पवित्र होकर भगवान सदाशिव की प्रसन्नता के लिये '**रूद्राभिषेक**' करता है। वह शिव कृपा से सभी मनोरथ पूर्ण करके, जीवन के अन्त में 'परम गति' को प्राप्त कर शिवलोक में स्थान पाता है।*

'**रूद्राष्टाध्यायी**' *का ज्ञान वेद की क्लिष्ट संस्कृत भाषा में होने के कारण ही विद्वानों तक सीमित है, लेकिन यह ज्ञान सभी के लिये था, इस पर सभी का अधिकार है, यह ज्ञान सबको मिले, इसी को विचार कर* '**शुक्लयजुर्वेदीय एवं सरल रूद्राष्टाध्यायी**' *रूद्राभिषेक विधि सहित पुस्तक अत्यन्त सरल रूप में आपके समक्ष है। जिससे कि जन सामान्य भी आसानी से रूद्राभिषेक करके शिव कृपा प्राप्त कर सकता है। आशा है, यह पुस्तक शिव भक्तों को विशेष रूप से आनन्दित करेगी। यह मेरा एक छोटा सा प्रयास है। यदि इसमें मेरे ज्ञानाभाव, आलस्य और प्रमाद के कारण कुछ त्रुटियाँ रह गयीं हों, उन त्रुटियों को यदि मुझे आप अवगत करायेंगे तो, मैं आपका हमेशा ऋणी रहूँगा।*

पुस्तक आपके हाथों मे आने तक जिसने किंचित मात्र भी सहयोग किया है, मैं उनका ऋणी हूँ। विशेष रूप से श्री सतीश शर्मा एवं श्री हरिशंकर शर्मा जिन्होंने अपना अमूल्य समय देकर सरल भाषा में '**रूद्राष्टाध्यायी**' *का कार्य सम्पादित किया इस कार्य को त्रुटिहीन बनाने में* **श्री श्री माँ आनन्दमयी** *आश्रम, बैरागढ़, भोपाल, मध्य प्रदेश ब्रह्मचारिणी गुणीता जी एवं वाराणसी, उत्तर प्रदेश के श्री पी के जोशी जी का योगदान सराहनीय है। मैं इनका आभारी रहूँगा।*

इस कार्य में समस्त सहयोगी जनों द्वारा दिये गये सहयोग को नमन करता हूँ एवं उनके लिये भगवान सदाशिव से मंगल कामना करता हूँ।

'श्री सिद्धबाबा'

गुरूदेव का संक्षिप्त जीवन परिचय

आत्मप्रेरणयोदेति कृपया च गुरोरयम्। यो हि जीवन क्षेत्रस्य प्रथमाभूतिरूच्यतेक्तं।।

इमं ये प्राप्नुवन्त्यभ्युदय द्वारमनावृतम्। कुर्वन्त्यग्रे सरंत्येते मुख्य लक्ष्यदिशिध्रुवमक्तं।

परमपूज्य श्री श्री 1008 श्री स्वामी भास्करानन्दजी *का जन्म सौराष्ट्र के भावनगर में सुप्रसिद्ध चिकित्सक श्री मोहन भाई दवे के घर* **1917 फरवरी की 7 तारीख** *को द्वितीय संतान के रूप में हुआ। इनके बाद छः भाईओं का और जन्म हुआ। पूज्य भास्करानन्दजी का बचपन का नाम* **भरत भाई दबे** *था। वाल्यकल में पाँच साल की उम्र से ही जंगल में चले जाते थे इस कारण इनके सहपाठी इनको चिढ़ाया करते थे। घर गृहस्थी नहीं वसायेगा स्वामी वन जायेगा इत्यादि। पूज्य स्वामीजी के पिताजी भी इस कारण चिंतित रहते थे। और अनेक ज्योतिषयों से अपने पुत्र के भविष्य के बारे में पूछते थे।* **अधिकांश ज्योतिषी, महापुरूष एवं सन्तो का यही मत था कि यह बालक घर में नहीं रहेगा।** *स्वामीजी की शिक्षा इण्टर तक भावनगर के श्यामलदास कालेज में हुयी तत्पश्चात् एक वर्ष के प्रशिक्षण के लिये मुम्बई चले गये। प्रशिक्षण पूरा करके पुनः भावनगर आकर अंशकालीन काम के साथ वकालत की पढ़ाई भी करते थे। स्वामीजी के एक मित्र ने अनेक महापुरूषों के आध्यात्मिक जीवन की किताबें स्वामीजी को लाकर दीं जिनमें* **महर्षि रमण, पापा रामदास एवं श्री श्री माँ आनन्दमयी की किताबें थी।** *इस समय स्वामीजी की उम्र 22-23 वर्ष थी। पूज्य स्वामीजी ने अहमदाबाद के एल ए शाह लौ कॉलेज में प्रवेश लिया वहाँ के प्रधानाचार्य श्री मुकुन्द भाई ठाकुर माँ के अत्यन्त भक्त थे। उन्होंने एक दिन अपने विद्यार्थियों को माँ के बारे में बताया और कहा माँ भावनगर आयी हुयी हैं। उनके दर्शन अवश्य करना। स्वामीजी ने सहपाठियों के साथ पूज्य माँ के दर्शन किये। फिर स्वामीजी अक्सर माँ के दर्शन हेतु जाने लगे। सन् 1958-59 की बात है माँ गुजरात मेल से अन्यत्र रवाना हो रही हैं इसकी जानकारी मिली तो स्वामीजी माँ के दर्शन हेतु स्टेशन गये वहाँ पर गाड़ी स्टेशन छोड़ रही थी भागते-भागते स्वामीजी ने माँ के दर्शन किये। स्वामीजी के ही शब्दों में (यह मेरे जीवन का टर्निंग पॉइन्ट था)। एक बार स्वामीजी ने माँ से पूछा क्या वह नौकरी छोड़ दें, माँ ने कहा अभी नहीं महीने, दो महीने या साल भर में आते रहना। सन् 1961 में स्वामीजी माँ से मिलने सोलन गये माँ ने कहा क्या अब तुम काम छोड़ सकते हो। त्याग पत्र तो हर समय उनके साथ ही रहता था सहमति प्रकट की और त्याग पत्र अपने कर्मक्षेत्र को भेज दिया।*

माँ ने स्वामीजी को **विन्ध्याचल आश्रम** *जाने का निर्देश दिया। स्वामीजी ने सोचा मुझे माँ ने यहाँ भेज दिया पर यह नहीं कहा कि क्या जप करना है। अपने अन्दर से जो आता उसी प्रकार ध्यान इत्यादि किया। इस प्रकार स्वामीजी विन्ध्याचल आश्रम में दो वर्ष रहे। फिर माँ ने* **उत्तरकाशी आश्रम** *में जाने का निर्देश दिया वहाँ पर स्वामी निर्वाणानन्दजी रहते थे। सन् 1962 में पूज्य स्वामीजी को* **माँ ने तीन वर्ष का पुरष्चरण नैष्ठिक ब्रह्मचर्य वृत धारण हरिद्वार में करने का निर्देश ही नहीं दिया अपितु एक वात्सल्यमयी माँ की तरह तीन वर्ष तक पूरा ध्यान रखते हुये यह अनुष्ठान सम्पन्न कराया। सन् 1970 में आनन्दमयी संघ से दीक्षा देने का अधिकार माँ के सानिध्य में तीन ब्रह्मचारियों को दिया गया जिसमें से एक स्वामीजी भी थे। इस कार स्वामीजी को माँ का पायलट कहा जाने लगा। माँ के अव्यक्त में प्रवेश 27 अगस्त 1982 में पूज्य स्वामीजी निर्वाणानन्नदजी तथा संघ के प्रमुख स्वरूपानन्द जी उपस्थित नहीं थे वे कैलाश दर्शन के लिये कैलाश मानसरोवर में थे। भारत सरकार के विशेष यान से पूज्य स्वामीजी गण लौटे तब तक श्री श्री माँ की महासमाधि बन चुकी थी।** *ऐसे समय पूज्य स्वामीजी ने भक्तों को सहारा दिया कुछ दिनों के बाद आश्रम के ही वयोवृद्ध* **सन्यासी सच्चिदानन्द जी से संन्यास दीक्षा प्राप्त की और स्वामी भास्करानन्दजी के रूप में भक्तों में परिचित हुये।** *स्वामीजी का स्वास्थ्य ठीक न हाने पर भी विदेश गये वहाँ श्री श्री माँ की अमृत वाणी का प्रचार किया तथा नवागतों को माँ की अमृतमयी संनिधि से जोड़ने का अथक प्रयास किया। गुजरात में पूज्य स्वामीजी के प्रयास से श्री श्री माँ के जीवन चरित्र को पाठ्य पुस्तकों में रखा गया है। गत वर्ष स्वास्थ्य उनके अनुकूल न होने पर चिकित्सकों के मना करने पर भी संयम सप्ताह के साठवें महाव्रत में उन्होंने योगदान किया। ऐसा था उनका समर्पण। गुजरात के भीमपुरा आश्रम में साधना सप्ताह का प्रारम्भ किया जो आपकी जन्मतिथि 7 फरवरी को समाप्त होता है। जिसमें अनेक नवागत भक्त देश विदेशों से सम्मिलित होते हैं। अनेक नवयुवकों को श्री श्री माँ के चरणों से जोड़ा इससे बड़ी सेवा और क्या हो सकती है।* **हमारे पूज्य गुरुजी श्री श्री 1008 श्री स्वामी भास्करानन्द जी महाराज 8 अप्रैल 2010 गुरुवार प्रातः 5 बजे की बेला में माँ नर्मदा तट पर स्थित श्री श्री माँ के भीमपुरा आश्रम में सदा के लिये श्री श्री माँ के चरणों में ब्रह्मलीन हो गये।**

धन्यानां गिरिकन्दरेषु वसंता ज्योतिः परं ध्यायता। मानन्दाश्रुजलं पिबन्ति शकुना निशक्क केशवाः।।
अस्माकं तु मनोरथोपरचित प्रसादवापी तट। क्रीडाकाननकेलि कौतुकजुषामायुः परं क्षीयते।।

(भर्तृहरि शतक शंकर वन्दना)

विषय सूची

क्र0 सं0	विषय	पृष्ठ सं0
1.	रूद्रपाठ के भेद	8
2.	रूद्राभिषेक द्रव्य एवं उनके प्रयोग	11
3.	अभिषेक के लिये साधन	
4.	पूजन के लिये सामान	
5.	रूद्राभिषेक विधि	
6.	गणेशाम्बिका पूजन	
7.	शिव पार्षदों का पूजन	
8.	नवग्रह पूजन	
9.	सर्वदेव पूजन	
10.	शिव पूजन	
11.	प्रथम अध्याय	
12.	द्वितीय अध्याय	
13.	तृतीय अध्याय	
14.	चर्तुथ अध्याय	
15.	पंचम अध्याय	
16.	षष्ठ अध्याय	
17.	सप्तम अध्याय	77
18.	अष्टम अध्याय	
19.	नवम् अध्याय (शान्ति अध्याय)	
20.	दशम अध्याय (स्वस्ति मंत्र)	
21.	शिव पूजन (उत्तर पूजन)	
22.	आरती	
23.	प्रार्थना	
24.	पुष्पांजलि	
25.	क्षमा प्रार्थना शान्ति पाठ इत्यादि	
26.	विसर्जन	
27.	शिव पंचाक्षर स्तोत्र	
28.	द्वादशज्योतिर्लिंग स्मरणं	
29.	लिंगाष्टकम्	
30.	शिव ताण्डव स्तोत्र	
31.	शिव सहस्त्र नाम स्तोत्र	
32.	शिवलिंग में सभी देवताओं का पूजन एवं स्तुति	
33.	शिव मानस पूजा	

रूद्र पाठ के भेद

शास्त्रों में रूद्र पाठ के पाँच प्रकार बतायें गये हैं। जो कि निम्नवत् है।

1. **रूपक या षडंग पाठ :-** *पूरे दस अध्यायों की एक सामान्य आवृत्ति रूपक या षडंग पाठ कहलाता है। रूद्र के छः अंग होने के कारण इसका पूरा पाठ षडंग पाठ कहलाता है।*

क्र. सं.	अध्याय एवं मंत्र	अंग नाम
1.	प्रथम अध्याय के 5वें मंत्र से 10वें मंत्र तक	हृदयरूपी अंग या शिवसंकल्प सूक्त
2.	द्वितीय अध्याय के पहले मंत्र से 16वें मंत्र तक	सिररूपी अंग या पुरुष सूक्त
3.	द्वितीय अध्याय के 17वे मंत्र से 22वें मंत्र तक	शिखास्थानीय अंग या उत्तरनारायण सूक्त
4.	तृतीय अध्याय के पहले मंत्र से 12 वें मंत्र तक	कवचरूप अंग या अप्रतिरथ सूक्त
5.	चतुर्थ अध्याय के पहले मंत्र से 17 वें मंत्र तक	नेत्ररूप अंग या मैत्रसूक्त
6.	पंचम अध्याय के पहले मंत्र से 66 वें मंत्र तक	अस्त्ररूप अंग या शतरूद्रिय या नमकाध्याय

2. रूद्री या एकादशिनी : रूपक या षडंग पाठ में नमकाध्याय (पंचम) तथा चमकाध्याय (अष्टम्) का संयोजन कर नमकाध्याय (पंचम) की ग्यारह आवृत्ति को रूद्री या एकादशिनी कहते हैं।

प्रथम आवृत्ति प्रथम अध्याय से अष्टम अध्याय के चतुर्थ मंत्र तक पाठ (ॐ गणानान्त्वा...............वृद्धिश्च में जग्न्येन कल्पन्ताम्)

द्वितीय आवृत्तिपंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम् अध्याय के 5वें मंत्र से 8 वें मंत्र तक पाठ (सत्यं च मे श्रद्धा च में...........जशश्च में जग्न्येन कल्पन्ताम्)

तृतीय आवृत्ति पंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 9वें मंत्र से 12वे मंत्र तक पाठ (ऊर्क च मे सूनृता च मे........मसूराश्च में जग्न्येन कल्पन्ताम्)

चर्तुथ आवृत्ति पंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 13वें मंत्र से 15वे मंत्र तक पाठ (अश्मा च मे मृतिका च मे.....गतिश्च में जग्न्येन कल्पन्ताम्)

पंचम आवृत्ति पंचम अध्यय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 16वें मंत्र से 18वें मंत्र तक पाठ (अग्निश्च म इन्द्रश्च में............दिशश्च म इन्द्रश्च में जगन्येन कल्पन्ताम्)

षष्टम आवृत्ति पंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 19वें मंत्र से 21वें मंत्र तक पाठ (अ गुँ शुश्च मे.............स्वगाकारश्च में जग्न्येन कल्पन्ताम्)
सप्तम् आवृत्तिपंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 22वे मंत्र से 23वें मंत्र तक पाठ (अग्निश्च मे धर्मश्च मे.........वृहद्रथन्तरे च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्)
अष्टम आवृत्तिपंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 24वें मंत्र का पाठ (एका च मे..............त्रयस्त्रि गुँ शच्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्)
नवम आवृत्ति पंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 25वें मंत्र का पाठ (चतस्त्रश्च मे..............अष्टाचत्वारि गुँ शच्च में जग्न्येन कल्पन्ताम्)
दशम आवृत्ति पंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 26वें मंत्र से 27वें मंत्र तक पाठ (त्रयविश्च मे..............धेनुश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्)
एकादश आवृत्ति पंचम अध्याय के पाठ के बाद अष्टम अध्याय के 28वें मंत्र से 29वें मंत्रों के पाठ के बाद शान्ति अध्याय एवं स्वस्ति मंत्रो का पाठ (बाजाय स्वाहा...............वेदानां गुँ रसेनाभिषिंचति)

3. लघु रूद्र : एकादशिनी रूद्री की ग्यारह आवृत्तियों के पाठ को लघुरूद्र पाठ कहा जाता है। यह लघु रूद्र अनुष्ठान एक दिन में 11 ब्राह्मण वरण करके या एक ब्राह्मण द्वारा अथवा स्वंय लगातार 11 दिनों तक एक एकादशिनी पाठ नित्य करने पर सम्पन्न होता है।

4. **महा रूद्र :** *लघु रूद्र की ग्यारह आवृत्तियों या एकदशिनी रूद्री की 121 आवृत्तियों के पाठ को महारूद्र पाठ कहा जाता है। यह महारूद्र अनुष्ठान लगातार 11 दिनों में 11 ब्राह्मण वरण करके या एक दिन में 121 ब्राह्मणों द्वारा एक एकादशिनी पाठ करने पर सम्पन्न होता है।*

5. **अति रूद्र :** *महारूद्र की ग्यारह आवृत्तियों या एकादशिनी रूद्री की 1331 आवृत्तियों के पाठ को अतिरूद्र पाठ कहा जाता है। लगातार 11 दिनों में 121 ब्राह्मणों द्वारा एक एकादशिनी पाठ करने पर सम्पन्न होता है।*

ये अनुष्ठान पाठात्मक, अभिषेकात्मक तथा

हवनात्मक तीनों प्रकार से किये जा सकते हैं।

रूद्राभिषेक द्रव्य एवं उनके प्रयोग

क्र.सं.	द्रव्य	प्रयोग
1.	दुग्ध	पुत्र प्राप्ति, चिरजीवी एवं प्रमेह रोग
2.	घृत	वंश विस्तार, आरोग्यता एवं धन प्राप्ति के लिये
3.	मधु	टी वी रोग, पापक्षय एवं धन प्राप्ति के लिये
4.	शर्करामिश्रित दुग्ध	तीव्र वुद्धि के लिये
5.	गन्नारस	लक्ष्मी प्राप्ति हेतु
6.	गन्ध जल	लक्ष्मी प्राप्ति हेतु
7.	कुशोदक	रोग निवृत्ति हेतु
8.	सरसों का तेल	शत्रुनाश के लिये
9.	जल	वृष्टि हेतु
10.	दही	पशु प्राप्ति हेतु
11.	गंगाजल	मुक्ति प्राप्ति हेतु
12.	तीर्थजल	मुक्ति प्राप्ति हेतु

अभिषेक के लिये साधन

शिवालय के अभाव में निम्नलिखित शिवलिंगों में से श्रद्धानुसार शिवलिंग लाकर घर में भी रूद्राभिषेक कर सकते हैं।

1. पारद शिवलिंग
2. नर्मदेश्वर शिवलिंग
3. स्वर्ण शिवलिंग
4. चांदी शिवलिंग
5. पार्थिव शिवलिंग
6. तांवा शिवलिंग
7. लोहे के शिवलिंग
8. लकड़ी के शिवलिंग
9. कलश 1
10. श्रंगी 1 या 3 या 5 या 11

11 पंचपात्र 2 (यजमान एवं आचार्य के लिये)

12 दीपक 1 और 11

13 परात 2 (पूजन एवं दूध के लिये)

14 दूध के लिये वर्तन

एकादशिनी रूद्राभिषेक एवं पूजन के लिये सामान

क्र. सं.	नाम एवं मात्रा	क्र. सं.	नाम एवं मात्रा	क्र. सं.	नाम एवं मात्रा
1.	दूध 11 किलो	15.	अवीर 10 ग्राम	29	मिष्ठान 11
2.	दही 100 ग्राम	16.	सिन्दूर 10 ग्राम	30	पुष्पमाला 5
3.	घी 100 ग्राम	17 .	पान 11	31	पुष्प 1 किलो
4.	चीनी 100 ग्राम	18.	सुपारी 21	32	ऋतुफल 11
5.	शहद 50 ग्राम	19.	लवंग 11	33	विजया/भांग 10 ग्राम
6.	गंगाजल 100मिली.	20.	इलायची 11	34	भस्म 10 ग्राम
7.	पंचामृत 100 मिली.	21.	रोली 10 ग्राम	35	नारियल कलश के लिये 1
8.	विल्वपत्र 150	22.	मोली 2 वन्डल	36	चावल 500 ग्राम
9.	दूर्वा 150	23.	धूपवत्ती 1 पैकट	37	आम के पत्ते 21 या अधिक
10.	आकपुष्प 150	24.	केशर आधा ग्राम	38	दौना प्रसाद के लिए
11.	धूतरफल 150	25.	कपूर 1 पैकट	39	प्लेट प्रसाद के लिए
12.	रूई 10 ग्राम	26.	इत्र 1 शीशी	40	गिलास प्रसाद के लिए
13.	माचिस 1	27.	चन्दन	41	चम्मच
14.	तुलसी दल 11	28.	यज्ञोपवीत 11		

!! श्री गणेशाय नमः !!

रूद्राभिषेक विधि

(आसन पर बैठने के बाद निम्न कर्म करें)

1. शिखा बन्धन मंत्र पढ़ते हुये अपनी शिखा (चोटी) को बांधें अथवा स्पर्श करें। स्त्रियां केवल स्पर्श करें

चिद्रूपिणि महामाये दिव्यतेजः समन्विते। तिष्ठ देवि शिखा मध्ये तेजोवृद्धिं कुरुष्व मे।

2. तिलक मंत्र पढ़ते हुये चन्दन या भस्म से तिलक लगाऐं।

ॐ त्रयायुखं जमदग्नेरिति ललाटे। *ललाट पर लगाऐं।* ॐ कश्यपस्य त्रयायुखमिति ग्रीवायाम्। *ग्रीवा पर लगाऐं।*

ॐ यद्देवेखु त्रयायुखमिति भुजायाम्। *भुजा पर लगाऐं।* ॐ तन्नो अस्तु त्रयायुखमिति हृदये। *हृदय पर लगाऐं।*

3. आचमन

ॐ केशवाय नमः । जल से आचमन करें ॐ नारायणाय नमः। जल से आचमन करें

ॐ माधवाय नमः। *जल से आचमन करें* ॐ गोविन्दाय नमो नमः बोलकर हाथ धोले।

4. पवित्रीकरण (स्वयं) बायें हाथ में जल लेकर मंत्र पढते हुये दायें हाथ से अपने ऊपर छींटे लगायें।

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतो अपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः।।

ॐ पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु, पुण्डरीकाक्षः पुनातु

5. पवित्रीकरण (आसन) दायें हाथ में जल लेकर मंत्र पढ़ने के बाद आसन के नीचे जल छोड़ें

ॐ पृथ्वीति मंत्रस्य मेरूपृष्ठ ऋषिः सुतलं छन्दः कूर्मो देवता आसन पवित्र करणे विनियोगः।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वम् विष्णुनाधृता। त्वम् च धारय माम्देवि पवित्रं कुरु चासनम्।।

6. वरण सूत्र – *(यजमान आचार्य से बंधवायें)*

येन बद्धो बली राजा दानवेन्द्रो महाबलः। तेन त्वाम प्रतिबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

मंगलं भगवान विष्णुः मंगलं गरूडध्वजः। मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः।।

7. वरण सूत्र – (यजमान आचार्य के बांधे)

ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति दीक्षयाप्नोति दक्षिणाम्। दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति श्रद्धया सत्यमाप्यते।

8. गुरू वन्दना – (हाथ में पुष्प, अक्षत लेकर निम्न गुरू वन्दना करें)

ॐ गुरूर्ब्रह्मा गुरूर्विष्णुः गुरूर्देवो महेश्वरः। गुरूः साक्षात्परब्रह्म तस्मै श्री गुरूवे नमः।।

अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरं। तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः।।

ध्यानमूलं गुरूमूर्ति पूजा मूलं गुरु पदम्। मंगल मूलं गुरु वाक्यं मोक्ष मूलं गुरु कृपा।।

9 शिवरक्षा स्तोत्र – भगवान शिव का ध्यान करें।

विनियोग : ॐअस्य श्रीशिवरक्षा स्तोत्र मन्त्रस्य याज्ञवल्क्य ऋषिः श्रीसदाशिवो देवता, अनुष्टुप छन्दः, श्रीसदाशिव प्रीत्यर्थम्, शिवरक्षा स्तोत्र जपे विनियोग :। एक आचमनी जल छोड़ें

चरितं देवदेवस्य महादेवस्य पावनम्। अपारं परमोदारं चतुर्वर्गस्य साधनम्।।
गौरी विनायकोपेतं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रकम्। शिवं ध्यात्वा दशभुजं शिवरक्षां पठेन्नरः।।
गंगाधरः सिरः पातु भालमर्धेन्दु शेखरः। नयने मदनध्वंसी कर्णो सर्पविभूषणः।।

घ्राणम पातु पुरारातिर्मुखं पातु जगत्पतिः। जिभ्यां वागीश्वरः पातु कन्धरां शितिकन्धरः।।
श्रीकण्ठः पातु मे कण्ठं स्कन्धौ विश्वधुरन्धरः। भुजौ भूभार संहर्ता करौ पातु पिनाकधृक्।।
हृदयं शंकरः पातु जठरं गिरिजापतिः। नाभिं मृत्युंजयः पातु कटी व्याघ्रा जिनाम्बरः।।
सक्थिनी पातु दीनार्त शरणागत वत्सलः। उरू महेश्वरः पातु जानुनी जगदीश्वरः।
जंघे पातु जगत्कर्ता गुल्फौ पातु गणाधिपः। चरणौ करूणासिन्धुः सर्वांगानि सदाशिवः।
एतां शिवबलोपेतां रक्षां यः सुकृती पठेत्। स भुक्त्वा सकलान कामान शिवसायुज्य माप्नुयात्।
ग्रह भूत पिशाचाद्या स्त्रैलोक्ये विचरन्ति ये। दूरादाशु पलायन्ते शिवनामाभि रक्षणात्।
अभयंकर नामेदं कवचं पार्वतीपतेः। भक्त्या विभर्ति यः कण्ठे तस्य वश्यं जगत्रयम्।
इमां नारायणः स्वप्ने शिवरक्षां यथादिशत्। प्रातरूत्थाय योगीन्द्रो यागवल्क्य स्तथा लिखित्।

! इति श्रीयाज्ञवल्क्यप्रोक्तं शिवरक्षास्तोत्रं सम्पूर्णम् !

10. स्वस्तिवाचन – *हाथ में पुष्पाक्षत लेकर निम्न स्वस्तिवाचन करें।*

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्तिनः पूखा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्ताक्ष्र्यो अरिष्टनेमिः स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु। पृखदश्वा मरूतः पृश्निमातरः शुभं जावानो विदथेखु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह। भद्रं कर्णेभिः ऋणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष भिर्जजत्राः। स्थिरैरंगैस्तुष्टुवा गुँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं जदायुः। शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो जत्र पितरो भवन्ति मानो मध्या रीरिखता युर्गन्तोः। अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्ष मदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पंचजना अदितिर्जात मदितिर्जनित्वम्। द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोखधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुँ शान्तिः। शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।। जतो यतह समीहसे ततो नो अभयं कुरू। शं नः कुरू प्रजाभ्यो अभयं नः पशुभ्यः।। सुशान्तिर्भवतु।। ॐ गणानान्त्वा गणपति गुँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्त्वमजासि गर्भधम्।

ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।
श्री मन्महा गणाधिपतये नमः। लक्ष्मी नारायणाभ्यां नमः। उमा महेश्वराभ्यां नमः। वाणी हिरण्यगर्भाभ्यां नमः। शचीपुरन्दराभ्यां नमः।
माता पितृ चरण कमलेभ्यो नमः। इष्ट देवताभ्यो नमः। कुल देवताभ्यो नमः। ग्राम देवताभ्यो नमः। स्थान देवाताभ्यो नमः। वास्तु देवताभ्यो नमः।
सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। सर्वेभ्यो तीर्थेभ्यो नमः। ॐ सिद्धि बुद्धि सहिताय श्री मन्महा गणाधिपतये नमः।
सुमुखश्चैक दन्तश्च कपिलो गज कर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः।।
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणु यादपि।।
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते।।
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोप शान्तये।।
अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्व मंगल मंगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाम मंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगलायतनं हरिः।।
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि।।
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवर श्यामो हृदयस्थो जनार्दनः।।
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धर्नुधरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम।
अनन्याश्चिन्त यन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभि युक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्।।
स्मृतेः सकल कल्याणं भाजनं यत्र जायते। पुरूषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्।।
सर्वेश्वारम्भ कार्येषु त्रयस्त्रि भुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशान जनार्दनाः।।
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गंगां भवानीं मणिकर्णिकाम्।।
वक्रतुण्ड महाकाय कोटिसूर्य समप्रभ। निर्विघ्नं कुरू मे देव सर्व कार्येषु सर्वदा।।
गणेशाम्बिकाभ्यां नमः। हाथ के पुष्पाक्षत गणेशाम्बिका को अर्पित कर दें।

11. संकल्प –

पंचाग का ज्ञान होने पर निम्नानुसार संकल्प करें एवं अमुक के स्थान पर पंचाग देखकर सम्वत, तिथि, वार, इत्यादि बोलें।

ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः, ॐ विष्णवे नमः। ॐ अद्य ब्रह्मणोऽह्नि द्वितीय परार्धे श्री श्वेत बाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरेऽष्टाविंश तितमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे बौद्धावतारे भूर्लोके जम्बूद्वीपे भरतखण्डे भारतवर्षे अमुक.....क्षेत्रे/नगरे/ग्रामे अमुक.....संवत्सरे.....अमुक मासे (शुक्ल/कृष्ण) पक्षे.... .अमुक तिथौ.....अमुक वासरे.....अमुक गौत्र (शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहम) (प्रातः/मध्याह्ने/सायं) सपरिवारस्य एवं नाना गोत्राणि शिव भक्तानामस्य शिवप्रसन्नता एवं वेदोक्त फल प्राप्त्यर्थम् पूजन पूर्वक दुग्ध धारयायुक्त रूद्राभिषेक कर्म अहं करिष्ये (यदि ब्राह्मण द्वारा करवायें तो कारयिष्ये बोलें)

अथवा

देशकालौ संकीर्त्य गोत्र.....नामाहं.....अद्य सपरिवारस्य एवं नाना गोत्राणि शिव भक्तानामस्य शिवप्रसन्नता एवं वेदोक्त फल प्राप्त्यर्थम् पूजन पूर्वक दुग्ध धारयायुक्त रूद्राभिषेक कर्म अहं करिष्ये (यदि ब्राह्मण द्वारा करवायें तो कारयिष्ये बोलें)

12. कलश पूजनम् – (हाथ में पुष्प अक्षत लेकर करें।)

ॐ तत्त्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानः, तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरूणेह बोध्युरूश गुँ, समानऽआयुः प्रमोषीः।

ॐ मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य, बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ गुँ समिमं दधातु। विश्वेदेवासऽइह मादयन्तामो३म्प्रतिष्ठ। ॐ वरूणाय नमः। आवाहयामि, स्थापयामि, ध्यायामि। गन्धाक्षतं, पुष्पाणि, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि। ॐ कलशस्थ देवताभ्यो नमः।

कलश प्रार्थना (यजमान हाथ में पुष्पाक्षत लेकर करें)

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रूद्रः समाश्रितः। मूले त्वस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः।
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तदीपा वसुन्धरा। ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः।
अंगैश्चसहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः। अत्र गायत्री सावित्री शान्ति पुष्टिकरी सदा।
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः। शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः।
आदित्या वसवो रूद्रा विश्वेदेवाः सपैत्रकाः। त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यतः कामफलप्रदाः।
त्वत्प्रसादादिमं रूद्राभिषेकं कुर्तमीहे जलोद्भव। सानिध्यं कुरू मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा।।
हाथ के पुष्पाक्षत कलश को अर्पित कर दें

13. रक्षादीप – (हाथ में पुष्प अक्षत लेकर करें।)

ॐ अग्नि ज्ज्योंति–ज्ज्योंतिरग्निः स्वाहा, सूर्य्योज्ज्योति ज्ज्योंतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्च्चो ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा, सूर्य्योव्वर्च्चो, ज्ज्योतिर्व्वर्च्चः स्वाहा।
ज्योतिः सूर्य्योः सूर्य्योज्ज्योतिः स्वाहा।
भो दीपं देवस्वरूपस्त्वं कर्मसाक्षी ह्यविघ्न्यकृत्। यावत्पूजां समाप्तिः स्यात्तावदत्र स्थिरो भव।
शुभं करोति कल्याणं आरोग्यं धन सम्पदाय। शत्रु बुद्धि विनाशय दीपो ज्योतिर्नमोस्तुते।
हाथ के पुष्पाक्षत दीप पर अर्पित कर दें

श्रीगणेशाम्बिका पूजन

1. भगवान गणेश का आवाहन – यजमान हाथ में पुष्प अक्षत लेकर ध्यान करें

ॐ गणानान्त्वा गणपति गुँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुँ हवामहे वसोमम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।।
ॐ सिद्धिबुद्धि सहिताय गणपतये नमः, गणपतिम आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।
हाथ के पुष्प एवं अक्षत गणेशजी पर अर्पित कर दें

2. भगवती गौरी का आवाहन – यजमान हाथ में पुष्प एवं अक्षत लेकर ध्यान करें

ॐ अम्बे अम्बिके अम्बालिके नमा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वक सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्।
ॐ गौर्ये नमः, गौरीं आवाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।
हाथ के पुष्प एवं अक्षत गौरीजी पर अर्पित कर दें।

3. प्राण प्रतिष्ठा – (गौरी एवं गणेश जी पर अक्षत छोड़ते हुये)

अस्यै प्राणाः प्रतिष्ठन्तु अस्यै प्राणाः क्षरन्तु च। अस्यै देवत्वमर्चायै मामहेति च कश्चन।

गणेशाम्बिके सुप्रतिष्ठिते वरदे भवेताम्।

4. आसन – (गौरी एवं गणेश जी को आसन के लिये अक्षत समर्पित करें)

विचित्र रत्नखचितं दिव्यास्तरण संयुतम्। स्वर्ण सिंहासनं चारू गृह्णीष्व सुरपूजित।।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आसनं समर्पयामि।

5. पाद्य – (एक आचमनी जल समर्पित करें)

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

6. अर्घ्य – (जल से अर्घ्य दें)

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, हस्तयोः अर्घ्यम् समर्पयामि।

7. आचमन –

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि। एक आचमनी जल छोड़े

8. स्नान – (गौरी एवं गणेश जी को शुद्ध जल से स्नान करायें)

मन्दाकिन्यास्तु यदवारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

9. पंचामृत स्नान – (पंचामृत से स्नान करायें)

पंचामृतं मयानीतं पयो दधि घृतं मधु। शर्करया समायुक्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्।।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पंचामृत स्नानं समर्पयामि।

10. शुद्धोदक स्नान – (शुद्ध जल से स्नान करायें)

गंगा च यमुना चैव गोदावरी सरस्वती। नर्मदा सिन्धु कावेरी स्नानार्थम् प्रतिगृह्यताम।।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि

11. वस्त्र –

शीतवातोष्ण सन्त्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रमतः शान्तिः प्रयच्छ मे।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, वस्त्रं समर्पयामि।

वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। एक आचमनी जल छोड़ें

12. यज्ञोपवीत –

ॐ यजोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात। आयुष्य मग्रंय प्रतिमुंच शुभ्रं यजो पवीतं वलमस्तुतेजः।।

ॐ गणेशाय नमः, यज्ञोपवीतं समर्पयामि। यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

13. उपवस्त्र –

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, उपवस्त्रम समर्पयामि। उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

14. चन्दन –

श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्। विलेपनं सुरश्रेष्ठं चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।

15. अक्षत –

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ताः सुशोभिताः। मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, अक्षतान् समर्पयामि।

16. पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थ प्रतिगह्यताम्।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

17. दूर्वांकुर – (गणेश जी को दूर्वांकुर अर्पित करें।)

दूर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगल प्रदान्। आनीतांस्तव पूजार्थं गृहाण गणनायक। श्री गणेशाय नमः, दूर्वांकुरान् समर्पयामि।

18. सिन्दूर – (केवल गौरी पर चढ़ायें)

सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्। ॐ गौर्ये नमः, सिन्दूरं समर्पयामि।

19. अबीर –

नाना परिमलैर्द्रव्यै निर्मितं चूर्णमुत्तमम्। अबीर नामकं चूर्णं गन्धं चारू प्रतिगृह्यताम्। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

20. धूप –

वनस्पति रसोदभूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, धूपम् आघ्रापयामि।

21. दीप –

साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यति मिरापहम्।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, दीपम् दर्शयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

22. नैवेद्य –

शर्करा खण्डखाद्यांनि दधिक्षीर घृतानि च। आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, नैवेद्यं समर्पयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

23. ॠतुफल –

इंद फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जनमनि जन्मनि।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, ॠतुफलं समर्पयामि।

24. करोदवर्तन – (दोनों हाथों की अनामिका अंगुली और अंगूठे से गौरी गणेश पर चन्दन छिड़के।)

चन्दनंमलयोदभूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्। करोदवर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः करोद्वर्तनकं चन्दनं समर्पयामि।

25. ताम्बूल –

पूगीफलं महद्दिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्। एलादि चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, मुखवासार्थम एला लवंग पूगीफल सहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

26. दक्षिणा पुष्प –

हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः। अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

27. आरती – (कर्पूर से करें)

कदली गर्भसम्भूतं कर्पूरं तु प्रदीपितं। आरार्तिकमहं कुर्वे पश्य मे वरदो भव।।
ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, आरार्तिकं समर्पयामि। आरती के बाद जल छोड़ें

28. पुष्पाजंलि – (हाथ में पुष्प एवं अक्षत लेकर करें)

जग्न्येन जग्न्यम यजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्। ते हनाकम् महिमानह सचन्त जत्र पूर्वे साध्याहा सन्तिदेवाहा।। ॐ गणानान्त्वा गणपति गुँ हवामहे प्रियाणान्त्वा प्रियपति गुँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुँ हवामहे वसोमम। आहमजानि गर्भधमा त्त्वमजासि गर्भधम्।
ॐ अम्बे अम्बिकेऽम्बालिके नमा नयति कश्चन। ससस्त्यश्वकः सुभद्रिकां काम्पील वासिनीम्। नानासुगन्धिपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च।
पुष्पाजंलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, पुष्पाजंलिं समर्पयामि।

29. प्रदक्षिणा –

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च। तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, प्रदक्षिणां समर्पयामि।

30. विशेष अर्घ्य – ताम्र पात्र में जल चन्दन अक्षत पुष्प फल दुर्वा और दक्षिणा रखकर दोनों घुटनों को जमीन पर लगाकर अर्घ्यपात्र को सिर तक ले जाकर अर्घ्य समर्पित करें।

रक्ष रक्ष गणाध्यक्ष रक्ष त्रैलोक्य रक्षक।_भक्तानामभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात्। द्वैमातुर कृपासिन्धो षाण्मातुराग्रज प्रभो।
वरदस्त्वं वरं देहि वाञ्छितं वाञ्छितार्थद।। अनेन सफलार्घ्येण वरदोऽस्तु सदा मम्। ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः, विशेषार्घ्य समर्पयामि।

31. प्रार्थना –

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय। नागाननाय श्रुतियज्ञविभूषिताय गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते।।

भक्तार्ति नाशनपराय गणेश्वराय सर्वेश्वराय शुभदाय सुरेश्वराय। विद्याधराय विकटाय च वामनाय भक्त प्रसन्नवरदाय नमो नमस्ते।।

त्वं वैष्णवी शक्तिरनन्त वीर्या विश्वस्य बीजं परमासि माया। शम्मोहितं देवि समस्तमेतत् त्वं वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति हेतुः।।

ॐ जयदेवि नमस्तुभ्यं जय भक्त वर प्रदे। जय शंकर वामांगे मंगले सर्व मंगले।।

पुत्रान् देहि धनं देहि सौभाग्यं देहि सुव्रते। अन्याँश्च सर्वकामाँश्च देहि देवि नमोऽस्तु ते।।

ॐ गणेशाम्बिकाभ्यां नमः प्रार्थनापूर्वक नमस्कारान् समर्पयामि

32. समर्पण –

गणेशपूजने कर्म यन्न्यूनमधिकं कृतम्। तेन सर्वेण सर्वात्मा प्रसन्नोऽस्तु सदा मम। अनया पूजया गणेशाम्बिके प्रीयेताम्, न मम।

शिव पार्षदों का पूजन

1. नन्दीश्वर पूजन – जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत एवं विल्वपत्र से पूजन करें

ध्यान – ॐ आयं गौः पृश्निरक्रमीद सदन् मातरं पुरः। पितरं च प्रयन्त्स्वः।।

प्रार्थना – ॐ प्रैतु वाजी कनिक्रदन्ना नदद्रासभः पत्वा। भरन्नग्निं पुरीष्यं मा पाद्यायुषः पुरा।।

वृषाग्निं वृषणं भरन्नपां गर्भ गुँ समुद्रियम्। अग्न आ याहि वीतये।।

नन्दीश्वरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।।

2. वीरभद्र पूजन – जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत एवं विल्वपत्र से पूजन करें

ध्यान – ॐ भद्रं कर्णेभिः श्रृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्ष भिर्यजत्राः। स्थिरै रंगैस्तुष्टुवा गुँ सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः।

प्रार्थना – ॐ भद्रो नो अग्नि राहुतो भद्रा रातिः सुभग भद्रो अध्वरः। भद्रा उत प्रशस्तयः।।

वीरभद्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।।

3. कार्तिकेय पूजन – जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत एवं विल्वपत्र से पूजन करें

ध्यान – ॐ यदक्रन्दः प्रथमं जायमान उद्यन्त्समुद्रादुत वा पुरीषात्। श्येनस्य पक्षा हरिणस्य बाहू उपस्तुत्यं महि जातं ते अर्वन्।।

प्रार्थना – ॐ यत्र बाणाः सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव। तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिः शर्म यच्छतु विश्वाः शर्म यच्छतु।।

कार्तिकेयमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।।

4. कुबेर पूजन – जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत एवं विल्वपत्र से पूजन करें

ध्यान – ॐ कुविदंग यवमन्तो यवं चिद्यथा दान्त्यपूर्व वियूय। इहेहैखां कृणुहि भोजनानि ये बर्हिखो नम उक्तिं यजन्ति।।

प्रार्थना – ॐ वय गुँ सोम वृते तव मनस्तनूखु विभ्रतः। प्रजावन्तः सचेमहि।। कुबेरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।।

5. कीर्तिमुख पूजन – जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत एवं विल्वपत्र से पूजन करें

ध्यान – ॐ असवे स्वाहा वसवे स्वाहा विभुवे स्वाहा विवस्वते स्वाहा गणश्रिये स्वाहा। गणपतये स्वाहा ऽभिभुवे स्वाहा अधिपतये स्वाहा शूखाय स्वाहा।। स गुँ सर्पाय स्वाहा चन्द्राय स्वाहा ज्योतिषे स्वाहा मलिम्लुचाय स्वाहा दिवा पतये स्वाहा।

प्रार्थना – ॐ ओजश्च मे सहश्च मे आत्मा च मे तनुश्च मे शर्म च मे वर्म च मे अगांनि च मे अस्थीनि च मे परू गुँ खिच मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्। कीर्तिमुखमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।।

6. सर्प पूजन – जल, चन्दन, पुष्प, अक्षत एवं विल्वपत्र से पूजन करें

ॐ नमोऽस्तु सर्पेभ्यो ये के च पृथिवीमनु। ये अन्तरिक्षे ये दिवि तेभ्यः सर्पेभ्यो नमः।। सर्पमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।।

नव ग्रह पूजन

1. सूर्य – आवाहन एवं पूजन लाल पुष्प और अक्षत लेकर करें

जपाकुसुम संकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम्। तमोऽरिम् सर्वपापघ्नं सूर्य मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वःकलिंगदेशोद्भव काश्यपगोत्र रक्तवर्ण भो सूर्य। इहागच्छ इहतिष्ठ, ॐ सूर्याय नमः, श्रीसूर्यमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।।

2. चन्द्र – आवाहन एवं पूजन श्वेत पुष्प और अक्षत लेकर करें

दधिशंख तुषाराभं क्षीरोदार्णव सम्भवं। ज्योत्स्ना पतिं निशानाथं सोम मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवः स्वः यमुनातीरोद्भव आत्रेयगोत्र शुक्लवर्ण भो सोम।

इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ सोमाय नमः, सोममावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

3. मंगल – आवाहन एवं पूजन लाल पुष्प और अक्षत लेकर करें

धरणीगर्भ सम्भूतं विद्युत्तेजस्समप्रभं। कुमारं शक्तिहस्तं च भौम मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः अवन्तिदेशोद्भव भारद्वाजगोत्र रक्तवर्ण भो भौम। इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ भौमाय नमः, भौममावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

4. बुध – आवाहन एवं पूजन पीले या हरे पुष्प और अक्षत लेकर करें

प्रियंगु कलिकाभासं रूपेणाप्रतिं बुधम्। सौम्यं सौम्यगुणोपेतं बुधमावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः मगधदेशोद्भव आत्रेयगोत्र पीतवर्ण भो बुध। इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ बुधाय नमः, बुधमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

5. बृहस्पति – आवाहन एवं पूजन पीले या हरे पुष्प और अक्षत लेकर करें

देवानां च मुनीनां च गुरूं कांचनसंनिभम्। वन्द्यभूतं त्रिलोकानां गुरू मावाहयाम्यहम्।।

ॐ भूर्भुवःस्वः सिन्धुदेशोद्भव आंगिरसगोत्र पीतवर्ण भो गुरो।इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ बृहस्पतये नमः, बृहस्पतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

6. शुक्र – आवाहन एवं पूजन श्वेत पुष्प और अक्षत लेकर करें

हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरूम्। सर्वशास्त्र प्रवक्तारं शुक्रमावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवःस्वः भोजकट देशोद्भव भार्गवगोत्र शुक्लवर्ण भो शुक्र। इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ शुक्राय नमः, शुक्रमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

7. शनि – आवाहन एवं पूजन काले पुष्प और अक्षत लेकर करें

नीलाम्बुज समाभासम् रविपुत्रम् यमाग्रजम्। छाया मार्तण्ड सम्भूतं शनिमावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवःस्वः सौराष्ट्र देशोद्भव कास्यपगोत्र कृष्णवर्ण भो शनैश्चर।

इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ शनैश्चराय नमः, शनैश्चरमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

8. राहु – आवाहन एवं पूजन काले पुष्प और अक्षत लेकर

अर्धकायं महावीर्यम् चन्द्रादित्य विमर्दनं। सिंहिका गर्भसम्भूतं राहुमावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवःस्वः राठिनपुरोद्भव पैठीनसगोत्र कृष्णवर्ण भो राहो। इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ राहवे नमः, राहुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

9. केतु – आवाहन एवं पूजन धूमिल पुष्प और अक्षत लेकर करें

पलाश धूम्रसंकाशम् तारकाग्रह मस्तकम्। रौद्रम रौद्रात्मकम् घोरं केतुमावाहयाम्यहम्।

ॐ भूर्भुवःस्वःअन्तर्वेदि समुद्भव जैमिनगोत्र धूम्रवर्ण भो केतो। इहागच्छ, इहतिष्ठ, ॐ केतवे नमः, केतुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि च।

अस्मिन् नवग्रह मण्डले आवाहिताः सूर्यादि नवग्रहा देवाः सुप्रतिष्ठिता वरदा भवन्तु। ॐ आवाहित सूर्यादि नवग्रहेभ्यो देवेभ्यो नमः।।

10. नवग्रह प्रार्थना – (पुष्प, अक्षत, हाथ में लेकर प्रार्थना करें)

ॐ ब्रह्मा मुरारिस्त्रिपुरान्तकारी भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वे ग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।

सूर्यः शौर्यमथेन्दुरूच्चपदवीं सन्मंगलं मंगलः सद्बुद्धिं च बुधो गुरूश्च गुरूतां शुक्रः सुखं शं शनिः। राहुर्बाहुबल करोतु सततं केतुः कुलस्योन्नतिं
नित्यं प्रीतिकरा भवन्तु मम ते सर्वे अनुऽकूला ग्रहाः।।

11. निवेदन और नमस्कार हाथ जोड़कर करें

अनया पूजया सूर्यादिनवग्रहाः प्रीयन्तां न मम।

सर्व देव पूजन

(चन्दन पुष्प एवं अक्षत से पूजन करें)

अभीप्सितार्थ सिद्धयर्थं पूजितो यह सुरासुरै। सर्वविघ्न हरस्तस्मै गणाधिपतये नमः।।
सर्व मंगल मांगल्ये शिवे सर्वार्थ साधिके। शरण्ये त्रयम्बके गौरि नारायणि नमोस्तुते।।
शुक्लाम्बर धरं देवं शशिवर्ण चतुर्भुजम्। प्रसन्न वदनं ध्यायेत् सर्व विघ्नोप शान्तये।।
सर्वदा सर्व कार्येषु नास्ति तेषां मंगलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मंगला यतनं हरिः।।
विनायकं गुरूं भानुं ब्रह्मा विष्णु महेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ शान्ति कार्यार्थ सिद्धये।।
मंगलं भगवान विष्णु मंगलं गरूडध्वज। मंगलं पुण्डरीकाक्षो मंगलायतनो हरिः।।
त्वम वै चर्तुमुखी ब्रह्मा सत्यलोक पितामह। आगच्छ मण्डले चास्मिन् मम सर्वार्थ सिद्धये।।

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्ण शुभांगम्।।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगभिर्ध्यानगम्यम्। वन्दे विष्णु भवभयहरं सर्वलोकैक नाथम्।।
वन्दे देवं उमापतिं सुरगुरूं वन्दे जगत्कारणम्। वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशूनाम्पतिम्।।
वन्दे सूर्यशशांक वह्नि नयनं वन्दे मुकुन्द प्रियम्। वन्दे भक्त जनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।।
त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः। स्वस्थेः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।।
दारिद्रय दुख भय हारिण का त्वदन्या। सर्वोपकार कर्णाय सदार्द्र चित्ता।।
शुक्लां ब्रह्मविचार सारपरं माद्यां जगद्व्यापिनीम्। वीणा पुस्तक धारणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।।
हस्ते स्फटिक मालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्। वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।
आर्द्रा पुष्करणीं पुष्टिं सुवर्णा हेममालिनीम्। सूर्या हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवहे।।
कालिकां तु कलातीतां कल्याण हृदयां शिवाम्। कल्याण जननी नित्यं कल्याणी पूजयाम्यहम्।।
विष्णुपदाब्ज सम्भूते गंगे त्रिपथगामिनी। धर्म द्रवेति विख्याते पापं मे हर जाह्नवी।।
पुष्करादीनि तीर्थानि गंगादिहि सरितस्तथा। आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदामम्।।
ब्रह्मामुरारी स्त्रिपुरान्तकारि भानुः शशी भूमिसुतो बुधश्च। गुरूश्च शुक्रः शनिराहुकेतवः सर्वेग्रहाः शान्तिकरा भवन्तु।।
गौरी पद्मा शची मेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोक मातरः।।
धृतिहि पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुलदेवता। गणेशेनाधिका ह्येता वृद्धौ पूज्याश्च षोडश।।
कीर्ति लक्ष्मी धृतिर्मेधा सिद्धिः प्रज्ञा सरस्वती। मांगल्येषु प्रपूज्याश्च सप्तैताः दिव्यमातरह।।
नागपृष्ठं समारुढं शूलहस्तं महाबलम्। पाताल नायकं देवं वास्तुदेवं नमाम्यहम्।।
क्षेत्रपालान्नमस्यामि सर्वारिष्ट निवारकान्। अस्य आगस्य सिद्धयर्थं पूजयाराधितानमया।।

शिव पूजन

1. भगवान शिव का ध्यान – हाथ में विल्वपत्र लेकर करें

ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इखवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः। ध्यायेन्नित्यं महेशं रजतगिरि निभं चारू चन्द्रावतंसं। रत्ना कल्पोज्ज्वलांग परशु मृगवरा भीति हस्तं प्रसन्नम्। पद्मासीनं समन्तात् स्तुत ममर गणैर्व्याघ्र कृतिं वसानं विश्वाद्यं विश्वबीजं निखिलभयहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। ध्यानार्थे विल्वपत्रं समर्पयामि। विल्वपत्र समर्पित करें

2. आवाहन – (हाथ में पुष्प लेकर आवाहन करें)

ॐ त्रयम्बकं जजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।। आगच्छ भगवन् देव स्थाने चात्र स्थिरो भव। यावत् पूजां करिष्ये अहं तावत् त्वं संनिधौ भव। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। आवाहनार्थे पुष्पं समर्पयामि। पुष्प समर्पित करें।

3. आसन – हाथ में विल्वपत्र लेकर करें

ॐ जा ते रूद्र शिवा तनूरघोराऽपाप काशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि। अनेक रत्नसंयुक्तं नानामणि गणान्वितम्। इदं हेममयं दिव्यमासनं प्रतिग्रह्यताम्।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। आसनार्थे विल्वपत्रं समर्पयामि। विल्वपत्र समर्पित करें

4. पाद्य –

ॐ जामिखुं गिरि शन्त हस्ते विभर्ख्यर्स्तवे। शिवांगिरित्र तांकुरू मा हि गुँ सीः पुरूखन्जगत्। गंगोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्य संयुतम्। पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं मे प्रतिगृह्यताम्।। पादयोः पाद्यं समर्पयामि। एक आचमनी जल समर्पित करें।

5. अर्घ्य – (चन्दन पुष्प अक्षत युक्त अर्घ्य समर्पित करें।)

ॐ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि। जथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्म गुँ सुमना असत्।

गन्धपुष्प एवं अक्षतैर्युक्त मर्घ्य सम्पादितं मया। गृहाण भगवन शम्भो प्रसन्नो वरदो भव।।ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः।

हस्तयोर्घ्यं समर्पयामि।

6. आचमन – (कर्पूर से सुवासित शीतल जल चढ़ायें।)

ॐ अध्यवोच दधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिखक। अहींश्च सर्वान्जम्भयन्त सर्वाश्च जातु धान्यो धराचीः परासुव।

कर्पूरेण सुगन्धेन वासितं स्वादु शीतलम्। तोयमाचमनीयार्थ गृहाण परमेश्वर। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः । आचमनीयं जलं समर्पयामि। एक आचमनी जल समर्पित करें।

7. शुद्धजल स्नान –

ॐ असौ जस्ताम्रो अरूण उत बभ्रुः सुमंगलः। जे चैन गुँ रूद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशोऽवैखा गुँ हेड ईमहे।
मन्दाकिन्यास्तु यद् वारि सर्वपापहरं शुभम्। तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थ प्रतिग्रह्यताम्। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः।
स्नानीयं जलं समर्पयामि स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

8. दुग्ध स्नान –

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम्।।
कामधेनु समुद् भूतं सर्वेखां जीवनं परम्। पावनं जग्न्य हेतुश्च पयः स्नानाय गृह्यताम्।।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। पयः स्नानं समर्पयामि पयः स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि,
शुद्धोदक स्नानान्ते, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

9. दधि स्नान –

ॐ दधिक्राव्णो अकारिखं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः। सुरभि नो मुखा करत्प्र ण आयू गुँ खि तारिखत्।
पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लम शशिप्रभम्। दध्यानीतं मया देव स्नानार्थ प्रतिग्रह्यताम् ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः।
दधि स्नानं समर्पयामि, दधि स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

10. घृतस्नान –

ॐ घृतं घृतपावानः, पिबत वसां वसापावानः, पिबतान्तरिक्षस्य हविरसि स्वाहा। दिशः प्रदिशऽआदिशो विदिशऽ, उद्दिशो दिग्भ्यः स्वाहा।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। घृत स्नानं समर्पयामि, घृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

11. मधुस्नान –

ॐ मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः। मधु नक्त मुतोखसो मधुमत्पार्थिव गुँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँउ अस्तु सूर्जः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। मधु स्नानं समर्पयामि, मधु स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

12. शर्करास्नान -

ॐ अपा गुँ रसमुद्वयस गुँ सूर्जे सन्त गुँ समाहितम्। अपा गुँ रसस्य यो रसस्तं वो गृहणाम्युत्तम मुपयामगृहीतोऽसीन्द्रायत्वा जुष्टं गृहणाम्येष ते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम्। इक्षुसार समुद्भूतां शर्करां पुष्टिदां शुभाम्। मलापहारिकां दिव्यां स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। शर्करा स्नानं समर्पयामि, शर्करा स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। शर्करा से स्नान के बाद एक आचमनी जल छोड़ें

13. पंचामृतस्नान -

ॐ पंच नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः। सरस्वती तु पंचधा सो देशेऽभवत्सरित्।। पयो दधि घृतम चैव मधु च शर्करान्वितम्। पंचामृतं मयानीतं स्नानार्थ प्रतिगृह्यताम्।। भगवते श्रीमृत्युंजय देव नमः। पंचामृत स्नानं समर्पयामि, पंचामृत स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। पंचामृत से स्नान के बाद एक आचमनी जल छोड़ें

14. गन्धोदक स्नान - गन्ध युक्त जल से स्नान करायें

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां, नित्यपुष्टां करीषिणीम्। ईश्वरीं सर्वभूतानां, तामिहोपहरये श्रियम्।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। गन्धोदक स्नानं समर्पयामि, गन्धोदक स्नानान्ते शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

15. उदवर्तन स्नानम् - (हल्दी, चन्दन आदि से स्नान करायें)

ॐ अ गुँ शुना ते अ गुँ शुः पृच्यतां परूखा परूः। गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसो अच्युतः।।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। उदवर्तन स्नानम् समर्पयामि।।

16. शुद्धोदकस्नान - (शुद्ध जल से स्नान करायें)

ॐ शुद्धवालः सर्वशुद्धवालो मणिवालस्त आश्विनाः श्येतः श्येताक्षो अरूणस्ते रूद्राय पशुपतये कर्णा यामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः।

शुद्धं यत् सलिलं दिव्यं गंगाजलसमं स्मृतम्। समर्पितं मया भक्त्या शुद्धस्नानाय गृह्यताम्।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः।

शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि, शुद्धोदक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

17. महाभिषेक स्नान – (श्रंगी द्वारा दुग्ध से)

ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इखवे नमः। वाहुभ्या मुत ते नमः।1।

जा ते रूद्र शिवा तनूर घोराऽपाप काशिनी। तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभि चाकशीहि।2।

जामिखुन्गिरिशन्त हस्ते विभर्ख्यस्तवे। शिवां गिरित्र तां कुरू मा हि गुँ सीः पुरूखंजगत्।3।

शिवेन वचसा त्वा गिरि शाच्छा वदा मसि। जथा नह सर्वमिज्जगद यक्ष्म गुँ सुमना असत्।4।

अध्यवोच दधि वक्ता प्रथमो दैव्यो भिखक्। अहींश्च सर्वान्जम्भयन्त सर्वाश्च जातु धान्यो धराचीही परासुव।5।

असौ यस्ताम्रो अरूण उत वभ्रुहु सुमंगलः। जे चैन गुँ रूद्रा अभितो दिक्षु श्रिताः सहस्रशो वैखां गुँ हेडईमहे।6।

असौ जोऽवसर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनन्गोपा अदृश्रन्नदृश्रन्नु दहार्जः स दृष्टो मृडयाति नः।7।

नमोस्तु नीलग्रीवाय सहश्राक्षाय मीढुखे। अथो जे अस्य सत्वानोऽहंतेभ्योऽकरन्नमः।8।

प्रमुन्च धन्वनस्त्व मुभयो रात्न्योंर्ज्याम्। जाश्च ते हस्त इखवः पराता भगवो वप।9।

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां उत। अनेशन्नस्य जा इखव आभुरस्य निखंगधिः।10।

जा ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः। तयाऽस्मान्विश्व तस्त्वमयक्ष्मया परि भुज।11।

परि ते धन्वनो हेति रस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो ज इखुधिसत वारे अस्मन्नि धेहितम्।12।

अवतत्य धनुष्टुव गुँ सहश्राक्ष शतेखुधे। निशीर्ज शल्यानां मुखा शिवो नः सुमनाभव।13।

नमस्त आयु धाया नाततया धृष्णवे। उभाभ्या मुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने।14।

मानो महान्तमुत मानो अर्भकम मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम्। मानो वधीः पितरं मोत मातरंमा नः प्रियास्तन्वो रूद्र रीरिखः।15।

मा नस्तोके तनये मा न आयुखि मानो गोखु मानो अश्वेखु रीरिखः। मानो वीरान्न् रूद्र भामिनो वधरिहविख्मन्तः सदमित् त्वा हवामहे।16।

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। महाभिषेक स्नानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। एक आचमनी जल छोड़ें

18. शुद्धोदक स्नानम् – (शुद्ध जल से स्नान करायें)

19. वस्त्र –

ॐ असौ जोव सर्पति नीलग्रीवो विलोहितः। उतैनं गोपा अदृश्रन्न दृश्रन्नु दहार्जः स दृष्टो मृडयाति नः।।
शीतवातोष्ण संत्राणं लज्जाया रक्षणं परम्। देहालंकरणं वस्त्रं धृत्वा शान्तिं प्रयच्छ मे।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। एक आचमनी जल छोड़ें

20. यज्ञोपवीत –

ॐ नमोस्तु नीलग्रीवाय सहश्राक्षाय मीढुखे। अथो जे अस्य सत्वानोहं तेभ्यो करं नमः। नवभिस्तन्तुभिर्युक्तं त्रिगुणं देवतामयम्।
उपवीतं मया दत्तम गृहाण परमेश्वर। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। यज्ञोपवीतं समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

21. उपवस्त्रम् –

ॐ सुजातो ज्योतिखा सः शर्म वरूथ मा अस दत्स्वः। वासो अग्ने विश्वरूप गुँ सं व्ययस्व विभावसो।।
उपवस्त्रः प्रयच्छामि देवाय परमात्मने भक्त्या समर्पितं देव प्रसीद परमेश्वर।।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि। एक आचमनी जल छोड़ें

22. चन्दन –

ॐ प्रमुंच धन्वनस्त्वमुभयो रार्ल्योर्ज्याम्। जाश्च ते हस्त इखवः परा ता भगवो वप। श्रीखण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढयं सुमनोहरम्।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। गन्धनानुलेपनं समर्पयामि।

23. भस्म :–

ॐ प्रसद्य भस्मना योनिमपश्च पृथिवीमग्ने। स गुँ सृज्य मातृ भिष्टवं ज्योतिष्मान् पुनरा असदः। सर्वपापहरं भस्म दिव्यज्योति समप्रभम्।
सर्वक्षेमकरं पुण्यं गृहाण परमेश्वर। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। भस्म समर्पयामि।

24. अक्षत –

ॐ ब्रीहयश्च मे जवाश्च में माखाश्च मे तिलाश्च मे मुदगाश्च मे खल्वाश्च में प्रियगंवश्च मेऽण वश्च मे श्यामाकाश्च मे
नीवाराश्च मे गोधूमाश्च से मसूराश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्। अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता : सुशोभिताः।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। अक्षतान् समर्पयामि।

25. पुष्पमाला –

ॐ विज्यं धनुहु कपर्दिनो विशल्यो बाणवां उत। अनेशन्नस्य जा इखव आभुरस्य निखंगधिः। माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि भक्ति तः।
मयाहृतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। पुष्पमालां समर्पयामि।

26. विल्वपत्र –

ॐ नमो विल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमः। श्रुताय च श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च।

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधं। त्रिजन्म पापसंहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम्। त्रिशाखै र्विल्वपत्रैस्च ह्यच्छिद्रैः कोमलैः शुभैः। शिवपूजां करिष्यामि विल्वपत्रं शिवार्पणम्। अखण्डविल्वपत्रेण पूजिते नन्दिकेश्वरे। शुद्धयन्ति सर्वपापेभ्यो विल्वपत्रं शिवार्पणम्। शालग्राम शिलामेकां विप्रणां जातु अर्पयेत्। सोमयज्ञमहापुण्यं विल्वपत्रं शिवार्पणम्। दन्तकोटि सहस्त्राणि वाजपेय शतानि च। कोटि कन्या महादानं विल्वपंत्र शिवार्पणम्।

लक्ष्म्याः स्तनत उत्पन्नं महादेवस्य च प्रियम्। विल्ववृक्षं प्रयच्छामि विल्वपत्रं शिवार्पणम्। दर्शनं विल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनं। अघोरपापसंहारं विल्वपत्रं शिवार्पणम्। मूलतो ब्रह्मरूपाय मध्यतो विष्णुरूपिणे। अग्रतः शिवरूपाय विल्वपत्रं शिवार्पणम्। बिल्वाष्टकमिदं पुण्यं यह पठेच्छिवसन्निधौ। सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोकं वाप्नुयात्। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। विल्वपत्राणि समर्पयामि।

27. दुर्वांकार –

ॐ काण्डात्काण्डात्प्ररोहन्ती परुष परूषस्परि। एवा नो दूर्वे प्र तनु सहस्त्रेण शतेन च। दुर्वांकुरान् सुहरितानमृतान् मंगल प्रदान्।

आनीतां स्तव पूजार्थं गृहाण परमेश्वर। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। दुर्वांकुरान् समर्पयामि।

28. शमी पत्र चढ़ाएँ –

ॐ अमंगलानां च शमनीम् सर्वसिद्धि करीम् शुभाम्। दुःस्वप्न नाशिनीम् धन्या मर्पयेऽहं शमीम् शुभाम्।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः शमी पत्राणि समर्पयामि।।

29. विजया (भांग) चढ़ाएँ –

विज्यं धनुः कपर्दिनो विशल्यो बाणवां उत। अनेशन्नस्य जा इखव आभुरस्य निखंगधिः।।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। विजया पत्राणि समर्पयामि।।

30. धतूरा चढ़ाएँ –

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। धतूरा फलम् समर्पयामि।

31. सुगन्धित द्रव्य इत्र या चन्दन

ॐ त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्। उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः। सुगन्धिद्रव्यम् समर्पयामि।

32. एकादश रूद्रपूजा गंधाक्षत एवं पुष्प से शिवलिंग मे पूजन करें

ॐ अघोराय नमः।1। ॐ पशुपतये नमः।2। ॐ शर्वाय नमः।3। ॐ विरूपाक्षाय नमः।4। ॐ विश्वरूपिणे नमः।5। ॐ त्रयम्बकाय नमः।6।
ॐ कपर्दिने नमः।7। ॐ भैरवाय नमः।8। ॐ शुलपाणये नमः।9। ॐ ईशानाय नमः।10। ॐ महेश्वराय नमः।11।

33. एकादश शक्ति पूजा गंधाक्षत एवं पुष्प से प्रतिष्ठित मूर्ति के अभाव में शिवलिंग मे ही पूजन करें ॐ उमायै नमः।1। ॐ शंकरप्रियायै नमः।2।
ॐ पार्वत्यै नमः।3। ॐ गौर्यै नमः।4। ॐ काल्यै नमः।5। ॐ कालिन्द्यै नमः।6। ॐ कोटर्यै नमः।7। ॐ विश्वधारिण्यै नमः।8।
ॐ ह्रां नमः।9। ॐ ह्रीं नमः।10। ॐ गंगादेव्यै नमः।11।

34. आभूषण   सामर्थ्यानुसार या मानसिक

ॐ युवं तमिन्द्रा पर्वता पुरोयुधा यो नः पृतन्यादप तंतमिद्धतं वज्रेण तंतमिद्धतम्। दूरे चत्ताय छन्त्सद् गहनं यदिनक्षत्। वज्रमाणिक्य वैदूर्यमुक्ता विद्रुममण्डितम्। पुष्पराग समायुक्तं भूषणं प्रतिगृह्यताम्।। भगवते श्रीमृत्युंजय देव नमः। रत्नाभूषणम् समर्पयामि।

35. नानापरिमल द्रव्य अक्षत

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुं ज्याया हेतिं परिबाधमानः। हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमा गुँ सं परि पातु विश्वतः। दिव्यगन्ध समायुक्तं नानापरिमलान्वितम्। गन्धद्रव्यमिदं भक्त्या दत्तं स्वीकुरू शोभनम्। भगवते श्रीमृत्युंजय देव नमः। नानापरिमल द्रव्याणि समर्पयामि।

36. सिन्दूर

ॐ सिन्धोरिव प्राध्वने शूघनासो वातप्रमियः पतयन्ति यह्वाः। घृतस्य धारा अरूषो न वाजी काष्ठा भिन्दन्नूर्मिभिः पिन्वमानः। सिन्दूरं शोभनं रक्तं सौभाग्यं सुखवर्द्धनम्। शुभदं कामदं चैव सिन्दूरं प्रतिगृह्यताम्।। भगवते श्रीमृत्युंजय देव नमः। सिन्दूरं समर्पयामि।।

37. धूप

ॐ जा ते हेतिर्मीढुष्टं हस्ते बभूव ते धनुहु। तया स्मान्विश्व तस्त्वम यक्ष्मया परिभुज।। वनस्पतिरसोदभूतो गन्धाढयो गन्ध उत्तमः। आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोऽयं प्रतिगृह्यताम्।। भगवते श्रीमृत्युंजय देव नमः। धूपमाघ्रापयामि।।

38. दीप

ॐ परि ते धन्वनो हेति रस्मान्वृणक्तु विश्वतः। अथो ज इखुधिस्त वारे अस्मिन्नि धेहितम्। साज्यं च वर्तिसंयुक्तं वह्निना योजितं मया। दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्यति मिरापहम्।। भगवते श्रीमृत्युंजय देव नमः दीपम् दर्शयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

39. नैवेद्य - नैवेद्य में विल्वपत्र रखकर भगवान को भोग लगायें

ॐ अवतत्य धनुष्टुव गुँ सहश्राक्ष शतेखुधे। निशीर्ज शल्यानां मुखा शिवो नह सुमनाभव।। शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च।

आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम्।। भगवते श्रीमृत्युंजय देव नमः नैवेद्यं निवेदयामि। ॐ प्राणाय स्वाहा, ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय

स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा, नैवेद्यान्ते ध्यानं, ध्यानान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि, मध्ये पानीयं जलं समर्पयामि, उत्तरापोशनं

मुख प्रक्षालनार्थ हस्त प्रक्षालनार्थ च जलं समर्पयामि।

40. ऋतुफल -

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः। बृहस्पति प्रसूतास्ता नो मुंचन्त्व गुँ हसः।।

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव। तेन मे सफला वाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, ऋतुफलानि निवेदयामि।

41. ताम्बूल

ॐ नमस्त आयुधायानातताय धृष्णवे। उभाभ्यामुत ते नमो बाहुभ्यां तव धन्वने। पूगीफलं महदिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम्। एलादि चूर्णसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम्।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थम एलालवंग पूगीफल सहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

42. करोद्वर्तन चन्दन छिडकें

ॐ सिंचति परि सिंचन्त्युत्सिंचन्ति पुनन्ति च। सुरायै बभ्र्वै मदे किन्त्वो वदति किन्त्वः। चन्दनं मलयोदभूतं कस्तूर्यादि समन्वितम्। करोद्वर्तनकं देव गृहाण परमेश्वर।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, करोद्वर्तनार्थे चन्दनानुलेपनं समर्पयामि।।

43. द्रव्य दक्षिणा – केवल पुष्प अर्पित करें

ॐ यदत्तं यत्परादानं यत्पूर्तं याश्च दक्षिणाः। तदग्निर्वैश्व कर्मणः स्वर्देवेषु नो दधत्।। हिरण्यगर्भगर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्तपुण्यफलदमतः शान्तिं प्रयच्छ मे।। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

41. स्तुति – हाथ जोड़कर करें

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहम्। पूजा ते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः।।
संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो। यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।।
करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्। विहितमविहितम् वा सर्वमेतत् क्षमस्व जय जय करूणाब्धे श्री महादेव शम्भो।

विनियोग तथा षडंगन्यास

1. (एक आचमनी विनियोगका जल छोड़े।)

ॐ मनोजूतिर्जुखता माज्यस्य बृहस्पतिर्जग्न्य मिमन्तनोत्वरिष्टम् जग्न्य गुँ समिमन्दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामोंउ प्रतिष्ठ।।
ॐ हृदयाय नमः।। (दाहिने हाथ की पाँचो अँगुलियो से हृदय का स्पर्श करें।)

2. (विनियोग का जल छोड़े)

ॐ अबोध्यग्निहि समिधा जनानाम्प्रति धेनुमिवायती मुखासम्। जह्वा इव प्रवया मुज्जिहानाहा प्रभानवह सिस्त्रते नाकमच्छ।।
ॐ शिरसे स्वाहा।। (दाहिने हाथ की अँगुलियों से मस्तकका स्पर्श करें।)

3. (विनियोग का जल छोड़े।

ॐ मूर्द्धानन्दिवो अरतिम् पृथिव्या वैश्वानरमृत आजातमग्निम्। कवि गुँ सम्म्राज म्तिथिन जनानाम् मासन्ना पात्रन्जनयन्त देवाहा।।
ॐ शिखायै वषट्।। (दाहिने हाथ के अँगूठे से शिखा का स्पर्श करें।)

4. (विनियोग का जल छोड़े।)

ॐ मर्माणि ते वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्। उरोर्वरीयो वरूणस्ते कृणोतु जयन्तंत्वानु देवामदन्तु।
ॐ कवचाय हुम्।। (दाहिने हाथ अँगुलियों से बायें कंधे का बायें हाथ की अँगुलियों से दायें कंधे का एक साथ ही स्पर्श करें।

5. (विनियोग का जल छोड़े।)

ॐ विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरूत विश्वतस्पात्। सम् बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्त्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकह।

ॐ नेत्रययाय वौषट्।। (दाहिने हाथकी अनामिका और तर्जनीसे क्रमशः वाम तथा दक्षिण नेत्र एवं मध्यमासे ललाटके मध्य भाग का एक साथ ही स्पर्श करे।)

6. (विनियोग का जल छोड़े)

मा नस्तोके तनये मा न आयुखि मानो गोखु मानो अश्वेखु रीरिखह। मानो वीरान्न रूद्र भामिनो वधीरिहविख्मन्तह सदमित्वा हवामहे।।

ॐ अस्त्राय फट्।। (दायें हाथको प्रदक्षिण-क्रम से सिरके पीछे से घुमाकर बायें हाथ की हथेलीपर मध्यमा और तर्जनीसे ताली बजायें।)

इस प्रकार षडंग्न्यास करने के अनन्तर हाथ में पुष्प लेकर आगे लिखे मन्त्र से भगवान् सदाशिव का ध्यान करें।

ध्यान

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं।।
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं्। चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं।।
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं। गिरा ग्यान गोतीतमीशं गिरीशं।।
करालं महाकाल कालं कृपालं। गुणागार संसारपारं नतोऽहं।।
तुषाराद्रि संकाश गौरं गंभीरं। मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं।।
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारू गंगा। लसद्भालबालेन्दु कंठे भुजंगा।।
चलत्कुण्डलं भ्रू सुनेत्रं विशालं। प्रसन्नाननं नीलकंठं दयालं।।
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं। प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि।।

प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं। अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं।।
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं। भजेऽहं भवानीपतिं भावगम्यं।।
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी। सदा सज्जनानन्द दाता पुरारी।।
चिदानन्दसंदोह मोहापहारी। प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी।।
न यावद् उमानाथ पादारविन्दं। भजंतीह लोके परे वा नराणां।।
न तावत्सुखं शान्ति सन्तापनाशं। प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवांसं।।
न जानामि योगं जपं नैव पूजां। नतोऽहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं।।
जरा जन्म दुःखौघ् तातप्यमानं। प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो।।

रूद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये।
ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति।

‘रूद्राष्टाध्यायी’

प्रथमोऽध्यायः

श्रीगणेशाय नमः ॥ हरिः ॐ गणानान्त्वागणपतिꣳ
हवामहेप्प्रियाणान्त्वाप्प्रियपतिꣳ हवामहेनिधीनान्त्वानिधिपतिꣳ हवामहेव्वसो
मम। आहमजानिगर्ब्भधमात्त्वमजासिगर्ब्भधम् ॥१॥
गायत्रीत्त्रिष्टुब्जगत्यनुष्टुप्पङ्क्त्यासह।
बृहत्युष्णिहाककुप्सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥२॥
द्विपदायाश्च्चतुष्प्पदास्त्रिपदायाश्च्चषट्पदाः ॥
विच्छन्दायाश्च्चसच्छन्दाः सूचीभिः शम्म्यन्तुत्त्वा ॥३॥

'रूद्राष्टाध्यायी'

प्रथमो अध्यायः

श्रीमन्महाँ गणाधिपतये नमः। श्री मृत्युंजय देव नमः।
हरिहि ॐ गणानान्त्वा गणपति गुँ हवामहे प्रियाणान्त्वा
प्रियपति गुँ हवामहे निधीनान्त्वा निधिपति गुँ हवामहे वसोमम।
आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्।1।
गायत्री त्रिष्टुब्जगत्य नुष्टुप पंक्त्त्यासह।
बृहत्युष्णिहा ककुप्सूचीभिहि शम्यन्तुत्त्वा।2।
द्विपदा जाश्चतुष्पदा स्त्रिपदा जाश्च खटपदाहा।
विच्छन्दा जाश्च सच्छन्दाहा सूचीभिहि शम्यन्तुत्त्वा।3।

सुहस्तोमाः सुहछंन्दसऽआवृत ÷ सुहप्प्रमाऽऋषयः सुप्तदैव्व्याः ॥
पूर्व्वेंषाम्पन्थामनुदृश्यधीराऽअन्वालेभिरेरत्त्थ्यो नरश्मीन् ॥४॥
यज्जाग्ग्रतो दूरमुदैतिदैवन्तदुसुप्तस्यतथैवैति ॥
दूरङ्गमञ्ज्योतिषाञ्ज्योतिरेकन्तन्मेमन ÷ शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥५॥
येनकर्म्माण्यपसोमनीषिणोयज्ञेकृण्वन्तिव्विदथेषुधीराः ॥
यदपूर्व्वंय्यक्षमन्तः प्प्रजानान्तन्मेमन ÷ शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥६॥
यत्प्रज्ञानमुतचेतोधृतिश्च्चयज्ज्योतिरन्तरमृतम्प्रजासु ॥
यस्मान्नऽऋतेकिञ्चनकर्म्मक्क्रियतेतन्मेमन ÷ शिवसङ्कल्प्पमस्तु ॥७॥

सहस्तोमाहा सहछन्दस आवृतह सहप्रमा ऋखयह सप्त दैव्याहा पूर्वेखाम

पन्था मनुदृश्य धीरा अन्वालेभिरे रत्थ्यो न रश्मीन् ।4।

जज्जाग्रतो दूर मुदैति दैवन्तदु सुप्तस्य तथै वैति।

दूरन्गामन्ज्योतिखान ज्योतिरेकन्तन्मेमनह शिव संकल्प मस्तु ।5।

जेन कर्माण्य पसो मनीखिणो जग्न्ये कृण्वन्ति विदथेखु धीराहा।

जदपूर्वन् जक्षमन्तह प्रजानान्तन्मे मनह शिव संकल्प मस्तु ।6।

जत्प्रग्न्यान मुत चेतो धृतिश्च जज्योतिरन्तर मृतम् प्रजासु।

जस्मान्न ऋते किंचन कर्मिं क्रियते तन्मे मनह शिव संकल्प मस्तु ।7।

येनेदम्भूतम्भुवनम्भविष्यत्परिगृहीतममृतेनसर्व्वम् ॥
येनयज्ञस्तायतेसप्तहोतातन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥८॥

यस्मिन्नृचः सामयजूᳬंषियस्मिन्प्रतिष्ठितारथनाभाविवाराः ॥
यस्मिँश्चित्तᳬं सर्व्वमोतम्प्रजानान्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥९॥

सुषारथिरश्श्वानिवयन्मनुष्यान्नेनीयतेभीशुभिर्व्वाजिनऽ इव ॥
हृत्प्रतिष्ठंयदजिरञ्जविष्ठन्तन्मेमनः शिवसङ्कल्पमस्तु ॥१०॥

॥ इति रूद्रपाठे प्रथमोध्याय : ॥

जेनेदम् भूतम् भुवनम् भविख्यत् परि गृहीत म्मृतेन सर्वम्।

जेन जग्न्यस्ता यते सप्त होता तन्मे मनह शिव संकल्प मस्तु।8।

जस्मिन्नृचह सामजजू गुँ खि जस्मिन् प्रतिष्ठिता

रथनाभावि वाराहा।

जस्मिन्श्चित्त गुँ सर्वमोतम् प्रजानान्तन्मे मनह शिव संकल्प मस्तु।9।

सुखा रथि रश्वानिव जन्मनुख्यान्ने नीयते भी सुभिर्वाजिन इव।

हृत्प्रतिष्ठन्जदजिरन जविष्ठन्तन्मे मनह शिव संकल्प मस्तु।10।

। इति रूद्रपाठे प्रथमोध्याय :।

द्वितीयो अध्यायः

हरि÷ ॐ सहस्त्रशीर्षापुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रपात् ॥

सभूमिꣳ सर्व्वतस्पृत्त्वात्त्यतिष्ठद्दशाङ्गुलम् ॥ १ ॥

पुरूषऽएवेदꣳ सर्व्वंय्यद्भूतंय्यच्चभाव्यम् ॥

उतामृतत्त्वस्येशानोयदन्नेनातिरोहति ॥ २ ॥

एतावानस्यमहिमातोज्ज्यायाँश्च्चपूरूषः ॥

पादोऽस्यविश्श्वाभूतानित्रिपादस्यामृतन्दिवि ॥ ३ ॥

त्रिपादूर्ध्वऽउदैत्पुरूषः पादोऽस्येहाभवत्पुन÷ ॥

ततोविष्ष्वङ्व्यक्क्रामत्साशनानशनेऽअभि ॥ ४ ॥

द्वितीयो अध्यायः

हरिहि ॐ सहस्रशीर्खा पुरूखह सहस्राक्षह सहस्रपात्।
स भूमि गुँ सर्वतस पृत्वात्यतिष्ठद दशागुँलम्।1।
पुरूख एवेद गुँ सर्वन्जदभूतन्जच्च भाव्यम्।
उता मृतत्वस्ये शानो जदन्ने नाति रोहति।2।
एता वानस्य महिमातो ज्यायाँन्श्च पुरूखह।
पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतन्दिवि।3।
त्रिपा दूर्ध्व उदैत्पुरूखह पादो स्येहा भवत्पुनह।
ततो विख्वन्व्यक्रामत्सा शनान शने अभि।4।

ततोव्विराडजायतव्विराजोऽअधिपूरुषः ॥

सजातोऽअत्यरिच्च्यतपश्च्चाद्भूमिमथोपुरः ॥५॥

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतः सम्भृतम्पृषदाज्ज्यम् ॥

पशूँस्ताँश्चक्क्रेव्वायव्व्यानारण्ण्याग्ग्राम्म्याश्च्चये ॥६॥

तस्माद्यज्ञात्सर्व्वहुतऽऋचः सामानिजज्ञिरे ॥

छन्दाᳯसिजज्ञिरेतस्म्माद्यजुस्तस्म्मादजायत ॥७॥

तस्म्मादश्श्वाऽ अजायन्तयेकेचोभयादतः ॥

गावोहजज्ञिरेतस्म्मात्तस्म्माज्जाताऽअजावयः ॥८॥

ततो विराड जायत विराजो अधि पुरूखह।

सजातो अत्य रिच्यत पश्चाद् भूमि मथो पुरह।5।

तस्माद्यगन्यात्सर्व हुतह सम्भृतम पृख दाज्यम्।

पशूँन्स्ताँन्श्चक्रे वायव्या नारण्या ग्राम्याश्च जे।6।

तस्मा द्यग्न्यात्सर्व हुत ऋचह सामानि जग्न्यिरे।

छनदा गुँ सि जग्न्यिरे तस्माद्यजुस तस्मादजायत।7।

तस्मा दश्वा अजायन्त जे के चोभया दत्तह।

गावो ह जग्न्यिरे तस्मात तस्माज्जाता अजावयह।8।

तंय्यज्ञम्बर्हिषिप्प्रौक्षन्न्पुरूषञ्जातमग्ग्रतः ॥
तेनदेवाऽअयजन्तसाद्ध्याऽऋषयश्श्चये ॥९ ॥
यत्पुरूषंव्व्यदधुः कतिधाव्व्यकल्प्पयन् ॥
मुखङ्किमस्यासीत्किम्बाहूकिमूरूपादाऽउच्च्येते ॥१० ॥
ब्ब्राह्मणोऽस्य्मुखमासीद्बाहूराजन्न्यः कृतः ॥
ऊरूतदस्य्यद्वैश्यः पद्भ्याᳬशूद्द्रोऽअजायत ॥११ ॥
चन्द्रमामनसोजातश्श्चक्षोः सूर्य्योऽअजायत ॥
श्रोत्रादद्वायुश्श्चप्राणश्श्चमुखादग्निरजायत ॥१२ ॥

तन्जगन्यम् बर्हिखि प्रौक्षन् पुरूखन्जात मग्रतह।

तेन देवा अयजन्त साध्या ऋखयश्च जे।9।

जत्पुरूखम् व्यदधुहु कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखम् किमस्या सीतकिम बाहू किमूरू पादा उच्येते।10।

ब्राह्मणोस्य मुख मासीद् बाहू राजन्ह्यह कृतह।

उरू तदस्य जद वैश्यह पदभ्या गुँ शूद्रो अजायत।11।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोहो सूर्जो अजायत।

श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च मुखा दग्निर जायत।12।

नाब्भ्याऽआसीदन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णोद्यौः समवर्त्तत ॥

पद्भ्याम्भूमिर्द्दिशः श्रोत्रात्तथालोकाँ२ ॥ ऽअकल्प्पयन् ॥१३ ॥

यत्पुरूषेणहविषादेवायज्ञमतन्न्वत ॥

वसन्तोऽस्यासीदाज्ज्यङ्ग्रीष्मऽइध्मः शरद्धविः ॥१४ ॥

सप्प्तास्यासन्न्परिधयस्त्रिः सप्प्तसमिधः कृताः ॥

देवायद्यज्ञन्तन्न्वानाऽअबध्नन्न्पुरूषम्प्पशुम् ॥१५ ॥

यज्ञेनयज्ञमयजन्तदेवास्तानिधर्म्माणिप्प्रथमान्न्यासन् ॥

तेहनाकम्म्महिमानः सचन्तयत्रपूर्व्वेसाद्ध्याः सन्तिदेवाः ॥१६ ॥

नाभ्या आसी दन्तरिक्ष गुँ शीर्ष्णो द्यौहु समवर्तत।

पद्भ्याम् भूमिर्दिशह श्रोत्रात तथा लोकाँउ अकल्पयन्।13।

जत्पुरूखेण हविखा देवा जग्न्य मतन्वत।

वसन्तो स्यासी दाज्यन्ग्रीख्म इध्मह शरद्विहि।14।

सप्तास्या सन्न परिधयस्त्रिहि सप्त समिधह कृताहा।

देवा जद्यग्न्यन्तन्वाना अबध्नन पुरूखम्पशुम्।15।

जग्न्येन जग्न्यम यजन्त देवा स्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते हनाकम् महिमानह सचन्त जत्र पूर्वे साध्याहा सन्तिदेवाहा।16।

अद्भ्यः सम्भृतꣳ पृथिव्व्यैरसाच्चव्विश्श्वकर्म्मणꣳ समवर्त्तताग्ग्रे ॥

तस्यत्त्वष्टाव्विदधद्द्रूपमेतितन्मर्त्यस्यदेवत्वमाजानमग्ग्रे ॥१७॥

व्वेदाहमेतम्पुरुषम्महान्तमादित्यवर्ण्णन्तमसꣳ परस्तात् ॥

तमेवव्विदित्त्वातिमृत्युमेतिनान्न्यः पन्थाव्विद्यतेऽयनाय ॥१८॥

प्रजापतिश्श्चरतिगर्ब्भेऽअन्तरजायमानोबहुधाव्विजायते ॥

तस्ययोनिम्परिपश्यन्तिधीरास्तस्मिन्हतस्थुर्ब्भुवनानिव्विश्श्वा ॥१९॥

योदेवेब्भ्यऽआतपतियोदेवानाम्पुरोहितꣳ ॥

पूर्व्वोयोदेवेब्भ्योजातोनमोरुचायब्ब्राह्मये ॥२०॥

अद्‌भ्यह सम्भृतह पृथिव्यै रसाच्च विश्व कर्मणह समवर्त ताग्रे।

तस्य त्वष्टा विद्‌धद्रूप मेति तन्मर्त्यस्य देवत्वमाजान मग्रे।17।

वेदाह मेतम पुरूखम् महान्त मादित्य वर्णन्तमसह परस्तात्।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेति नान्यह पन्था विद्यतेय नाय।18।

प्रजा पतिश्चरति गर्भे अन्तर जाय मानो बहुधा वि जायते।

तस्यजोनिम् परिपश्यन्ति धीरास्तस्मिन्नह

तस्थुर्भुवनानि विश्वा।19।

जो देवेभ्य आतपति जो देवानाम् पुरोहितह।

पूर्वो जो देवेभ्यो जातो नमो रूचाय ब्राह्मये।20।

रुचम्ब्राह्मञ्जनयन्तोदेवाऽअग्ग्रेतदब्ब्रुवन् ॥
यस्त्वैवंब्ब्राह्मणो व्विद्यात्तस्यदेवाऽअसुन्वशे ॥२१॥

श्रीश्चतेलक्ष्मीश्चपत्क्न्यावहोरात्रेपार्श्वेनक्षत्राणिरूपमश्विनौ
व्यात्तम् ॥

इष्णन्निषाणामुम्मऽइषाणसर्व्वलोकम्मऽइषाण ॥२२॥

॥इति रूद्रपाठे द्वितीयोऽध्यायः ॥२॥

रूचम् ब्राह्मन जनयन्तो देवा अग्रे तद ब्रुवन्।

जस्त्वैवम ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवा असन् वशे ।21।

श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्या वहोरात्रे पाश्र्वें नक्षत्राणि रूप मश्विनौ

व्यात्तम्। इष्णन्नि खाणा मुम्म इखाण सर्वलोकम्म इखाण ।22।

। इति रूद्रपाठे द्वितीयोध्यायः।

तृतीयो अध्यायः

हरि÷ ॐ आशुः शिशानोवृषभोनभीमोघनाघनः क्षोभणश्चर्षणीनाम् ॥

सङ्क्रन्दनोनिमिषऽएकवीरः शतꣳ सेनाऽअजयत्साकमिन्द्र÷ ॥ १ ॥

सङ्क्रन्दनेनानिमिषेणजिष्णुनायुत्कारेणदुश्श्च्यवनेनधृष्णुना ॥

तदिन्द्रेणजयततत्सहद्ध्वंय्युधोनरऽइषुहस्तेनवृष्णा ॥ २ ॥

सऽइषुहस्तैः सनिषङ्गिभिर्व्वशीसꣳस्त्रष्टासयुधऽइन्द्रोगणेन ॥

सꣳसृष्टजित्सोमपा बाहुशर्द्ध्युग्ग्रधन्वाप्प्रतिहिताभिरस्ता ॥ ३ ॥

तृतीयो अध्यायः

हरिहि ॐ आशुहु शिशानो वृखभो न भीमो घना घनह

क्षोभणश्चर्खणी नाम्। सन्क्रन्दनो निमिख एक वीरह

शत गुँ सेना अजयत् साकमिन्द्रह।1।

सन्क्रन्दनेना निमिखेण जिष्णुना जुत्कारेण दुश्च्यव नेन धृष्णुना।

तदिन्द्रेण जयत तत सहध्वम् जुधोनर इखु हस्तेन वृष्णा।2।

स इखुहस्तैहि स निखंगिभिर्वशीस गुँ स्रष्टा सयुध इन्द्रोगणेन।

स गुँ सृष्ट जित्सोमपा बाहु शर्ध्युग्र धन्वा प्रतिहिता भिरस्ता।3।

बृहस्पतेपरिदीयारथेनरक्षोहामित्राँ२ ॥ऽअपबाधमानः ॥

प्प्रभुञ्जन्त्सेनाः प्प्रमृणो युधाजयन्नस्म्माकमेद्ध्यविताारथानाम् ॥४ ॥

बलविज्ञाय स्त्थविरः प्प्रवीरः सहस्वान्वाजीसहमानऽउग्ग्रः ॥

अभिवीरोऽअभिसत्त्वासहोजाजैत्त्रमिन्द्ररथमातिष्ठगोवित् ॥५ ॥

गोत्त्रभिदङ्गोविदंव्वज्ज्रबाहुञ्जयन्तमज्ज्मप्प्रमृणन्तमोजसा ॥

इमः संजाताऽअनुवीरयद्ध्वमिन्द्रः सखायोऽअनुसः रंभद्ध्वम् ॥६ ॥

अभिगोत्त्राणिसहसागाहमानोदयोव्वीरः शतमन्न्युरिन्द्रः ॥

दुश्श्च्यवनः पृतनाषाडयुद्ध्योऽस्माकः सेनाऽअवतुप्प्रयुत्सु ॥७ ॥

बृहस्पते परिदीया रथेन रक्षोहा मित्राउँ अपबाध मानह।

प्रभन्जन्त्सेनाहा प्रमृणोजुधा जयन्नस्माक मेध्यविता रथानाम्।4।

बल विग्न्याय स्थविरह प्रवीरह सहस्वान् वाजी सहमान उग्रह।

अभिवीरो अभिसत्त्वा सहोजा जैत्रमिन्द्र रथमा तिष्ठ गोवित्।5।

गोत्रभिदन्गोविदम् वज्रबाहुन्जयन्त मज्म प्रमृणन्त मोजसा।

इम गुँ सजाता अनुवीरयध्वमिन्द्र गुँ सखायो अनुस गुँ रभध्वम्।6।

अभि गोत्राणि सहसा गाहमानो दयो वीरह शतमन्यु रिन्द्रह।

दुश्च्यव नह पृतनाखाड युध्योस्माक गुँ सेना अवतु प्रयुत्सु।7।

इन्द्रऽआसान्नेताबृहस्प्पतिर्द्दक्षिणायज्ञः पुरऽएतुसोमः ॥
देवसेनानामभिभञ्जतीनाञ्जयन्तीनाम्मरूतोयन्त्वग्ग्रम् ॥८॥
इन्द्रस्यवृष्ष्णोव्वरूणस्यराज्ञऽआदित्यानाम्मरूताᳬं शर्द्धऽउग्ग्रम् ॥
महामनसाम्भुवनच्च्यवानाङ्घोषोदेवानाञ्जयतामुदस्थात् ॥९॥
उद्धर्षयमघवन्नायुधान्युत्सत्त्वनाम्मामकानाम्मनाᳬंसि ॥
उद्वृत्रहन्वाजिनांव्वाजिनान्युद्द्रथानाञ्जयतांय्यन्तुघोषाः ॥१०॥
अस्म्माकमिन्द्रः समृतेषुद्ध्वजेष्ष्वस्म्माकंय्याऽइषवस्ताजयन्तु ॥
अस्माकंव्वीराऽउत्तरेभवन्त्वस्म्माँ२ ॥ ऽउदेवाऽअवताहवेषु ॥११॥

इन्द्र आसान्नेता बृहस्पतिर्दक्षिणा जग्न्यह पुरएतु सोमह।
देवसेना नामभि भन्जतीनान्जयन्तीनाम् मरूतो जन्त्वग्रम्।8।
इन्द्रस्य वृष्णो वरूणस्य राग्न्य आदित्यानाम् मरूता गुँ शर्ध उग्रम्।
महामनसाम् भुवन च्व्यवानान्घोखो देवानान्जयता मुदस्थात्।9।
उद्धर्खय मघवन नायुधान युत्सत्वनाम् मामकानाम् मना गुँ सि।
उदवृत्रहन्न वाजिनाम् वाजिनान् युद्रथानान् जयतान्जन्तु घोखाहा।10।
अस्माक मिन्द्रह समृतेखु ध्वजेख्वस्माकन्जा इखवस्ता जयन्तु।
अस्माकम वीरा उत्तरे भवन्त्वस्माँउ उदेवा अवता हवेखु।11।

अमीषाञ्चित्तम्प्रतिलोभयन्तीगृहाणाङ्गान्न्यप्वेपरेहि॥ अभिप्प्रेहिनिर्दहहृत्सु

शोकैरन्धेनामित्राास्तमसासचन्ताम्॥१२॥

अवसृष्टापरापतशरव्येब्रह्मसꣳशिते॥

गच्छामित्रान्प्रपद्यस्वमामीषाङ्कञ्चनोच्छिषꣳ॥१३॥

प्रेताजयतानरऽइन्द्रोवꣳशर्म्मयच्छतु॥

उग्रावः सन्तु बाहवोनाधृष्ष्यायथासथ॥१४॥

असौयासेनामरूतꣳ परैषामब्भ्यैतिनऽओजसास्प्पद्धमाना॥

ताङ्गूहततमसापव्व्रतेनयथामीऽअन्न्योऽअन्न्यन्नजानन्॥१५॥

अमीखान्चित्तम् प्रतिलोभ यन्ती गृहाणान गान्यप्वे परेहि।
अभि प्रेहि निर्दह हृत्सु शोकै रन्धेना मित्रास्तमसा सचन्ताम्।12।
अवसृष्टा परापत शरव्ये ब्रह्म स गुँ शिते।
गच्छा मित्रान् प्रपद्यस्व मामीखान्कन्चनोच्छिखह।13।
प्रेता जयता नर इन्द्रो वह शर्म् जच्छतु।
उग्रा वह सन्तु बाहवो ना धृख्या जथासथ।14।
असौ जा सेना मरूतह परेखामभ्यैति न ओजसा स्पर्ध माना।
तांगूहत तमसाप व्रतेन जथामी अन्यो अन्यन्न जानन्।15।

यत्त्रबाणाः सम्पतन्तिकुमाराव्विशिखाऽइव ॥

तन्नइन्द्रोबृहस्प्पतिरदितिः शर्म्मयच्छतुव्विश्श्वाहाशर्म्मयच्छतु ॥ १६ ॥

मर्म्माणितेव्वर्मणाच्छादयामिसोमस्त्वाराजामृतेनानुवस्ताम् ॥

उरोर्व्वरीयोव्वरूणस्तेकृणोतुजयन्तन्त्वानुदेवामदन्तु ॥ १७ ॥

॥ इति रूद्रपाठे तृतीयोऽध्यायः ॥ ३ ॥

यत्र वाणाहा सम्पतन्ति कुमारा विशिखा इव।

तन्न इन्द्रो बृहस्पतिरदितिहि शर्मजच्छतु विश्वाहा शर्मजच्छतु।16।

मर्माणि ते वर्मणाच्छादयामि सोमस्त्वा राजामृतेनानु वस्ताम्।

उरोर्वरीयो वरूणस्ते कृणोतु जयन्तन्त्वानु देवामदन्तु।17।

।इति रूद्रपाठे तृतीयोध्यायः।

चतुर्थो अध्यायः

हरिः ॐ व्विभ्राड्बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविह्रुतम् ॥

व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरूधाव्विराजति ॥ १ ॥

उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेतवः ॥ दृशेव्विश्श्वाय सूर्य्यम् ॥ २ ॥

येनापावकचक्षसाभुरण्यन्तञ्जनाँ२ ॥ऽअनु ॥ त्वंव्वरूणपश्श्यसि ॥ ३ ॥

दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगत६ंरथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञ६ंसमञ्जाथे ॥

तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्श्चित्रन्देवानाम् ॥ ४ ॥

चतुर्थो अध्यायः

हरि÷ ॐ व्विब्भ्राड्बृहत्पिबतुसोम्म्यम्मद्ध्वायुर्द्दधद्यज्ञपतावविहुतम् ॥

व्वातजूतोयोऽअभिरक्षतित्मनाप्प्रजाः पुपोषपुरूधाव्विराजति ॥ १ ॥

उदुत्यञ्जातवेदसन्देवंव्वहन्तिकेतव÷ ॥ दृशेव्विश्श्वाय सूर्य्यम् ॥ २ ॥

येनापावकचक्षसाभुरण्ण्यन्तञ्जनाँ२ ॥ऽअनु ॥ त्वंव्वरूणपश्श्यसि ॥ ३ ॥

दैव्व्यावद्ध्वर्य्यूऽआगतः रथेनसूर्य्यत्वचा ॥ मद्ध्वायज्ञः समञ्जाथे ॥

तम्प्रत्क्नथाऽयंव्वेनश्श्चित्रन्देवानाम् ॥ ४ ॥

चतुर्थो अध्याय:

हरिहि ॐ विभ्राडबृहत्पिबतु सोम्यम् मध्वायुरदधद्यगन्य पतावविहुतम्।

वातजूतो जो अभिरक्षतित्मना प्रजाहा पुपोखपुरूधा विराजति।1।

उदुत्यन्जात वेदसन्देवम् वहन्ति केतवह। दृशे विश्वाय सूर्जम्।2।

जेना पावक चक्षसा भुरण्यन्तन्जनाँउ अनु। त्वम वरूण पश्यसि।3।

दैव्या वध्वर्जूआगत गुँ रथेनसूर्जत्वचा मध्वाजग्न्य गुँ समन्जाथे।

तम् प्रत्त्क्नथायम वेनश्चित्रन देवानाम्।4।

तम्प्रत्क्नथापूर्व्वथाव्विश्श्वथेमथाज्ज्येष्ठुतातिम्बर्हिषदꣳस्वर्व्विदम् ॥

प्रतीचीनंव्वृजनन्दोहसेधुनिमाशुञ्जयन्तमनुयासुवर्द्धसे ॥५ ॥

अयंव्वेनश्च्चोदयत्पृश्श्निगर्ब्भाज्ज्योतिर्जरायूरजसोव्विमाने ॥

इममपाꣳसङ्गमेसूर्य्यस्यशिशुन्नव्विप्प्रामतिभीरिहन्ति ॥६ ॥

चित्रन्देवानामुदगादनीकञ्चक्षुर्मित्रस्यव्वरुणस्याग्ग्नेः ॥

आप्प्राद्यावापृथिवीऽअन्तरिक्षꣳसूर्य्यऽआत्त्माजगतस्तस्त्थुषश्श्च ॥७ ॥

तम् प्रत्त्क्नथा पूर्वथाविश्वथे मथा ज्येष्ठतातिम बर्हिखद गुँ स्वर्विदम्।

प्रतीचीनम् वृजनन्दोहसे धुनिमाशुन्जयन्त मनु यासु वर्धसे।5।

अयन्वेनश्चोद यत्पृश्नि गर्भा ज्योतिर्जरायु रजसो विमाने।

इममपा गुँ संगमे सूर्जस्य शिशुन्न विप्रा मतिभीरिहन्ति।6।

चित्रन्देवानामुद गादनीकन्चक्षुर्मित्रस्य वरूणस्याग्नेहे।

आप्राद्यावापृथिवी अन्तरिक्ष गुँ सूर्ज आत्मा जगतस तस्थुखश्च।7।

आनुऽइडाभिर्व्विदथेसुशुस्तिव्विुश्श्वानरꣳसविुतादेुवऽएतु॥

अपिुयथायुवानोुमत्सथानोुव्विश्श्वुञ्जगदभिपिुत्त्वेमनीुषा ॥८॥

यदुद्यकच्च्चवृत्रहन्नुदगाऽअुभिसूर्य्य॥ सर्व्वुन्तदिन्द्रतुेव्वशे॥९॥

तुरणिर्व्विुश्श्वदर्शतोज्ज्योतिुष्कृदसिसूर्य्य॥

व्विश्श्वुमाभासिरोचुनम्॥१०॥

तत्सूर्य्यस्यदेवुत्वन्तन्महिुत्वम्मुद्ध्याकर्त्तोुर्व्विततुꣳ सञ्जभार॥

युदेदयुक्तहुरित÷सुधस्त्थुादादद्द्रात्रीव्वासस्तनुतेसिुमस्म्मै ॥११॥

आन इडाभिर्विदथे सुशस्ति विश्वानरह सविता देव एतु।

अपि जथा जुवानो मत्सथा नो विश्वन्जगदभिपित्वे मनीखा।8।

जदद्य कच्च वृत्रहन्नुदगा अभि सूर्ज। सर्वन्तदिन्द्र ते वशे।9।

तरणिर्विश्व दर्शतो ज्योतिख्क्रृदसि सूर्ज। विश्वमाभासि रोचनम्।10।

तत्सूर्जस्य देवत्वन तन्महित्वम्मध्या कर्तोर्विततं गुँ संजभार।

जदेद युक्तहरितह सधस्था दादद्रात्री वासस्तनुते सिमस्मै।11।

तन्मित्रस्यव्वरुणस्याभिचक्षेसूर्य्योरूपङ्कृणुतेद्योरुपस्थे ॥

अनन्तमन्न्यदुद्रुशदस्यपाजः कृष्णमन्न्यद्धरितः सम्भरन्ति ॥ १२ ॥

बण्णमहाँ२ ॥ऽअसिसूर्य्यबड़ादित्त्यमहाँ२ ॥ऽअसि ॥

महस्तेसतोमहिमापनस्यतेद्धादेवमहाँ२ ॥ऽअसि ॥ १३ ॥

बट्सूर्य्य श्रवसामहाँ२ ॥ऽअसिसत्रादेवमहाँ२ ॥ऽअसि ॥

मन्हादेवानामसूर्य्यः पुरोहितोव्विभुज्ज्योतिरदाब्भ्यम् ॥ १४ ॥

श्रायन्तऽइवसूर्य्यंव्विश्श्वेदिन्द्रस्य भक्षत ॥

व्वसूनिजातेजनमानऽओजसाप्प्रतिभागन्नदीधिम ॥ १५ ॥

तन्मित्रस्य वरूणास्या भिचक्षे सूर्जो रूपन्कृणुते द्योरूपस्थे।

अनन्तमन्य द्रुशदस्य पाजह कृष्ण मन्यद्धरितह सम्भरन्ति।12।

बणमहाँउ असि सूर्ज बड़ादित्य महाँउ असि।

महस्ते सतो महिमा पनस्यते द्धा देवमहाँउ असि।13।

बट सूर्ज श्रवसा महाँउ असि सत्रादेव महाँउ असि।

मन्नहा देवानाम सूर्जह पुरोहितो विभु ज्योतिर दाभ्यम्।14।

श्रायन्त इव सूर्जम्विश्वे दिन्द्रयस्य भक्षत।

वसूनि जाते जनमान ओजसा प्रति भागन्न दीधिम।15।

अद्यादेवाऽउदितासूर्य्यस्यनिरꣳहसः पिपृतानिरवद्यात् ॥

तन्नोमित्रोव्वरूणोमामहन्तामदितिः ॥ सिन्धुः पृथिवीऽउतद्यौः ॥१६॥

आकृष्णेनरजसाव्वर्त्तमानोनिवेशयन्नमृतम्मर्त्यञ्च ॥

हिरण्ययेनसवितारथेनादेवोयातिभुवनानि पश्यन् ॥१७॥

॥ इति रूद्रपाठे चतुर्थोऽध्यायः ॥४॥

अद्या देवा उदिता सूर्जस्य निर गुँ हसह पिपृता निर वद्यात्।

तन्नो मित्रो वरूणो मा महन्ता मदितिहि।

सिन्धुहु पृथिवी उत द्यौहौ।16।

आकृष्णोन रजसा वर्तमानो निवेशयन नमृतम् मर्त्यन्च।

हिरण्य येन सविता रथेना देवो जाति भुवनानि पश्यन्।17।

। इति रूद्रपाठे चतुर्थोध्यायः।

पञ्चमो अध्यायः

हरिः ॐ नमस्तेरूद्द्रमन्न्यवऽउतोतऽइषवेनमः ॥
बाहुब्भ्यामुततेनमः ॥१ ॥
यातेरूद्द्रशिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ॥
तयानस्तन्न्वाशन्तमयागिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२ ॥
यामिषुङ्गिरिशन्तहस्तेबिभर्ष्ष्यस्तवे ॥
शिवाङ्गिरित्त्रताङ्कुरूमा हिँ सीः पुरूषञ्जगत् ॥३ ॥
शिवेनव्वचसात्त्वागिरिशाच्छावदामसि ॥
यथानः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मँ सुमनाऽअसत् ॥४ ॥

पंचमो अध्याय:

हरिहि ॐ ॐभूहु ॐभुवह ॐस्वह

ॐ नमस्ते रूद्र मन्यव उतो त इखवे नमह।

वाहुभ्या मुत ते नमह।1।

जा ते रूद्र शिवा तनूर घोरा पाप काशिनी।

तया नस्तन्वा शन्त मया गिरि शन्ताभि चाक शीहि।2।

जामिखुन्गिारि शन्त हस्ते विभर्ख्यस्तवे।

शिवान्गिारित्र तान्कुरूमा हि गुँ सीही पुरूखन्जगत्।3।

शिवेन वचसा त्वा गिरि शाच्छा वदा मसि।

जथा नह सर्वमिज्जगद यक्ष्म गुँ सुमना असत्।4।

अद्ध्यवोचदधिवक्ताप्प्रथमोदैव्व्योभिषक् ॥

अहींश्चसर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्चयातुधान्न्योऽधराचीः परासुव ॥५ ॥

असौयस्ताम्म्रोऽअरूणऽउतबब्भ्रुः सुमङ्गलः ॥

येचैनꣳ रूद्राऽअभितोदिक्षुश्श्रिताः सहस्त्रशोऽवैषाꣳहेडऽईमहे ॥६ ॥

असौयोऽवसर्प्पतिनीलग्ग्रीवोव्विलोहितः ॥

उतैनङ्गोपाऽअदृश्श्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः सदृष्ट्टोमृडयाति नः ॥७ ॥

नमोऽस्तुनीलग्ग्रीवायसहस्त्राक्षायमीढुषे ॥

अथोयेऽअस्यसत्त्वानोऽहन्तेब्भ्योऽकरन्नमः ॥८ ॥

अध्यवोच दधि वक्ता प्रथमो दैव्यो भिखक्।
अहीन्श्च सर्वान्जम्भयन्त् सर्वाश्च जातुधान्यो
धराचीही परासुव।5।

असौ जस्ताम्रो अरूण उत बभ्रुहु सुमंगलह।
जे चैन गुँ रूद्रा अभितो दिक्षु श्रिताहा सहस्रशो वैखा गुँ हेडईमहे।6।
असौ जोव सर्पति नीलग्रीवो विलोहितह।
उतैनन्गोपा अदृश्रन्न दृश्रन्नु दहार्जह स दृष्टो मृडयाति नह।7।
नमोस्तु नीलग्रीवाय सहश्राक्षाय मीढुखे।
अथो जे अस्य सत्वानो हन्तेभ्यो करन्नमह।8।

प्रमुञ्च्धन्वनस्त्वमुभयोरात्त्क्न्र्योर्ज्ज्याम् । ।

याश्च्चतेहस्तऽइषवः परताभगवोव्वप ॥ ९ ॥

विज्ज्यन्धनुः कपर्द्दिनोव्विशल्ल्योबाणवाँ२ ॥ऽउत ॥

अनेशन्नस्ययाऽइषवऽआभुरस्यनिषङ्गधिः ॥१०॥

यातेहेतिर्म्मीढुष्ट्टमहस्तेबभूवतेधनुः ॥

तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्म्मयापरिभुज ॥ ११ ॥

परितेधन्न्वनोहेतिरस्म्मान्न्वृणक्त्तुव्विश्श्वतः ॥

अथोयऽइषुधिस्तवारेऽअस्म्मन्निधेहितम् ॥ १२ ॥

प्रमुन्च धन्वनस्त्व मुभयो रात्न्योंर्ज्याम्।

जाश्च ते हस्त इखवह पराता भगवो वप।9।

विज्यन्धनुहु कपर्दिनो विशल्यो बाणवाँ उत।

अनेशन्नस्य जा इखव आभुरस्य निखंगाधिहि।10।

जा ते हेतिर्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुहु।

तयास्मान विश्वतस त्वम यक्ष्मया परिभुज।11।

परि ते धन्वनो हेति रस्मान्वृणक्तु विश्वतह।

अथो ज इखुधिस्त वारे अस्मन्नि धेहितम्।12।

अवतत्त्यधनुष्ट्वᳬंसहस्राक्षशतेषुधे ॥
निशीर्य्यशल्ल्यानाम्मुखाशिवोनः सुमनाभव ॥१३॥
नमस्तऽआयुधायानाततायधृष्णवे ॥
उभाब्भ्यामुततेनमोबाहुब्भ्यान्तवधन्न्वने ॥१४॥
मानोमहान्तमुतमानोऽअर्ब्भकम्मानऽउक्षन्तमुतमानऽउक्षितम् ॥ मानोव्वधीः
पितरम्मोतमातरम्मानः प्प्रियास्तन्न्वोरूद्द्ररीरिषः ॥१५॥
मानस्तोकेतनयेमानऽआयुषिमानोगोषुमानोऽअश्श्वेषुरीरिषः ॥
मानोव्वीरान्नुद्द्रभामिनोव्वधीर्हविष्म्मन्तः सदमित्त्वाहवामहे ॥१६॥

अवतत्य धनुष्ट्व गुँ सहस्त्राक्ष शतेखुधे।

निशीर्ज शल्यानाम्मुखा शिवो नह सुमनाभव।13।

नमस्त आयु धाया नातताय धृष्णवे।

उभाभ्या मुत ते नमो बाहुभ्यान्तव धन्वने।14।

मानो महान्तमुत मानो अर्भकम्मान उक्षन्तमुत मान उक्षितम्।

मानो वधीही पितरम्मोत मातरम्मानह प्रियास्तन्वो रूद्ररीरिखह।15।

मा नस्तोके तनये मा न आयुखि मानो गोखु मानो अश्वेखु रीरिखह।

मानो वीरान्न रूद्र भामिनो वधीरि हविखमन्तह सदमित्वा हवामहे।16।

नमो॒हिर॑ण्यबाहवेसेना॒न्न्ये॑दि॒शाञ्च॒पत॑ये॒नमो॒नमो॑वृ॒क्षेब्भ्यो॒ हरि॑केशेब्भ्य॒ᳪ

पशू॒नाम्पत॑ये॒नमो॒ नम॑÷शु॒ष्प्पिञ्ज॑राय॒त्त्विषी॑मतेपथी॒नाम्पत॑ये॒नमो॒

नमो॒हरि॑केशायोपवी॒तिनै॑पु॒ष्ट्टाना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॑ बब्भ्लु॒शाय॑॥१७॥

नमो॑बब्भ्लु॒शाय॑व्व्या॒धिनेऽन्ना॑ना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॑भु॒वस्स्य॑हे॒त्त्यैजग॑ता॒म्पत॑ये॒नमो॒

नमो॑रु॒द्द्राया॑तता॒यिने॒क्षेत्त्रा॑णा॒म्पत॑ये॒नमो॒नम॑÷ सू॒तायाह॑न्त्यै॒

व्वना॑ना॒म्पत॑ये॒नमो॒नमो॒रोहि॑ताय॥१८॥

नमो हिरण्य बाहवे सेनान्ये दिशांच पतये नमो नमो वृक्षेभ्यो

हरिकेशेभ्यह पशूनाम्पतये नमो नमह शख्पिंजराय त्विखीमते

पथीनाम्पतये नमो नमो हरि केशायोप वीतिने पुष्टानाम्पतये नमो नमो

बभ्लुशाय।17।

नमो बभ्लुशाय व्याधिनेन्ना नाम्पतये नमो नमो भवस्य हेत्यै

जगताम्पतये नमो नमो रूद्राया ततायिने क्षेत्राणाम्पतये नमो नमह सूताया

हन्त्यै वनानाम्पतये नमो नमो रोहिताय।18।

नमोरोहितायस्थपतयेव्वृक्षाणाम्पतयेनमोनमोभुवन्तयेव्वारिवस्कृतायौषधीना

म्पतयेनमोनमोमन्त्रिणेव्वाणिजायकक्षाणाम्पतयेनमोनमऽउच्चैर्ग्घोषाया

क्क्रन्दयतेपत्तीनाम्पतये नमोनमः कृत्स्नायतया ॥१९॥

नमः कृत्स्नायतयाधावतेसत्त्वनाम्पतयेनमोनमᳫं सहमानायनिव्व्याधिनऽ

आव्व्याधिनीनाम्पतयेनमोनमोनिषङ्गिणेककुभायस्तेनानाम्पतयेनमोनमोनि

चेरवेपरिचरायारण्ण्यानाम्पतयेनमोनमोव्वञ्चते ॥२०॥

नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणाम्पतये नमो नमो भुवन्तये वारि

वस्कृता यौखधीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय

कक्षाणाम्पतये नमो नम उच्चैर्ग्घोंखाया क्रन्दयते पत्तीनाम्पतये

नमो नमह कृत्स्नायतया ।19।

नमह कृत्स्नायतया धावते सत्वनाम्पतये नमो नमह सह मानाय

निव्याधिन आव्या धिनीनाम्पतये नमो नमो निखन्गिणे ककुभाय

स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचराया रण्यानाम्पतये नमो नमो

वंचते ।20।

नमो॒ वञ्च॑ते परि॒वञ्च॑ते स्ताय॒ूनाम्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ निष॒ङ्गिण॑ऽइषुधि॒मते॑

तस्क॑राणा॒म्पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ सृका॒यिभ्यो॒ जिघा॑ᳪसद्भ्यो मुष्ण॒ताम्पत॑ये॒न

मो॒ नमो॑ऽसि॒मद्भ्यो॒ नक्त॒ञ्चर॑द्भ्यो वि॒कृन्ताना॒म्पत॑ये॒ नमः॑ ॥२१॥

नमः॑ऽउष्णी॒षिणे॑ गिरि॒च॒राय॑ कुलु॒ञ्चाना॒म्पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ऽइषु॒मद्भ्यो॑ धन्वा॒यिभ्य॑

श्च वो॒ नमो॒ नमः॑ऽआतन्वा॒नेभ्यः॑ प्रति॒दधा॑नेभ्यश्च वो॒ नमो॒ नमः॑ऽआ॒यच्छ॒द्

भ्योस्य॑द्भ्यश्च वो॒ नमो॒ नमो॑ वि॒सृजद्भ्यः॑ ॥२२॥

नमो वंचते परिवंचते स्तायूनाम्पतये नमो नमो निखंगिण इखुधि

मते तस्कराणाम्पतये नमो नमह सृकायिभ्यो जिघा गुँ सद्भ्यो

मुष्णताम्पतये नमो नमो सिमद्भ्यो नक्तन्चर द्भ्यो

विकृन्तानाम्पतये नमह।21।

नम उष्णी खिणे गिरिचराय कुलुन्चानाम्पतये नमो नम

इखुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो नमो नम आतन्वानेभ्यह प्रतिदधानेभ्यश्च

वो नमो नम आयच्छद्भ्यो स्यद्भ्यश्च वो नमो नमो विसृजद्भ्यह।22।

नमोव्विसृजद्भ्योव्विद्ध्यभ्यश्शचवोनमोनम÷स्वपदभ्यो

जाग्ग्रद्भ्यश्शचवोनमोनमः शयानेब्भ्यऽआसीनेब्भ्यश्शच

वोनमोनमस्तिष्ठद्भ्योधावद्भ्यश्शचवोनमोनम÷ सभाब्भ्य÷ ॥२३॥

नम÷सभाब्भ्य÷सभापतिब्भ्यश्शचवोनमोनमोऽश्श्वेब्भ्योऽश्श्वपतिब्भ्य

श्शचवोनमोनमऽआव्व्याधिनीब्भ्योव्वि

विद्ध्यन्तीब्भ्यश्शच–वोनमोनमऽउगणाब्भ्यस्तृꣳ

हतीब्भ्यश्शचवोनमोनमोगणेब्भ्य÷ ॥२४॥

नमो विसृजद्भ्यो विध्यभ्यश्च वो नमो नमह स्व पदभ्यो

जाग्रद्भ्यश्च वो नमो नमह शयानेभ्य आसीनेभ्यश्च वो नमो

नमस्तिष्ठ द्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो नमह सभाभ्यह।23।

नमह सभाभ्यह सभापति भ्यश्च वो नमो नमोश्वेभ्यो श्व

पतिभ्यश्च वो नमो नम आव्याधिनीभ्यो विविध्यन्ती ब्भ्यश्च वो

नमो नम उगणाभ्यस्तृ गुँ हतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यह।24।

नमोगणेभ्योगणपतिभ्यश्श्चवोनमोनमोव्व्रातेभ्योव्व्रातपतिभ्यश्श्चवोनमोनमोगृत्सेभ्योगृत्सपतिभ्यश्श्चवोनमोनमोव्विरूपेभ्योव्विश्श्वरूपेभ्यश्श्चवोनमोनमः सेनाभ्यः ॥२५॥

नमः सेनाभ्यः सेनानिभ्यश्श्चवोनमोनमोरथिभ्योऽअरथेभ्यश्श्चवोनमोनमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्रहीतृभ्यश्श्चवोनमोनमोमहद्भ्योऽअर्भकेभ्यश्श्चवोनमः ॥२६॥

नमस्तक्षभ्योरथकारेभ्यश्श्चवोनमोनमः कुलालेभ्यः कर्म्मारेभ्यश्श्चवोनमोनमोनिषादेभ्यः पुञ्जिष्ठेभ्यश्श्चवोनमोनमः श्श्वनिभ्योमृगयुभ्यश्श्चवोनमोनमः श्श्वभ्यः ॥२७॥

नमो गणेभ्यो गणपति भ्यश्च वो नमो नमो व्रातेभ्यो
व्रातपति भ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्स पतिभ्यश्च वो
नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपे भ्यश्च वो नमो नमह सेनाभ्यह।25।
नमह सेनाभ्यह सेनानि भ्यश्च वो नमो नमो रथिब्भ्यो
अरथेभ्यश्च वो नमो नमह क्षत्तृब्भ्यह सन्ग्रहीतृभ्यश्च वो
नमो नमो महदभ्यो अर्भके भ्यश्च वो नमह।26।
नमस्तक्षभ्यो रथकारे भ्यश्च वो नमो नमह कुलालेभ्यह
कर्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निखादे भ्यह पुन्जिष्ठे भ्यश्च वो
नमो नमह श्वनिभ्यो मृगयुभ्यश्च वो नमो नमह श्वभ्यह।27।

नमः॑ श्श्वभ्भ्यः॑ श्श्वपतिभ्भ्यश्श्चवो नमोनमोभवायचरुद्द्रायचनमः
शर्व्वायचपशुपतयेचनमोनीलग्ग्रीवायचशितिकण्ठायच

नमः कपर्द्दिनै ॥२८॥ नमः कपर्द्दिनेचव्व्युप्प्तकेशायच नमः
सहस्राक्षायचशतधन्न्वनेच

नमोगिरिशयायचशिपिविष्ष्टायचनमोमीढुष्ष्टमायचेषुमते च नमो
ह्रस्वाय ॥२९॥

नमोह्रस्वायचव्वामनायचनमोबृहतेचव्वर्षीयसेचनमोव्वृद्द्धायचसवृधेचनमोऽ
ग्ग्यायचप्प्रथमायचनमऽआशवे ॥३०॥

नमह श्वभ्यह श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो भवाय च रूद्राय च

नमह शर्वाय च पशुपतये च नमो नील ग्रीवाय च शिति कण्ठाय

च नमह कपर्दिने ।28।

नमह कपर्दिने च व्युप्त केशाय च नमह सहस्त्राक्षाय च शतधन्वने

च नमो गिरिशयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय चेखुमते

च नमो ह्रस्वाय ।29।

नमो ह्रस्वाय च वामनाय च नमो बृहते च वर्खीयसे च नमो वृद्धाय च
सवृधे च नमोग्रयाय च प्रथमाय च नम आशवे ।30।

नमऽआशवेचाजिरायचनमः शीग्घ्र्यायचशीब्भ्यायचनमऽऊर्म्म्याय

चावस्वन्न्यायचनमोनादेयायचद्द्वीप्प्यायच ॥ ३१ ॥

नमोज्ज्येष्ठायचकनिष्ठायचनमः पूर्व्वजायचापरजायचनमोमद्

ध्यमायचापगल्भायचनमोजघन्न्यायचबुध्न्यायचनमः सोब्भ्याय ॥ ३२ ॥

नमः सोब्भ्यायचप्प्रतिसर्य्यायचनमोयाम्म्यायचक्षेम्म्यायचनमः श्श्लोक्क्या

यचावसान्न्यायचनमऽउर्व्वर्य्यायचखल्ल्यायचनमोव्वन्न्याय ॥ ३३ ॥

नमोव्वन्न्यायचकक्ष्यायचनमः श्श्रवायचप्प्रतिश्श्रवायचनमऽआशुषेणायचा

शुरथायचनमः शूरायचावभेदिनेचनमोबिल्म्मिने ॥ ३४ ॥

नम आशवे चा जिराय च नमह शीग्घ्र्याय च शीभ्याय च नम

ऊर्म्याय चा वस्वन्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ।31।

नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमह पूर्वजाय चापरजाय च नमो मध्यमाय

चापगल्भाय च नमो जघन्याय च बुध्न्याय च नमह सोभ्याय ।32।

नमह सोभ्याय च प्रतिसर्जाय च नमो जाम्याय चक्षेम्याय च नमह

श्लोक्याय चावसान्याय च नम उर्वर्ज्जाय च खल्याय च नमो वन्याय ।33।

नमो वन्याय च कक्ष्याय च नमह श्रवाय च प्रतिश्रवाय च नम

आशुखेणाय चाशुरथाय च नमह शूराय चाव भेदिने च नमो

बिल्मिने ।34।

नमोबिल्मिनेचकवचिनेचनमोव्वर्म्मिणे

चव्वरूथिनेचनम÷श्श्रुतायचश्श्रुतसेनायचनमोदुन्दुब्भ्याय

चाहनन्न्यायचनमोधृष्ष्णवे ॥ ३५ ॥

नमोधृष्ष्णवेचप्प्रमृशायचनमोनिषङ्गिणेचेषुधिमतेचनम

स्तीक्ष्णेषवेचायुधिनेचनम÷स्वायुधायचसुधन्न्वनेच ॥ ३६ ॥

नमꣳ स्स्रुत्यायचपत्थ्यायचनमꣳ

काट्ट्यायचनीप्प्यायचनमꣳकुल्ल्यायचसरस्स्यायचनमोनादेयायचव्वैशन्ताय

चनमꣳ कूप्प्याय ॥ ३७ ॥

नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च वरूथिने च नमह श्रुताय च

श्रुत सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय च नमो धृष्णवे।35।

नमो धृष्णवे च प्रमृशाय च नमो निखन्गिणे चेखुधिमते च

नमस्तीक्ष्णे खवे चायुधिने च नमह स्वायुधाय च सुधन्वने च।36।

नमह श्रुत्याय च पथ्याय च नमह काट्टयाय च नीप्याय च नमह कुल्याय

च सरस्याय च नमो नादेयाय च वैशन्ताय च नमह कूप्याय।37।

नमꣳ कूप्प्यायचावट्ट्यायचनमोव्वीद्ध्र्यायचातप्प्यायचनमो

मेग्घ्यायचव्विद्युत्यायचनमोव्वर्ष्ष्यायचाव्वर्ष्यायचनमोव्वात्त्याय ॥ ३८ ॥

नमोव्वात्त्यायचरेष्म्म्यायचनमोव्वास्तव्व्यायचव्वास्तुपायचनमꣳ

सोमायचरूद्द्रायचनमस्ताम्म्रायचारूणायचनमः शङ्गवे ॥ ३९ ॥

नमः शङ्गवेचपशुपतयेचनमऽउग्ग्रायचभीमायचनमोऽग्ग्रेवधायचदूरेवधाय

चनमोहन्त्रेचहनीयसेचनमोव्वृक्षेब्भ्योहरिकेशेब्भ्योनमस्ताराय ॥४० ॥

नमः शम्भुवायचमयोभुवायचनमः शङ्कुरायचमयस्कुरायचनमः

शिवायचशिवतरायच ॥४१ ॥

नमह कूप्याय्य चावट्टयाय च नमो वीद्ध्रयाय चातप्याय च नमो मेघ्याय च विद्युत्याय च नमो वर्ष्याय चावर्ष्याय च नमो वात्याय ।38। नमो वात्याय च रेखम्याय च नमो वास्तव्याय च वास्तुपाय च नमह सोमाय च रूद्राय च नमस्ताम्राय चारूणाय च नमह शंगवे ।39।

नमह शंगवे च पशुपतये च नम उग्राय च भीमाय च नमो ग्रे वधाय च दूरेवधाय च नमो हन्त्रे च हनीयसे च नमो वृक्षेभ्यो हरिकेशेभ्यो नमस्ताराय ।40। नमह शम्भवाय च मयो भवाय च नमह शंकराय च मयस्करायच नमह शिवाय च शिवतराय च ।41।

नमः पार्य्यायचावार्य्यायचनमः प्प्रतरणायचोत्तरणायच
नमस्तीर्त्थ्यायचकूल्ल्यायचनमः शष्प्यायच
फेन्न्यायचनमः सिकत्त्याय ॥४२॥
नमः सिकत्त्यायचप्प्रवाह्यायचनमः किꣳशिलायचक्ष
यणायचनमः कपर्द्दिनेचपुलस्तयेचनमऽइरिण्ण्यायचप्प्रप
त्थ्यायचनमोव्व्रज्ज्याय ॥४३॥
नमोव्व्रज्ज्यायचगोष्ठ्यायचनमस्तल्प्प्यायचगेह्यायचन
मोहृदय्यायचनिवेष्प्यायचनमः काट्ट्यायचगह्वरेष्ठायचनमः शुष्क्याय
॥४४॥

नमह पार्जाय चावार्जाय च नमह प्रत्तरणाय चोत्तरणाय च नमस्तीर्थ्याय च कूल्याय च नमह शष्प्याय च फेन्याय च नमह सिकत्याय ।42 ।

नमह सिकत्याय च प्रवाह्ज्जाय च नमह कि गुँ शिलाय च क्षयणाय च नमह कपर्दिने च पुलस्तये च नम इरिण्याय च प्रपथ्याय च नमो व्रज्याय ।43 ।

नमो व्रज्याय च गोष्ठयाय च नमस्तल्प्याय च गेह्ज्जाय च नमो हृदज्जाय च निवेख्य्याय च नमह काट्टयाय च गह्वरेष्ठाय च नमह शुख्क्याय ।44 ।

नमः शुष्क्यायचहरित्यायचनमः पाᳬं सव्व्यायचरजस्यायचनमोलोप्प्याय
चोलप्प्यायचनमऽऊर्व्व्यायचसूर्व्व्यायचनमः पर्ण्णाय ॥४५ ॥
नमः पर्ण्णायचपर्ण्णशदायचनमऽउद्गुरमाणायचाभिघ्नतेचनमऽआखिद
तेचप्प्रखिदतेचनमऽइषुकृद्भ्योधनुष्कृद
ब्भ्यश्चवोनमोनमोवः किरिकेब्भ्योदेवानाᳬं हृदयेब्भ्योनमोव्विचिन्व
त्केब्भ्योनमोव्विक्षिणत्केब्भ्योनमऽआनिर्हतेब्भ्यः ॥४६ ॥
द्रापेऽअन्धसस्प्पतेदरिद्द्रनीललोहित ॥
आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्माभेर्म्मारोङ्मोचनः किञ्चनाममत् ॥४७ ॥

नमह शुख्क्याय च हरित्याय च नमह पा गुँ सव्याय च रजस्याय च
नमो लोप्याय चोलप्याय च नम ऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमह पर्णाय।45।
नमह पर्णाय च पर्णशदाय च नम उद्गुर माणाय चाभिघ्नते च नम
आखिदते च प्रखिदते च नम इखुकृदभ्यो धनुख्कृदभ्यशचवो
नमो नमो वह किरिकेब्भ्यो देवाना गुँ हृदयेभ्यो
नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नम आनिर्हतेभ्यह।46।
द्रापे अन्ध सस्पते दरिद्रनील लोहित।
आसां प्रजानामेखां पशूनाम्मा भेर्म्मा रोंमो च नह
किंचनाममत्।47।

इमारुद्द्रायतवसेकपर्द्दिनेक्षयद्द्वीरायप्प्रभरामहेमती॒ ॥
यथाशमसदद्द्विपदेचतुष्प्पदेव्विश्वम्पुष्ट्टङ्ग्रामेऽअस्म्मिन्ननातुरम ॥४८॥
यातेरूद्द्रशिवातनू॒ शिवाव्विश्श्वाहाभेषजी ॥
शिवारूतस्यभेषजीतयानोमृडजीवसे ॥४९॥
परिनोरूद्द्रस्यहेतिर्व्वृणक्तुपरित्त्वेषस्यदुर्म्मतिरघायो॑ ॥
अवस्त्थिरामघवद्ब्भ्यस्तनुष्ष्वमीढ्वस्तोकायतनयायमृड ॥५०॥
मीढुष्ट्टमशिवतमशिवोन॑सुमनाभव ॥
परमेवृक्षऽआयुधन्निधायकृत्तिंवसानआचरपिनाकम्बिब्भ्रदागहि ॥५१॥

इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीही ।
जथा शमसद द्विपदे चतुख्पदे विश्वम्पुष्टन्ग्रामे अस्मिन ननातुरम ।48 ।
जाते रूद्र शिवा तनूहू शिवा विश्वाहा भेखजी ।
शिवा रूतस्य भेखजी तया नो मृडजीवसे ।49 ।
परि नो रूद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परित्वे खस्य दुर्मतिर घायोहो ।
अवस्थिरा मघवद्भ्यस तनुख्व मीढवस्तोकाय तनयाय मृड ।50 ।
मीढुष्टम शिवतम शिवो नह सुमना भव ।
परमे वृक्ष आयुधन निधाय कृत्तिम्वसान आचर पिनाकम् बिभ्रदा
गहि ।51 ।

विकिरिद्रविलोहितनमस्तेऽअस्तुभगवः ॥ यास्तेसुहस्त्र

हेतयोऽन्न्यमुस्म्मन्निवपन्तुताः ॥५२॥

सुहस्त्राणिसहस्त्रशोबाह्वोस्तवहेतयः ॥ तासामीशानोभगवः

पराचीनामुखाकृधि ॥५३॥

असङ्ख्यातासुहस्त्राणियेरूद्राऽअधिभूम्म्याम् ॥

तेषाꣳसहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५४॥

अस्म्मिन्न्महत्त्यर्ण्णवेऽअन्तरिक्षेभवाऽअधि ॥

तेषाꣳसहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५५॥

विकिरिद्र विलोहित नमस्ते अस्तु भगवह।

जास्ते सहस्त्र गुँ हेतयोन्य मस्मन निवपन्तु ताहा।52।

सहस्त्राणि सहस्त्रशो बाहवोस्तव हेतयह।

तासा मीशानो भगवह पराचीना मुखा कृधि।53।

असन्ख्याता सहस्त्राणि जे रूद्रा अधि भूम्याम्।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।54।

अस्मिन् महत्यर्णवे अन्तरिक्षे भवा अधि।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।55।

नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठादिवꣳ रूद्राऽउपश्रिताः ॥
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५६ ॥
नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः शर्व्वाऽअधः क्षमाचराः ॥
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५७ ॥
येव्वृक्षेषुशष्प्पिञ्जरानीलग्ग्रीवाव्विलोहिताः ॥
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५८ ॥
येभूतानामधिपतयोव्विशिखासः कपर्द्दिनः ॥
तेषाꣳ सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥५९ ॥

नील ग्रीवाहा शितिकण्ठा दिव गुँ रूद्रा उपश्रिताहा ।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ।56 ।

नीलग्रीवाहा शिति कण्ठाहा शर्वा अधह क्षमा चराहा ।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ।57 ।

जे वृक्षेखु शख्पिन्जरा नीलग्रीवा विलोहिताहा ।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ।58 ।

जे भूताना मधिपतयो विशिखासह कपर्दिनह ।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि ।59 ।

येपथाम्पथिरक्षयऽऐलबृदाऽआयुर्य्युध÷ ॥

तेषाᳬं सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥६० ॥

येतीर्त्थानिप्प्रचरन्तिसृकाहस्तानिषङ्गिण ॥

तेषाᳬं सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥६१ ॥

येन्नेषुव्विविद्ध्यन्तिपात्रेषुपिबतोजनान् ॥

तेषाᳬं सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥६२ ॥

यऽएतावन्तश्श्चभूयाᳬं सश्श्चदिशोरूद्द्राव्वितस्थिरे ॥

तेषाᳬं सहस्त्रयोजनेऽवधन्न्वानितन्न्मसि ॥६३ ॥

जे पथाम पथिरक्षय ऐलबृदा आयुर्जुधह।

तेखा गुँ सहस्त्र योजनेव धन्वानि तन्मसि।60।

जे तीर्थानि प्रचरन्ति सृका हस्ता निखन्गिणह।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।61।

जेन्नेखु विविध्यन्ति पात्रेखु पिवतो जनान्।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।62।

ज एता वन्तश्च भूया गुँ सश्च दिशो रूद्रा वित स्थिरे।

तेखा गुँ सहस्र योजने वधन्वानि तन्मसि।63।

नमोऽस्तुरुद्रेब्भ्योयेदिवियेषांव्वर्षमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दशदक्षिणा
दशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः ॥ तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनो
मृडयन्तुतेयन्द्दिष्मोयश्श्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः ॥६४॥
नमोऽस्तुरुद्रेब्भ्योयेऽन्तरिक्षेयेषांव्वातऽइषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दश
दक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः ॥
तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनो
मृडयन्तुतेयन्द्दिष्मोयश्श्चनोद्वेष्टितमेषाञ्जम्भेदद्ध्मः ॥६५॥

तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु तेनो मृडयन्तु ते जन्द्विखमो जश्च नो द्वेष्टि

तमेखान् जम्भे दध्मह।64।

नमोस्तु रूद्रेभ्यो जे अन्तरिक्षे जेखाम् वात इखवह।

तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशो दीचीर्दशोर्ध्वाहा।

तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु तेनो मृडयन्तु ते जन्द्विखमो जश्च नो

द्वेष्टि तमेखान् जम्भेदध्मह।65।

नमोऽस्तुरूद्द्रेभ्योयेपृथिव्व्यांय्येषामन्नमिषवः ॥ तेब्भ्योदशप्प्राचीर्द्दश

दक्षिणादशप्प्रतीचीर्द्दशोदीचीर्द्दशोद्ध्वाः ॥

तेब्भ्योनमोऽअस्तुतेनोऽवन्तुतेनो

मृडयन्तुतेयन्द्दिद्धुष्म्मोयश्च्चनोद्द्वेष्ट्टितमेषाञ्जम्भेदध्मः ॥६६॥

॥ इति रूद्रपाठे पञ्चमोऽध्यायः ॥५॥

नमोस्तु रूद्रेभ्यो जे दिवि जेखाम् वर्ख मिखवह।

तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशो दीचीर्दशोर्ध्वाहा।

नमोस्तु रूद्रेभ्यो जे पृथिव्याम् जेखाम् अन्न मिखवह।

तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशो दीचीर्दशोर्ध्वाहा।

तेभ्यो नमो अस्तु ते नोवन्तु तेनो मृडयन्तु ते जन्द्विख्मो जश्च नो द्वेष्टि

तमेखान् जम्भेदध्मह।66। ।

ॐस्वह ॐभुवह ॐभूहु।

। इति रूद्रपाठे पंचमोध्याय।

षष्टमो अध्यायः

हरिः ॐ व्वयꣳ सोमव्व्रतेतवमनस्तनूषुबिब्भ्रतः ॥
प्रजावन्तः सचेमहि ॥ १ ॥

एषतेरूद्रभागः सहस्वस्त्राऽम्बिकयातञ्जुषस्वस्वाहैषतेरूद्र
भागऽ आखुस्तेपशुः ॥ २ ॥ अवरूद्रमदीमह्यवदेवन्त्र्यम्बकम् ॥
यथानोव्वस्यसस्करद्यथानः श्श्रेयसस्करद्यथानोव्व्यवसाययात् ॥ ३ ॥
भेषजमसिभेषजङ्गवेऽश्वायपुरूषायभेषजम् ॥ सुखम्मेषायमेष्ष्यै ॥ ४ ॥
त्र्यम्बकंय्यजामहेसुगन्धिम्पुष्ट्टिवर्द्धनम् ॥

षष्टमो अध्यायः

हरिहि ॐ वय गुँ सोमव्रते तव मनस्तनूखु बिभृतह प्रजावन्तह सचेमहि।1।

एख ते रूद्र भागह सह स्वस्राम्बिकया

तन्जुखस्व स्वाहैख ते रूद्र भाग आखुस्ते पशुहु।2।

अवरूद्रमदी मह्जव देवन्त्रयम्बकम् जथा नो वस्य

सस्करद्यथानह श्रेयसस्करद्यथानो व्यवसाययात्।3।

भेखजमसि भेखजं गवेश्वाय पुरूखाय भेखजम् सुखम्मेखाय मेख्यै।4।

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम्।

उर्व्वारुकमिवबन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीयमामृतात् ॥

त्र्यम्बकं य्यजामहेसुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥

उर्व्वारुकमिवबन्धनादितोमुक्षीयमामुत÷ ॥५ ॥

एतत्तेंरूद्द्राऽवसन्तेनपरोमूजवतोऽतींहि ॥

अवततधन्न्वापिनाकावसः कृत्तिवासाऽअहिंसन्नः शिवोऽतींहि ॥६ ॥

त्र्यायुषञ्जमदग्गनेः कश्यपस्यत्र्यायुषम् ॥

यद्देवेषुत्र्यायुषन्तन्नोऽअस्तुत्र्यायुषम् ॥७ ॥

उर्वारूकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।

त्रयम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पतिवेदनम् उर्वारूकमिव

बन्धनादितोमुक्षीय मामुतह।5।

एतत्ते रूद्रावसन्तेन परोमूजवतोतीहि। अवतत धन्न्वा पिनाकावसह

कृत्तिवासा अहि गुँ सन्ह शिवोतीहि।6।

त्रयायुखं जमदग्नेहे कश्यपस्य त्रयायुखम्।

जद्देवेखु त्रयायुखं तन्नो अस्तु त्रयायुखम्।7।

शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः ॥

निर्वर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्प्रजननायरायस्प्पोषायसुप्प्रजा

स्त्वायसुवीर्य्याय ॥८॥

॥ इति रूद्रपाठे षष्टोऽध्यायः ॥६॥

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामा हि गुँ सीही।

निवर्त्तयाम्या युखेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोखाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्जाय।8।

। इति रूद्रपाठे षष्टोध्याय।

सप्तमो अध्यायः

हरिं÷ ॐ उग्रश्च्चभीमश्च्चद्ध्वान्तश्च्चधुनिश्च्च ॥

सासुह्वाँश्च्चाभियुग्वाचव्विक्षिपः स्वाहा ॥ १ ॥

अग्निꣳ हृदयेनाशनिꣳ हृदयाग्ग्रेणपशुपतिङ्कृत्स्नहृदयेन भवंय्यक्ना ॥

शर्व्वम्मतसन्नाब्भ्यामीशानम्मन्न्युनामहादेवमन्तः पर्शव्व्ये

नोग्ग्रन्देवंव्वनिष्ठुनाव्वसिष्ठहनुः शिङ्गीनिकोश्याब्भ्याम् ॥ २ ॥

उग्ग्रँल्लोहितेनमित्रꣳ सौव्व्रत्त्येनरुद्द्रन्दौर्व्व्रत्त्येनेन्द्द्रम्प्पक्क्रीडेनमरुतोबलेनसा

द्ध्यान्प्रमुदा ॥ भवस्यकण्ठ्यꣳ रुद्द्रस्यान्तः पार्श्वर्व्यम्महा

देवस्ययकृच्छर्व्वस्यव्वनिष्ठुः पशुपतेः पुरीतत् ॥ ३ ॥

सप्तमो अध्याय:

हरिहि ॐ उग्रश्च भीमश्च ध्वान्तश्च धुनिश्च।
सासहवांश्चाभियुग्वा च विक्षिपह स्वाहा।1।
अग्नि गुँ हृदयेनाशनि गुँ हृदयाग्रेण पशुपतिन्कृत्स्न हृदयेन भवन्जक्ना।
शर्वं म्त्सनाभ्या मीशानम् मन्युना महादेव मन्तह पर्श व्येनोग्रन्देवम्
वनिष्ठुना वशिष्ठ हनुहु शिन्गीनि कोश्याभ्याम्।2।
उग्रन्लोहितेन मित्र गुँ सौव्रत्येन रूद्रन दौर्व्रत्येनेन्द्रम् पक्रीडेन मरूतो
बलेन साध्यान् प्रमुदा।
भवस्य कण्ठय गुँ रूद्रस्यान्तह पाश्र्व्यम् महादेवस्य जकृच्छर्वस्य वनिष्ठुहु
पशुपतेहे पुरीतत्।3।

लो॒मभ्य॒ स्वाहा॑ लो॒मभ्य॒ स्वाहा॑ त्व॒चे स्वाहा॑ त्व॒चे स्वाहा॑ लोहि॑ताय॒ स्वाहा॑

लोहि॑ताय॒ स्वाहा॑ मेदो॑भ्य॒ स्वाहा॑ मेदो॑भ्य॒ स्वाहा॑ ॥ मा॒ꣳसेभ्य॒

स्वाहा॑ मा॒ꣳसेभ्य॒ स्वाहा॑ स्ना॑वभ्य॒ स्वाहा॑ स्ना॑वभ्य॒ स्वाहा॑ स्त्थभ्य॒

स्वाहा॑ स्त्थभ्य॒ स्वाहा॑ म॒ज्जभ्य॒ स्वाहा॑ म॒ज्जभ्य॒ स्वाहा॑ ॥

रेत॑से॒ स्वाहा॑ पा॒यवे॒ स्वाहा॑ ॥४॥

आ॒या॒साय॒ स्वाहा॑ प्रा॒या॒साय॒ स्वाहा॑ सं॒य्या॒साय॒ स्वाहा॑ वि॒या॒साय॒ स्वाहो॑द्या॒साय॒

स्वाहा॑ ॥ शु॒चे स्वाहा॑ शोच॑ते॒ स्वाहा॑ शोच॑माना॒य॒ स्वाहा॑ शोका॑य॒ स्वाहा॑ ॥५॥

लोमभ्यह स्वाहा लोमभ्यह स्वाहा त्वचे स्वाहा त्वचे स्वाहा।

लोहिताय स्वाहा लोहिताय स्वाहा मेदोभ्यह स्वाहा मेदोभ्यह

स्वाहा। मा गुँ सेभ्यह स्वाहा मा गुँ सेभ्यह स्वाहा स्नावभ्यह

स्वाहा स्नावभ्यह स्वाहा स्थभ्यह स्वाहा स्थभ्यह स्वाहा मज्जभ्यह

स्वाहा मज्जभ्यह स्वाहा। रेतसे स्वाहा पायवे स्वाहा।4।

आयासाय स्वाहा प्रायासाय स्वाहा सन्जासाय स्वाहा वियासाय स्वाहोद्या
साय स्वाहा। शुचे स्वाहा शोचते

स्वाहा शोचमानाय स्वाहा शोकाय स्वाहा।5।

तपसे॒स्वाहा॒तप्प्यते॒स्वाहा॒तप्प्यमानाय॒स्वाहा॑तप्ताय॒स्वाहा॑घर्म्माय॒स्वाहा ॥

निष्कृत्यै॒स्वाहा॒प्रायश्चित्त्यै॒स्वाहा॑भेषजाय॒स्वाहा ॥६ ॥

य॒माय॒स्वाहाऽन्तकाय॒स्वाहा॑मृत्यवे॒स्वाहा ॥

ब्ब्रह्मणे॒स्वाहा॑ब्ब्रह्महत्यायै॒स्वाहा॒व्विश्श्वेभ्यो॑दे॒वेब्भ्य॒ः

स्वाहा॒द्यावापृथि॒वीब्भ्या॒ꣳ स्वाहा ॥७ ॥

॥ इति रूद्रपाठे सप्तमोऽध्यायः ॥७ ॥

तपसे स्वाहा तप्यते स्वाहा तप्यमानाय स्वाहा तप्ताय स्वाहा

घर्मायस्वाहा। निष्कृत्यैस्वाहा प्रायश्चित्यैस्वाहा भेखजाय स्वाहा।6।

जमाय स्वाहान्तकाय स्वाहा मृत्यवे स्वाहा। ब्रह्मणे स्वाहा ब्रह्म

हत्यायै स्वाहा विश्वेभ्यो देवेभ्यह स्वाहा द्यावा पृथिवीभ्या गुँ स्वाहा।7।

। इति रूद्रपाठे सप्तमोध्याय।

अष्टमो अध्यायः

हरिः ॐ व्वाजश्च्चमेप्प्रसवश्च्चमेप्प्रयतिश्च्चमेप्प्रसितिश्च्चमेधीति
श्च्चमेक्क्रतुश्च्चमेस्वरश्च्चमेश्श्लोकश्च्चमेश्श्रवश्च्चमे
श्श्रुतिश्च्चमेज्ज्योतिश्च्चमेस्वश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१॥
प्प्राणश्च्चमेऽपानश्च्चमेव्यानश्च्चमेऽसुश्च्चमेचित्तञ्चमऽआधीतञ्चमेव्वाक्च
मेमनश्च्चमेचक्षुश्च्चमेश्श्रोत्रञ्चमेदक्षश्च्चमेबलञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२॥
ओजश्च्चमेसहश्च्चमऽआत्माचमेतनूश्च्चमेशर्म्मचमेव्वर्मच
मेऽङ्गानिचमेऽस्थीनिचमेपरूᳬंषिचमेशरीराणिचमऽआयु
श्च्चमेजराचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥३॥

अष्टमो अध्यायः

हरिहि ॐ वाजश्च मे प्रसवश्च मे प्रयतिश्च मे प्रसितिश्च मे धीतिश्च मे क्रतुश्च मे स्वरश्च मे श्लोकश्च मे श्रवश्च मे श्रुतिश्च मे ज्योतिश्च मे स्वश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।1। प्राणश्च मे पानश्च मे व्यानश्च मे सुश्च मे चित्तन्च म आधीतन्च मे वाक च मे मनश्च मे चक्षुश्च मे श्रोत्रन्च मे दक्षश्च मे बलन्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।2। ओजश्च मे सहश्च म आत्मा च मे तनूश्च मे शर्म च मे वर्म च मे अन्गानि च मे स्थीनि च मे परू गुँ खिन्च मे शरीराणि च म आयुश्च मे जरा च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।3।

ज्यैष्ठ्यञ्चमुऽआधिपत्त्यञ्चमेमुन्न्युश्च्चमेभामश्च्चमेऽमश्च्चमेऽम्भश्च्चमेजेमा

चमेमहिमाचमेव्वरिमाचमेप्प्रथिमाचमेव्वर्षिमाचमेद्द्राघिमाचमे

व्वृद्धञ्चमेव्वृद्धिश्च्चमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥४॥ (न0)[१] ॥

सुत्त्यञ्चमेश्श्रद्धाचमेजगच्चमेधनञ्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्च्चमेक्क्रीडाचमेमोदश्च

चमेजातञ्चमेजनिष्ष्यमाणञ्चमेसूक्क्तञ्चमेसुकृतञ्चमेयुज्ञेन कल्प्पन्ताम् ॥५॥

ऋुतञ्चमेऽमृतञ्चमेऽयुक्ष्मञ्चमेऽनामयच्चमेजीवातुश्च्चमेदीर्घायुत्त्वञ्चमेऽनमित्र

ञ्चमेऽभयञ्चमेसुखञ्चमेशयनञ्चमेसूषाश्च्चमेसुदिनञ्चमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम्

॥६॥

ज्यैश्ठयन्चम आधिपत्यन्च मे मन्युश्च मे भामश्च मे मश्च मे अम्भश्च च मे जेमा च मे महिमा च मे वरिमा च मे प्रथिमा च मे वर्खिमा च मे द्राघिमा च मे वृद्धन्च मे वृद्धिश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।4।

। न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक।

सत्यन्च मे श्रद्धा च मे जगच्च मे धनन्च मे विश्वन्च मे महश्च मे क्रीडा च मे मोदश्च मे जातन्च मे जनिख्यमाणन्च मे सूक्तन्च मे सुकृतन्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।5।

ऋतन्च मे मृतन्च मे यक्ष्मन्च मे नाम यच्च मे जीवातुश्च मे दीर्घायुत्वन्च मे नमित्रन्च मे भयन्च मे सुखन्च मे शयनन्च मे सूखाश्च मे सुदिनन्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।6।

यन्ताचमेधर्त्ताचमेक्षेमश्च्चमे धृतिश्च्चमेव्विश्श्वञ्चमेमहश्च्चमेसंव्विच्चमे

ज्ञात्रञ्चमेसूश्च्चमेप्रसूश्च्चमेसीरञ्चमेलयश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥७॥

शञ्चमेमयश्च्चमेप्प्रियञ्चमेऽनुकामश्च्चमेकामश्च्चमेसौमनसश्च्चमेभगश्च्च

मेद्द्रविणञ्चमेभद्द्रञ्चमेश्श्रेयश्च्चमेव्वसीय

श्च्चमेयशश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥८॥ (न०) ॥

ऊर्क्चमेसूनृताचमेपयश्च्चमेरसश्च्चमेघृतञ्चमेमधुचमेसग्ग्धिश्च्चमेसपीति

श्च्चमेकृषिश्च्चमेव्वृष्ट्टिश्च्चमेजैत्रञ्चमऽऔद्भिद्यञ्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥९॥

जन्ता च मे धर्त्ता च मे क्षेमश्च मे धृतिश्च मे विश्वन्च मे महश्च मे संविच्च मे ग्न्यात्रन्च मे सूश्च मे प्रसूश्च मे सीरन्च मे लयश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।7। शन्च मे मयश्च मे प्रियन्च मे नुकामश्च मे कामश्च मे सौमन सश्च मे भगश्च मे द्रविणान्च मे भद्रन्च मे श्रेयश्च मे वसीयश्च मे जशश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।8। । न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ।

पेज संख्या 66 से 77 तक।

ऊर्क च मे सूनृता च मे पयश्च मे रसश्च मे घृतन्च मे मधु च मे सग्धिश्च मे सपीतिश्च मे कृखिश्च मे वृष्टिश्च मे जैत्रन्च म औदिभद्यन्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।9।

रयिश्च्चमेरायश्च्चमेपुष्टञ्चमेपुष्टिश्च्चमेव्विभुचमेप्प्रभुचमेपूर्णञ्चमेपूर्णत
रञ्चमेकुयवञ्चमेऽक्षितञ्चमेऽन्नञ्चमेऽक्षुच्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१०॥
व्वित्तञ्चमेव्वेद्यञ्चमेभूतञ्चमेभविष्यच्चमेसुगञ्चमेसुपत्थ्यञ्च
मऽऋद्धञ्चमऽऋद्धिश्च्चमेक्लृप्तञ्चमेक्लृप्तिश्च्चमेमति
श्च्चमेसुमतिश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥११॥
व्व्रीहयश्च्चमेयवाश्च्चमेमाषाश्च्चमेतिलाश्च्चमेमुद्गाश्च्चमेखल्ल्वाश्च्च
मेप्प्रियङ्गवश्च्चमेऽणवश्च्चमेश्यामाकाश्च्चमेनीवाराश्च्चमेगोधूमाश्च्चमे
मसूराश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥१२॥ (न0) ॥

रयिश्च मे रायश्च मे पुष्टन्च मे पुष्टिश्च मे विभु च मे प्रभु च मे पूर्णन्च मे पूर्णतरन्च मे कुयवन्च मे क्षितन्च मे अन्नन्च मे क्षुच्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।10।

वित्तन्च मे वेद्यन्च मे भूतन्च मे भविख्यच्च मे सुगन्च मे सुपथ्यन्च म ऋद्धन्च म ऋद्धिश्च मे क्लृप्तन्च मे क्लृप्तिश्च मे मतिश्च मे सुमतिश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।11। व्रीहयश्च मे जवाश्च मे माखाश्च मे तिलाश्च मे मुदगाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियंगवश्च मे ण वश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।12।

न पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक।

अश्म्मा॑चमे॒मृत्ति॑काचमेगि॒रय॑श्च्चमे॒पर्व्व॑ताश्च्चमे॒सिक॑ताश्च्चमे॒व्व॒नस्प्पत॑य

श्च्चमे॒हिर॑ण्ण्यञ्च॒मेऽय॑श्च्चमेश्या॒मञ्च॑मेलो॒हञ्च॑मे॒सीस॑ञ्चमे॒त्रपु॑चमेय॒ज्ज्ञेन

कल्प्पन्ताम्॥१३॥

अ॒ग्निश्च॑म॒ऽआप॑श्च्चमेव्वी॒रुध॑श्च्चम॒ऽओष॑धयश्च्चमेकृष्ट्प॒च्च्याश्च्च॑मे

ऽकृष्ट्प॒च्च्याश्च्च॑मेकृष्ट्प॒च्च्याश्च्च॑मेग्ग्रा॒म्म्याश्च्च॑मेप॒शव॑ऽआर॒ण्ण्याश्च्च

मेव्वि॒त्तञ्च॑मे॒व्वित्ति श्च्चमेभू॒तञ्च॑मे॒भूतिश्च्चमेय॒ज्ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१४॥

व्व॒सु॑चमेव्व॒स॒तिश्च्च॑मे॒कर्म्म॑चमे॒शक्ति॑श्च्च॒मेऽर्थ॑श्च्चम॒ऽएम॑श्च्चमऽइ॒त्त्याच॑मे॒

गति॑श्च्चमेय॒ज्ज्ञेनकल्प्पन्ताम्॥१५॥ (न०)॥

अश्मा च मे मृतिका च मे गिरयश्च मे पर्वताश्च मे सिकताश्च मे वनस्पतयश्च मे हिरण्यन्च मे यश्च मे श्यामन्च मे लोहन्च मे सीसन्च मे त्रपु च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।13। अग्निश्च म आपश्च मे वीरूधश्च म औखधयश्च मे कृष्टपच्याश्च कृष्टपच्याश्च मे ग्राम्याश्च मे पशव आरण्याश्च मे वित्तन्च मे वित्तिश्च मे भूतन्च मे भूतिश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।14। वसु च मे वसतिश्च मे कर्म च मे शक्तिश्च म अर्थश्च म एमश्चम इत्या च मे गतिश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।15। ।

न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक।

अग्निश्चमऽइन्द्रश्चमेसोमश्चमऽइन्द्रश्चमेसविता
चमऽइन्द्रश्चमेसरस्वतीचमऽइन्द्रश्चमेपूषाचमऽइन्द्रश्चमेबृहस्पतिश्चम
ऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम् ॥१६॥
मित्रश्चमऽइन्द्रश्चमेव्वरूणश्चमऽइन्द्रश्चमेधाताचमऽइन्द्रश्चमेत्त्वष्टा
चमऽइन्द्रश्चमेमरूतश्चमऽइन्द्रश्चमे
व्विश्श्वेचमेदेवाऽइन्द्रश्चमेयज्ञेनकल्पन्ताम्॥१७॥
पृथिवीचमऽइन्द्रश्चमेऽन्तरिक्षञ्चमऽइन्द्रश्चमेद्यौश्चमऽइन्द्रश्चमेसमा
श्चमऽइन्द्रश्चमेनक्षत्राणिचमऽइन्द्रश्चमेदिशश्चमऽइन्द्रश्चमेयज्ञेन
कल्पन्ताम्॥१८॥ (न०)

अग्निश्च म इन्द्रश्च मे सोमश्च म इन्द्रश्च मे सविता च म इन्द्रश्च मे सरस्वती च म इन्द्रश्च मे पूखा च म इन्द्रश्च मे बृहस्पतिश्च म इन्द्रश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।16। मित्रश्च म इन्द्रश्च मे वरूणश्च म इन्द्रश्च मे धाता च म इन्द्रश्च मे त्वष्टा च म इन्द्रश्च मे मरूतश्च म इन्द्रश्च मे विश्वेच मे देवा इन्द्रश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।17। पृथिवी च म इन्द्रश्च मे अन्तरिक्षन्च म इन्द्रश्च मे द्यौश्च म इन्द्रश्च मे समाश्च म इन्द्रश्च मे नक्षत्राणि च म इन्द्रश्च मे दिशश्च म इन्द्रश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।18।

। न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक

अ॒ꣳशु॒श्च्चमेर॒श्मिम्मश्च्च॒मेऽदा॑ब्भ्यश्च्च॒मेऽधिपतिश्च्चम

उपा॒ꣳशु॒श्च्चमेऽन्तर्य्या॒मश्च्चमऽऐन्द्रवाय॒वश्च्चमेमैत्रावरु॒णश्च्चमऽआ

श्श्वि॒नश्च्चमेप्प्रतिप्र॒स्थानश्च्चमेशु॒क्क्रश्च्चमेम॒न्थीचमेय॒ज्ञेन

कल्प्पन्ताम् ॥१९॥

आ॒ग्ग्र॒य॒णश्च्चमेव्वैश्श्वदेवश्च्चमेद्ध्रु॒वश्च्चमेवैश्श्वान॒रश्च्चमऽऐन्द्रा॒ग्ग्नश्च्च

मेम॒हावैश्श्वदेवश्च्चमेमरू॒त्त्व॒तीयाश्च्चम॒निष्क्कैवल्ल्यश्च्चमेसावि॒त्रश्च्चमे

सारस्व॒तश्च्चमे पात्क्नीव॒तश्च्चमेहारियोज॒नश्च्चमेय॒ज्ञेन

कल्प्पन्ताम् ॥२०॥

अ गुँ शुश्च मे रश्मिश्च मे दाभ्यश्च मे धिपतिश्च म उपा गुँ शुश्च मे अन्तर्जामश्च म ऐन्द्र वायवश्च मे मैत्रा वरूणश्च म आश्विनश्च मे प्रतिप्रस्थानश्च मे शुक्रश्च मे मन्थीच मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।19।

आग्रयणश्च मे वैश्वदेवश्च मे ध्रुवश्च मे वैश्वानरश्च म ऐन्द्राग्नश्च मे महावैश्वदेवश्च मे मरूत्वतीयाश्च मे निष्केवल्यश्च मे सावित्रश्च मे सारस्वतश्च मे पात्क्नीवतश्च मे हारियोजनश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।20।

स्त्रुचश्च्चमेचमुसाश्च्चमेव्वायुव्व्यानिचमेद्द्रोणकलुशश्च्च
मेग्ग्रावाणश्च्चमेऽधिषवणेचमेपूतभृच्चमऽआधवुनीय
श्च्चमेव्वेदिश्च्चमेबुर्हिश्च्चमेऽवभृथश्च्चमेस्वागाकारश्च्चमेयज्ञेन
कल्प्पन्ताम् ॥२१॥ (न०)

अग्ग्निश्च्चमेघुर्म्मश्च्चमेऽर्क्कश्च्चमेसूर्य्यश्च्चमेप्प्राणश्च्च
मेऽश्वमेधश्च्चमेपृथिवीचमेऽदितिश्च्चमेदितिश्च्चमेद्यौ
श्च्चमेऽङ्गुलयुः शक्क्करयोदिशश्च्चमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२२॥

व्व्रतञ्चमेऽऋतवश्च्चमेतपश्च्चमेसंव्वत्सुरश्च्चमेऽहोरात्रेऽऊर्व्वष्ठुीवेबृहद्र
थन्तुरेचमेयज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२३॥ (न०) ॥

स्रुचश्च मे चमसाश्च मे वायव्यानिच मे द्रोणकलशश्च मे ग्रावाणश्च मे धिखवणे च मे पूतभृच्च म आधवनीयश्च मे वेदिश्च मे बर्हिश्च मे अवभृथश्च मे स्वागाकारश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।21।

। न । पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक ।

अग्निश्च मे घर्मश्च मे अर्कश्च मे सूर्जश्च मे प्राणश्च मे अश्वमेधश्च मे पृथिवी च मे दितिश्च मे दितिश्च मे द्यौश्च मे अगुंलयह शक्वरयो दिशश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।22।

व्रतन्च मे ऋतवश्च मे तपश्च मे संवत्सरश्च मे अहोरात्रे ऊर्वष्ठीवे बृहद्रथन्तरे च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।23।

। न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक।

एका॑चमेतिुस्त्रश्च्च॑मेतिुस्त्रश्च्च॑मेपुञ्च॑चमेुपञ्च॑चमेसुप्तच॑मेसुप्तच॑मेुनव॑चमेुनव॑
चम॒ऽएका॑दशचम॒ऽएका॑दशचमे॒ऽत्रयो॑ दशचमे॒ त्रयो॑दशचमेुपञ्च॑दश
चमेुपञ्च॑दशचमेसुप्तद॑शचमेसुप्तद॑शचमेुनव॑दशचमेुनव॑दशचम॒ऽएक॑वि॒ꣳ
शतिश्च्च॑म॒ऽएक॑वि॒ꣳ शतिश्च्च॑मेुत्रयो॑वि॒ꣳ शतिश्च्च॑मेुत्रयो॑वि॒ꣳ शतिश्च्च॑मेु
पञ्च॑वि॒ꣳ शतिश्च्च॑मेपञ्च॑वि॒ꣳ शतिश्च्च॑मेसुप्तवि॒ꣳ शतिश्च्च॑मेसुप्तवि॒ꣳ
शतिश्च्च॑मेुनव॑वि॒ꣳ शतिश्च्च॑मेुनव॑वि॒ꣳ शतिश्च्च॑म॒ऽएक॑त्रि॒ꣳ
शच्च॑म॒ऽएक॑त्रि॒ꣳ शच्च॑मेुत्रय॑स्त्रि॒ꣳ शच्च॑मेयुज्ञेन॑ कल्प्पन्ताम् ॥ २४ ॥
(न०) ॥

एका च मे तिस्रश्च मे तिस्रश्च मे पन्च च मे पन्च च मे सप्त च मे सप्त च मे नवच मे नवच म एकादश च म एकादश च मे त्रयोदश च मे त्रयोदश च मे पंचदश च मे पंचदश च मे सप्तदश च मे सप्तदश च मे नवदश च मे नवदश च म एकवि गुँ शतिश्च म एकवि गुँ शतिश्च मे त्रयोवि गुँ शतिश्च मे मेत्रयोवि गुँ शतिश्च मे पचंवि गुँ शतिश्च मे पचंवि गुँ शतिश्च मे सप्तवि गुँ शतिश्च मे सप्तवि गुँ शतिश्च मे नववि गुँ शतिश्च मे नववि गुँ शतिश्च म एकत्रि गुँ शच्च म एकत्रि गुँ शच्च मे त्रयस्त्रि गुँ शच्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।24।

। न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक।

चतस्त्रश्च्चमेऽष्टौचमेऽष्टौचमेद्वादशचमेद्वादशचमेषोडशचमेषोडशचमेवि
ᳬ शतिश्च्चमेवि ᳬ शतिश्च्चमेचुतुर्वि
शतिश्च्चमेचतुर्वि ᳬ शतिश्च्चमेऽष्टावि ᳬ शतिश्च्चमेऽष्टावि ᳬ शतिश्च्चमे
द्वात्रि ᳬ शच्चमेद्वात्रि ᳬ शच्चमेषट्त्रि ᳬ शच्च
मेषट्त्रि ᳬ शच्चमेचत्त्वारि ᳬ शच्चमेचत्त्वारि ᳬ शच्चमेचतुश्च्चत्वारि ᳬ
शच्चमेचतुश्चत्त्वारि ᳬ शच्चमेऽष्ट्टाचत्त्वारि ᳬ
शच्चमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥ २५ ॥ (न०)
त्र्यविश्च्चमेत्र्युवीचमेदित्त्युवाट्चमेदित्त्यौहीचमेपञ्चाविश्च्चमेपञ्चावीचमे
त्रिवुत्त्सश्च्चमेत्रिवुत्त्साचमेतुर्य्युवाट्चमेतुर्य्यौहीचमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम्

चतस्त्रश्च मे अष्टौ च मे अष्टौ च मे द्वादश च मे द्वादश च मे खोडश च मे खोडश च मे वि गुँ शतिश्च मे वि गुँ शतिश्च मे चुर्तवि गुँ शतिश्च मे चुर्तवि गुँ शतिश्च मे अष्टावि गुँ शतिश्च मे अष्टावि गुँ शतिश्च मे द्वात्रि गुँ शच्च मे द्वात्रि गुँ शच्च मे खटत्रि गुँ शच्च मेखटत्रि गुँ शच्च मे चत्वारि गुँ शच्च मे चत्वारि गँ शच्च मे चतुश्चत्वारि गुँ शच्च मे चतुश्चत्वारि गुँ शच्च मे अष्टाचत्वारि गुँ शच्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।25।

। न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक।

त्रयविश्च मे त्रयवी च मे दित्यवाट च मे दित्यौही च मे पन्चाविश्च मे पन्चावी च मे त्रिवत्त्सश्च मे त्रिवत्त्सा च मे तुर्जवाट् च मे तुर्जौही च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।26।

पुष्ठुवाट्चमेपष्ठौहीचमऽउक्षाचमेव्वुशाचमऽऋषुभश्च्चमेव्वेहच्चमे ऽनड्वाँश्च्चमेधेनुश्च्चमेयुज्ञेनकल्प्पन्ताम् ॥२७॥ (न०)

व्वाजायुस्वाहाप्प्रसुवायुस्वाहाऽपिजायुस्वाहाक्क्रतवेस्वाहाव्वसवेस्वाहाऽहुर्प्पतये स्वाहाह्नेमुग्धायुस्वाहामुग्धायव्वैन६ शिनायुस्वाहाव्विन६ शिनऽआन्त्यायुनायु स्वाहान्त्यायभौवुनायुस्वाहाभुवनस्युपतयेस्वाहाधिपतयेस्वाहाप्प्रजापतये स्वाहा ॥ इयन्तेराणिम्मुत्त्रायुयन्तासियमनऽऊर्ज्जेत्त्वावृष्ट्यैत्त्वाप्प्रजानां त्त्वाधिपत्त्याय ॥२८॥

पष्ठवाट् च मे पष्ठौही च म उक्षा च मे वशा च म ऋखभश्च मे वेहच्च मे अंड्वान्श्च मे धेनुश्च मे जग्न्येन कल्पन्ताम्।27।

। न। पंचम अध्याय का पुनह पाठ। पेज संख्या 66 से 77 तक।

वाजाय स्वाहा प्रसवाय स्वाहा पिजाय स्वाहा क्रतवे स्वाहा वसवे स्वाहा अहर्पतये स्वाहान्ने मुग्धाय स्वाहा मुग्धाय वैन गुँ शिनाय स्वाहा विन गुँ शिन आन्त्यायनाय स्वाहा आन्त्याय भौवनाय स्वाहा भुवनश्य पतये स्वाहा अधिपतये स्वाहा प्रजापतये स्वाहा। इयन्ते राणिमत्राय जन्तासि जमन ऊर्जे त्वा वृष्टये त्वा प्रजानान्त्वा आधिपत्याय।28।

आयुर्य्यज्ञेनकल्प्पताम्प्राणोयज्ञेन
कल्प्पताञ्चक्षुर्य्यज्ञेनकल्प्पता ꣳ श्श्रोत्रंयज्ञेनकल्प्पताँवाग्ग्यज्ञेनकल्प्पताम्मनो
यज्ञेनकल्प्पतामात्मायज्ञेनकल्प्पताम्ब्रह्मायज्ञेनकल्प्पताञ्ज्योति
र्य्यज्ञेनकल्प्पता ꣳ स्वर्य्यज्ञेनकल्प्पताम्पृष्ठंय्यज्ञेनकल्प्पतांयज्ञोयज्ञेन
कल्प्पताम् ॥ स्तोमश्च्चयजुश्च्चऽऋक्क्चसामचबृहच्चरथन्तरञ्च ॥
स्वर्द्देवाऽअगन्म्मामृताअभूमप्प्रजापतेः प्प्रजाऽअभूमव्वेट्स्वाहा ॥२९॥

॥इति रूद्रपाठे अष्टमोऽध्यायः ॥८॥

आयुर्जग्न्येन कल्पताम् प्राणोजग्न्येन कल्पतान् चक्षुर्जग्न्येन कल्पता गुँ श्रोत्रन् जग्न्येन कल्पताम् वाग्जग्न्येन कल्पताम् मनो जग्न्येन कल्पताम् आत्मा जग्न्येन कल्पताम् ब्रह्मा जग्न्येन कल्पतान् ज्योतिर्जग्येन कल्पता गुँ स्वर्जग्न्येन कल्पताम् पृष्ठन् जग्न्येन कल्पतान जग्न्यो जग्न्येन कल्पताम्। स्तोमश्च जजुश्च ऋक् च साम च वृहच्च रथन्तरन्च। स्वर्देवा अगन्मामृता अभूम प्रजापतेहे प्रजा अभूम वेट स्वाहा।29।

। इति रूद्रपाठे अष्टमोध्याय।

शान्ति अध्याय

हरिः ॐ ऋचंवाचम्प्रपद्येमनोयजुः प्रपद्येसामप्राण
म्प्रपद्येचक्षुः श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ वागोजः सहौजोमयिप्राणापानौ ॥१ ॥
यन्मेछिद्रञ्चक्षुषोहृदयस्यमनसोवातितृण्णम्बृहस्पतिर्म्मेतद्दधातु ॥
शन्नोभवतुभुवनस्ययस्पतिः ॥२ ॥ भूर्भुवः स्वः ।
तत्सवितुर्व्वरेण्यम्भर्गोदेवस्यधीमहि ॥ धियोयोनः प्रचोदयात् ॥३ ॥
कयानश्चित्रऽआभुवदूतीसदावृधः सखा ॥ कयाशचिष्ठयावृता ॥४ ॥
कस्त्वासत्योमदानाम्म६ हिष्ठोमत्सदन्धसः ॥ दृढाचिदारूजेवसु ॥५ ॥
अभीषुणः सखीनामविताजरितृणाम् ॥ शतम्भवास्यूतिभिः ॥६ ॥

शान्ति अध्याय

हरिहि ॐ ऋचम् वाचम् प्रपद्ये मनो जजुहु प्रपद्ये साम प्राणम् प्रपद्ये चक्षुहु श्रोत्रम् प्रपद्ये । वागोजह सहौजो मयि प्राणापानौ ।1।

जन्मे छिद्रन्चक्षुखो हृदयस्य मनसो वातितृष्णम् बृहस्पतिर्मे तद्दधातु। शन्नो भवतु भुवनस्य जस्पतिहि।2।

भूर्भुवह स्वह तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नह प्रचोदयात्।3।

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधह सखा। कया शचिष्ठया वृता।4।

कस्त्वा सत्योमदानाम्म गुँ हिष्ठो मत्सदन्धसह। दृढा चिदारूजे वसु।5।

अभीखुणह सखी नामविता जरितृणाम्। शतम्भवास्यूतिभिहि।6।

कयात्वन्नऽऊत्त्याभिप्प्रमन्दसेव्वृषन् ॥ कयास्तोतृब्भ्यऽआभर ॥७॥
इन्द्रोव्विश्श्वस्यराजति ॥ शन्नोऽअस्तुद्विपदेशञ्चतुष्प्पदे ॥८॥
शन्नोमित्रः शंव्वरूणः शन्नोभवत्वर्य्यमा ॥ शन्नऽइन्द्रोबृहस्प्पतिः
शन्नोव्विष्णुरूरूक्क्रमः ॥९॥ शन्नोव्वातः पवताꣳशन्नस्तपतुसूर्य्यः ॥
शन्नः कनिक्क्रदद्देवः पर्ज्जन्न्योऽअभिवर्षतु ॥१०॥ अहानिशम्भवन्तुनः
शꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम् ॥
शन्नऽइन्द्राग्ग्नीभवतामवोभिः शन्नऽइन्द्रावरूणाराात हव्व्या ॥
शन्नऽइन्द्रापूषणाव्वाजसातौशमिन्द्रासोमासुविताय शंय्योः ॥११॥
शन्नोदेवीरभिष्ट्टयऽआपोभवन्तुपीतये ॥ शंय्योरभिस्त्रवन्तुनः ॥१२॥

कया त्वन्न ऊत्याभि प्रमन्दसे वृखन्। कया स्तोतृभ्य आभर ।7।
इन्द्रो विश्वस्य राजति। शन्नो अस्तु द्विपदे शन्चतुख्पदे ।8।
शन्नो मित्रह शम्वरूणह शन्नो भवत्वर्जमा।
शन्न इन्द्रो बृहस्पतिहि शन्नो विष्णुरूरूक्रमह ।9।
शन्नो वातह पवता गुँ शन्नस्तपतु सूर्जह।
शन्नह कनिक्रदद्देवह पर्जन्यो अभिवर्खतु ।10।
अहानिशम्भवन्तु नह श गुँ रात्रीही प्रतिधीयताम्।
शन्न इन्द्राग्नी भवताम् वोभिहि शन्न इन्द्रावरूणा रातहव्या।
शन्न इन्द्रा पूखणा वाजसातौ शमिन्द्रा सोमा सुविताय शन्जोहो ।11।
शन्नो देवी रभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शन्जो रभि स्रवन्तुनह ।12।

स्योनापृथिविनोभवानृक्षरानिवेशनी ॥ यच्छानः शर्म्मसप्प्रथाः ॥१३॥

आपोहिष्ठामयोभुवस्तानऽऊर्ज्जेदधातन ॥ महेरणायचक्षसे ॥१४॥

योवः शिवतमोरसस्तस्यभाजयतेहनः ॥ उशतीरिवमातरः ॥१५॥

तस्म्माऽअरङ्गमामवोयस्यक्षयायजिन्वथ ॥ आपोजनयथाचनः ॥१६॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षँ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः

शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥

व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः

सर्व्वँ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥१७॥

स्योना पृथिवि नो भवानृक्षरा निवेशनी। जच्छा नह शर्मसप्रथाहा।13।

आपो हिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।14।

जो वह शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेहनह उशतीरिव मातरह।15।

तस्मा अरन्गमाम वो जस्यक्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नह।16।

द्यौहौ शान्तिरन्तरिक्ष गुँ शान्तिहि पृथिवी शान्तिरापह

शान्तिरौखधयह शान्तिहि। वनस्पतयह शान्तिर्विश्वे देवाहा

ञ्शान्तिर्ब्रह्म शान्तिहि सर्व गुँ शान्तिहि शान्तिरेव शान्तिहि सामा
शान्तिरेधि।17।

दृतेदृꣳहमामित्रस्यमाचक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षन्ताम् ॥
मित्रस्याहञ्चक्षुषासर्व्वाणिभूतानिसमीक्षे ॥
मित्रस्यचक्षुषासमीक्षामहे ॥१८॥ दृतेदृꣳहमा ।
ज्ज्योक्तेसुन्दृशिजीव्व्यासुञ्ज्योक्तेसुन्दृशिजीव्व्यासम् ॥१९॥
नमस्तेहरसेशोचिषेनमस्तेऽअस्त्वर्च्चिषे ॥ अन्न्यांस्तेऽअस्म्मत्तपन्तुहेतयः
पावकोऽअस्म्मब्भ्यꣳशिवोभव ॥२०॥
नमस्तेऽअस्तुव्विद्युतेनमस्तेस्तनयित्नवे ॥ नमस्तेभगवन्नस्तुयतःस्वः
समीहसे ॥२१॥ यतोयतःसमीहसेततोनोऽअभयङ्कुरू ॥ शन्नः
कुरूप्प्रजाब्भ्योऽभयन्नःपशुब्भ्यः ॥२२॥

दृते दृ गुँ ह मा मित्रस्य मा चक्षुखा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् मित्रस्याहं चक्षुखा सर्वाणि भूतानि समीक्षे। मित्रस्य चक्षुखा समीक्षामहे।18।

दृते दृ गुँ हमा ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासन्ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम्।19।

नमस्ते हरसे शोचिखे नमस्ते अस्त्वर्चिखे। अन्यांस्ते अस्मत्तपन्तु हेतयह पावको अस्मभ्य गुँ शिवो भव।20।

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे।

नमस्ते भगवन्नस्तु जतह स्वह समीहसे।21।

जतो यतह समीहसे ततो नो भयन्कुरू।

शन्नह कुरू प्रजाभ्यो भयन्न पशुभ्यह।22।

सुमित्रियानऽआपऽओषधयः सन्तुदुर्म्मित्रियास्तस्म्मैसन्तुयोऽस्म्मा न्द्द्वेष्टियञ्चवयन्द्विष्म्मः ॥२३॥

तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्क्रमुच्चरत्॥ पश्येमशरदः शतञ्जीवेमशरदः शतꣳ श्रृणुयामशरदः शतंप्रब्ब्रवामशरदःशतमदीनाः स्यामशरदःशतम्भूयश्च्चशरदःशतात्॥२४॥

॥इति रूद्रपाठे शान्त्यध्यायः॥

सुमित्रिया न आप ओखधयह सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै।

सन्तु जोअस्मान् द्वेष्टि जन्च वयन्द्विख्मह।23।

तच्चक्षुर्देवहितम् पुरस्ताच्छुक्र मुच्चरत्। पश्येम शरदह शतन्जीवेम

शरदह शत गुँ श्रृणुयामशरदह शतम्प्रब्रवाम शरदह शतमदीनाहा

स्याम शरदह शतम्भूयश्च शरदह शतात्।24।

॥इति रूद्रपाठे शान्त्यध्यायः॥

स्वस्ति मंत्र

हरि÷ ॐ स्वुस्तिनुऽइन्द्रोवृृद्धश्श्रवाः स्वुस्तिन÷पूषाव्विुश्श्ववेदाः ॥

स्वुस्तिनुस्ताक्ष्यौुऽअरिष्टनेमिः स्वुस्तिनोुबृहुस्पतिर्द्दधातु ॥१॥

ॐ पय÷ पृथिुव्व्याम्पयुऽओषधीषुुपयोदिुव्व्युुन्तरिक्षुपयोधाः ॥

पयस्वतीःप्रुदिश÷ सन्तुुमहय्यम् ॥२॥

ॐ व्विुष्णोरुराटमसिुव्विुष्णोुःश्नप्त्रेस्त्थोुव्विुष्णोःस्यूरसिु

व्विुष्णोद्ध्रुवोुऽसि॥ व्वैुष्णुवमसिुव्विुष्णवेत्त्वा ॥३॥

स्वस्ति मंत्र

हरिहि ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाहा स्वस्ति नह पूखा विश्ववेदाहा

स्वस्तिनस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिहि स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु ।1।

ॐ पयह पृथिव्याम् पय ओखधीखु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाहा।

पयस्वतीही प्रदिशह सन्तु महय्यम् ।2।

ॐ विष्णो रराटमसि विष्णोहो श्नपत्रे स्थो विष्णोहो।

स्यूरसि विष्णोर्ध्रुवोअसि। वैष्णवमसि विष्णवेत्त्वा ।3।

ॐ अुग्निर्द्देवताुव्वातोंदुेवतासूर्य्यो'दुेवताचुन्द्रमादुेवताुव्वसंवोदुेवता
रुुद्राद्देवताऽऽदुित्त्यादुेवतामुरूतोंदुेवताुव्विश्श्वेंदुेवादुेवता
बृहुस्पतिर्द्दुेवतेन्द्रोंदुेवताुव्वरूंणोदुेवता ॥४॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि
सद्योजाताय वै नमो नमः॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय
नमः ॥५ ॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमः
कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो
बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥६ ॥
ॐ अघोरेभ्योअथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यह।
सर्वेभ्यह सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रूद्र रूपेभ्यह ॥७॥
तत्पुरूषाय विद्महे महादेवाय धीमहि॥ तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्॥८॥

ॐ अग्निर्देवता वातो देवता सूर्जो देवता चन्द्रमा देवता वसवो
देवता रूद्रा देवता आदित्या देवता मरूतो देवता
विश्वेदेवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता वरूणो देवता।4।
ॐ सद्योजातम् प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमह।
भवे भवे नातिभवे भवस्व माम् भवोदभवाय नमह।5।
वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमह श्रेष्ठाय नमो रूद्राय नमह
कालाय नमह कलविकरणाय नमो बल विकरणाय नमो बलाय
नमो बलप्रमथनाय नमह सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमह।6।
ॐ अघोरेभ्योअथ घोरेभ्यो घोर घोरतरेभ्यह।
सर्वेभ्यह सर्व शर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रूद्र रूपेभ्यह।7।

ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥
ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदा शिवोऽम् ॥ ९ ॥
ॐ शिवोनामासिस्वधितिस्तेपितानमस्तेऽअस्तुमामाहिꣳसीः ॥
निवर्त्तयाम्म्यायुषेऽन्नाद्यायप्रजननायरायस्पोषायसुप्रजास्त्वायसुवीर्य्याय
॥ १० ॥ ॐ व्विश्श्वानिदेवसवितर्दुरितानिपरासुव ॥
यद्भद्द्रन्तन्नऽआसुव ॥ ११ ॥ ॐ द्यौः
शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवीशान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥
व्वनस्प्पतयः शान्तिर्व्विश्श्वेदेवाः
शान्तिर्ब्ब्रह्मशान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेवशान्तिः सामाशान्तिरेधि ॥ १२ ॥

तत्पपुरूखाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रूद्रह प्रचोदयात्।8।
ईशानह सर्वविद्या नामीश्वरह सर्वभूतानाम्। ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणो
अधिपतिर्ब्रह्माशिवो मे अस्तु सदा शिवोम्।9।
ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मामाहि गुँ सीही।
निवर्त्तयाम्या युखेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोखाय सुप्रजास्त्वाय
सुवीर्जाय।10।
ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव यदभद्रन्तन्न आसुव।11।
ॐ द्यौहौ शान्तिरन्तरिक्ष गुँ शान्तिहि पृथिवी शान्तिरापह शान्तिरौखधयह
शान्तिहि। वनस्पतयह शान्तिर्विश्वेदेवाहा।
शान्तिर्बह्म शान्तिहि सर्व गुँ शान्तिहि शान्तिरेव शान्तिहि सामा
शान्तिरेधि।12।

ॐ सर्व्वेषां वा एषव्वेदानाꣳरसोयत्सामसर्व्वेषामेएवैन मेतद्वेदानाꣳरसेनाभिषिञ्चति ॥१३॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः। सुशान्तिर्भवतु। सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु॥

॥इति स्वस्तिप्रार्थनामान्त्राध्यायः॥ ॥इति रूद्राष्टाध्यायी समाप्ता॥

यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनञ्च् यद् भवेत्। तत्सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर।।
अनेन कृतेन श्रीरूद्राभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारूद्रः प्रीयताम्, न मम। ।।
ॐ श्रीसाम्बसदाशिवार्पण मस्तु ।।

ॐ सर्वेंखाम् वा एख वेदाना गुँ रसो यत्साम सर्वेंखाम
एवैन मेतद वेदाना गुँ रसेनाभिषिन्चति।13।
ॐ शान्तिहि शान्तिहि शान्तिहि सुशान्तिर्भवतु सर्वारिष्ट
शान्तिर्भवतु। यदक्षर पदभ्रष्टं मात्राहीनन्च् यद्भवेत्।
तत्सर्वम क्षम्यताम देव प्रसीद परमेश्वर।।
अनेन कृतेन श्रीरूद्राभिषेक कर्मणा
श्रीभवानी शंकर महामृत्युंजय प्रीयताम न मम।
।। ॐ श्री साम्ब सदा शिवार्पण मस्तु ।।

रूद्राष्टाध्यायी सम्पूर्णम्

उत्तरपूजन

1. पाद्य –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पादयोः पाद्यं समर्पयामि।

2. अर्घ्य –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि।

3. आचमनम –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, आचमनीयं जलं समर्पयामि।

4. स्नानम् –

मन्दाकिन्यास्तु यद्वारि सर्वपाप हरं शुभं।
तदिदं कल्पितं देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम्। ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, स्नानीयं जलं समर्पयामि।

5. वस्त्र यज्ञोपवीत उपवस्त्र –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, वस्त्रं समर्पयामि, वस्त्रान्ते आचमनीयं जलं
यज्ञोपवीतंच समर्पयामि, यज्ञोपवीतान्ते आचमनीयं जलं तथा च उपवस्त्रं समर्पयामि, उपवस्त्रान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

6. गन्धानुलेपनम –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, गन्धानुलेपनं समर्पयामि

7. अक्षत –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, अलंकरणार्थे अक्षतान् समर्पयामि।

8. पुष्पमाला –

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो। मयाहृतानि पुष्पाणि पूजार्थं प्रतिगृह्यताम्।
ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, पुष्पमालां समर्पयामि।

9. बिल्वपत्र –

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रयायुधम्। त्रिजन्म पापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।
दर्शनं बिल्ववृक्षस्य स्पर्शनं पापनाशनम्। अघोरपापसंहारं बिल्वपत्रं शिवार्पणम्।ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, बिल्वपत्राणि समर्पयामि।

10. दुर्वांकर –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दूर्वांकुरान् समर्पयामि।

11. धूप –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, धूपमाघ्रापयामि।

12. दीप –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, दीपं दर्शयामि। हस्त प्रक्षालनम्।

13. नैवेद्य –

शर्करा खण्डखाद्यानि दधिक्षीर घृतानि च आहारं भक्ष्यभोज्यं च नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः,
नैवेद्यम निवेदयामि। नैवेद्यान्ते आचमनीयं जलं समर्पयामि।

14. ताम्बूल –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, मुखवासार्थं एलालवंग पूगीफल सहितं ताम्बूलं समर्पयामि।

15. दक्षिणा –

ॐ भगवते श्री साम्बसदाशिवाय नमः, कृतायाः पूजायाः साद्गुण्यार्थे द्रव्यदक्षिणां समर्पयामि।

16. समर्पण – विल्वपत्र, मदारपुष्प, दूर्वांकर, धतूरफल, पुष्प, अक्षत एवं अन्य पुष्प या फल श्रद्धानुसार एक माला महामृत्यंजय मंत्र से सभी साधक एक साथ समर्पित करें।

17. दीपदान :– ।। दीप जलाकर समर्पित करें।।

18. शिव आरती

जय शिव ओंकारा, मन भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव अर्द्धांगी धारा।
एकानन चतुरानन पचांनन राजै।
हंसासन, गरूणासन, वृषवाहन साजै।
दो भुज, चारू चतुर्भुज, दशभुज ते सोहे।
तीनों रूप निरखता त्रिभुवन जन मोहे।
अक्षमाला, वनमाला, रूण्डमाला धारी।
चन्दन मृगमद सोहै भाले शुभकारी।
श्वेताम्बर, पीताम्बर, बाघम्बर अंगे।
सनकादिक, गरूणादिक, भूतादिक संगे।
कर के मध्य कमण्डल चक्र त्रिशुल धरता।
जग कर्ता, जग हर्ता, जग पालनकर्ता।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव जानत अविवेका।
प्रणवाक्षर के मध्ये ये तीनों एका।
त्रिगुण स्वामी जी की आरती जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी मन वांछित फल पावै।
जय शिव ओंकारा, मन भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव अर्द्धांगी धारा।

19. प्रार्थना

जय शिवशंकर जय गंगाधर करूणाकर करतार हरे।
जय कैलाशी जय अविनाशी, सुखराशी सुखसार हरे।
जय शशिशेखर जय डमरूधर जय-जय प्रेमागार हरे।
जय त्रिपुरारी जय मदहारी अमित अनन्त अपार हरे।
निर्गुण जय-जय सगुण अनामय निराकार साकार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।1।।
जय रामेश्वर जय जागेश्वर वैद्यनाथ केदार हरे।
मल्लिकार्जुन जय सोमनाथ जय महाकाल ओंकार हरे।
त्र्यम्बकेश्वर जय घुश्मेश्वर भीमेश्वर जगतार हरे।
काशीपति श्री विश्वनाथ जय मंगलमय अगहार हरे।
नीलकंठ जय भूतनाथ जय मृत्युंजय अविकार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।2।।
जय महेश जय-जय भवेश जय आदिदेव महादेव विभो।
किस मुख से हे गुणातीत प्रभु तब अपार गुण वर्णन हो।
जय भवकारक सारक हारक पातक दारक शिव शम्भो।
दीनदुखहर सर्वसुखाकर प्रेमसुधाकर की जय हो।
पार लगा दो भवसागर से बनकर करूणाधार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।3।।

जय मन भावन जय अतिपावन शोक नसावन शिव शम्भो।
विपद विदारन अधम उधारन सत्य सनातन शिव शम्भो।
सहज वचन हर जलज नयनवर धवल वरन तन शिव शम्भो।
मदन कदन कर पाप हरन हर चरन मनन धन शिव शम्भो
घिघसन विश्वरूप अलंकृत जग के मूलाधार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।4।।
भोलानाथ कृपाल दयामय औढरदानी शिवयोगी।
निमिषमात्र में देते हैं नवनिधि मनमानी शिवयोगी।
सरल हृदय अति करूणासागर अकथ कहानी शिवयोगी।
भक्तों पर सर्वस्व लुटाकर बने मसानी शिवयोगी।
स्वयं अकिंचन जन मन रंजन पर शिव परम उदार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।5।।
आशुतोष इस मोहमयी निद्रा से मुझे जगा देना।
विषम वेदना से विषयों की मायाधीश छुड़ा देना।
रूप सुधा की एक बूंद से जीवन मुक्त बना देना।
दिव्य ज्ञान भण्डार युगल चरणों की लगन लगा देना।
एक बार इस मन मन्दिर में कीजै पद संचार हरे।
पारवती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।6।।

दानी हो दो भिक्षा में अपनी अनपायिनि भक्ति प्रभो।

शक्तिमान हो दो अविचल निष्काम प्रेम की शक्ति प्रभो।

त्यागी हो दो इस असार संसार से पूर्ण विरक्ति प्रभो।

परमपिता हो दो तुम अपने चरणों में असुरक्ति प्रभो।

स्वामी हो निज सेवक की सुन लेना करूण पुकार हरे।

पार्वती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।7।।

तुम बिन विकल हूँ प्राणेश्वर आ जाओ भगवन्त हरे।

चरण शरण की बाँह गहो हे उमा रमण प्रिय कन्त हरे।

विरह व्यथित हूँ दीन दुखी हूँ दीनदयालु अनन्त हरे।

आओ तुम मेरे हो जाओ आ जाओ श्रीमन्त हरे।

मेरी इस दयनीय दशा पर कुछ तो करो विचार हरे।

पारवती पति हर-हर शम्भो पाहि पाहि दातार हरे।।8।।

भगवते श्री मृत्युंजय देव नमः

पाहि माम् पाहि माम् पाहि माम्।

रक्ष माम् रक्ष माम् रक्ष माम्।।

20. पुष्पांजलि (हाथ में चावल फूल लेकर निम्न पाठ करें)

ॐ जग्न्येन जग्न्यमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन।

ते हनाकम महिमानह सचन्त जत्र पूर्वे साध्याहा सन्तिदेवाहा।

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वयम वैश्रवणाय कुर्महे।

स मे कामान् कामकामाय मह्यम कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु।

कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः। ॐ स्वस्ति साम्राज्यम भौज्यम स्वाराज्यम् वैराज्यम पारमेष्ठयम राज्यम

महाराज्यमाधि पत्यमयम समन्त पर्यायी स्यात् सार्वभौमह सार्वायुखान्तादापरार्धात्। पृथिव्यै समुद्र पर्यन्ताया

एकराडिति तदप्येख श्लोको अभिगीतो मरूतह परिवेष्टारो मरूत्तस्यावसन्

ग्रहे। आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाहा सभासद इति।

ॐ विश्वतश्चक्षुरूत विश्वतोमुखो विश्वतोबाहुरूत विश्वतस्पात्।

सम बाहुभ्याम धमति सम पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन देव एकः।

ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तीः प्रचोदयात्।

ॐ सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि तन्नो देवी प्रचोदयात्।

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे, हंसारूढाय धीमहि तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।

ॐ महालक्ष्म्यै विद्महे, विष्णुप्रियायै धीमहि तन्नो लक्ष्मीःप्रचोदयात्।

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

ॐ गिरिजायै विद्महे, शिवप्रियायै धीमहि तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।

ॐ तत्पुरूषाय विद्महे, महादेवाय धीमहि तन्नो रूद्रः प्रचोदयात्।

ॐ जनक नन्दिन्यै विदमहे भूमि जायै धीमहि तन्नः सीता प्रचोदयात्।

ॐ दसरथये विद्महे, सीता वल्लभाय धीमहि तन्नो रामः प्रचोदयात्।

ॐ वृषभानुजायै विदमहे कृष्ण प्रियायै धीमहि तन्नो राधा प्रचोदयात्।

ॐ देवकी नन्दनाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नः कृष्णः प्रचोदयात्।

ॐ उग्रनृसिंहाय विद्महे, वज्र नखाय धीमहि। तन्नो नृसिंहः प्रचोदयात्।

ॐ महाज्वालाय विद्महे, अग्निदेवाय धीमहि। तन्नो अग्निः प्रचोदयात्।

ॐ सहस्त्रनेत्राय विद्महे, वज्र हस्ताय धीमहि। तन्नः इन्द्रः प्रचोदयात्।

ॐ अञ्जनीसुताय विद्महे, वायुपुत्राय धीमहि।तन्नो मारूतिः प्रचोदयात्।

ॐ पृथ्वी देव्यै विद्महे, सहस्त्र मूर्त्यै धीमहि। तन्नः पृथ्वी प्रचोदयात्।

ॐ भास्कराय विद्महे, दिवाकराय धीमहि। तन्नः सूर्य्यः प्रचोदयात्।

ॐ क्षीर पुत्राय विद्महे, अमृत-तत्त्वाय धीमहि। तन्नः चन्द्रः प्रचोदयात्।

ॐ सूर्य पुत्राय विद्महे, महाकालाय धीमहि। तन्नो यमः प्रचोदयात्।

ॐ जलबिम्बाय विद्महे, नील-पुरुषाय धीमहि। तन्नो वरुणः प्रचोदयात्।

ॐ नारायणाय विद्महे, वासुदेवाय धीमहि तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्।

ॐ वाणीश्वराय विद्महे, हयग्रीवाय धीमहि। तन्नो हयग्रीवः प्रचोदयात्।

ॐ परमहंसाय विद्महे, महाहंसाय धीमहि। तन्नो हंसः प्रचोदयात्।

ॐ श्री तुलस्यै विद्महे, विष्णु प्रियायै धीमहि। तन्नो वृन्दा प्रचोदयात्।

ॐ हौं ॐ जूँ सः भूर्भुवः स्वः त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिम् पुष्टिवर्द्धनम् उवारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् भूर्भुवः स्वरों जूँ सः हौं ॐ नानासुगन्धि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च पुष्पांजलिर्मया दत्तो गृहाण परमेश्वर।ॐ भूर्भुवः स्वः भगवते श्री मृत्युंजय देव नमः। मंत्रपुष्पांजलिम् समर्पयामि।

अक्षत पुष्प समर्पित करे।

21. क्षमा प्रार्थना

इमा रूद्राय तवसे कपर्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः।

जथा शमसद् द्विपदे चतुख्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे अस्मिन्ननातुरम्।।

पापोऽहं पापकर्माहं पापात्मा पाप सम्भवः।

त्राहि मां पार्वतीनाथ सर्वपाप हरो भव।।

मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्ति हीनं सदाशिव।

यतपूजितं मया देव परिपूर्णं तदस्तु मे।।

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।

पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर।।

अपराध सहस्त्राणि क्रियन्तेऽर्हनिशं मया।

दासोऽयमिति मां मत्वा क्षमस्व परमेश्वर।।

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम।

तस्मात् कारूण्य भावेन क्षमस्व परमेश्वर।।

ॐ मृत्युंजय महारूद्र त्राहि मां शरणागतम्।

जन्ममृत्यु जरा व्याधि पीडितम् कर्मबन्धनैः।।

22. प्रणाम

नमः सर्वहितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगोऽयम प्रणामस्ते प्रयत्नेन मयाकृतः।

23. प्रदक्षिणा

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि सर्वाणि नश्यन्तु प्रदक्षिण पदे पदे।।

24. अर्पणम

अनेन कृतेन श्रीरूद्राभिषेक कर्मणा श्रीभवानी शंकर महारूद्रः प्रीयताम न मम।
।ॐ सदा शिवार्पण मस्तु।।

25. मार्जन गंगाजल छिड़कना

पाँच या ग्यारह साधक एक माला महामृत्युंजय मंत्र से रोगी या पीड़ित व्यक्ति
का आम के पत्ते या पुष्प से गंगाजल द्वारा मार्जन करें।

26. शान्ति पाठ

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष गुँ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः
शान्रिोखधयःशान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे
देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व गुँ शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु
। सर्वारिष्ट शान्तिर्भवतु।

आसन के पास तीन बार जल छोड़कर उसी जल को दाहिने हाथ से अपने ललाट पर लगायें या अपने ललाट को जल वाले स्थान पर लगायें। फिर स्थान छोड़ें।

नोटः यदि अभिषेक शिवालय में नहीं किया हो तो

विसर्जन : अक्षत छोड़ते हुये निम्न मंत्र बोलें

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम।

इष्टकाम समृद्धयर्थं पुनरागमनाय च।।

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर।

यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन।।

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेता ध्वरेषु यत्।

स्मरणादेव तद्विष्णोहो सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः।।

यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।

न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्।।

यत्पाद पंकज स्मरणाद् यस्य नामजपादपि।

न्यूनं कर्म भवेत पूर्णं तं वन्दे वन्दे साम्बमीश्वरम्।।

ॐ साम्ब सदा शिवाय नमः। भगवते श्री मृत्युंजय देव नम।

श्री शिवपंचाक्षर स्तोत्रम्

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय भस्मांगरागाय महेश्वराय।

नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय तस्मै 'न' काराय नमः शिवाय।1।

मन्दाकिनी सलिल चन्दन चर्चिताय नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय।

मन्दारपुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय तस्मै 'म' काराय नमः शिवाय।2।

शिवाय गौरीवदनाब्ज वृन्द सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय।

श्री नीलकण्ठाय वृषध्वजाय तस्मै 'शि' काराय नमः शिवाय।3।

वसिष्ठ कुम्भोद्भव गौतमार्यमुनीन्द्र देवार्चित शेखराय।

चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय तस्मै 'व' काराय नमः शिवाय।4।

यक्षस्वरूपाय जटाधराय पिनाकहस्ताय सनातनाय।

दिव्याय देवाय दिगम्बराय तस्मै 'य' काराय नमः शिवाय।5।

पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पठेच्छिवसन्निधौ।

शिवलोकं वाप्नोति शिवेन सह मोदते।6।

इति श्रीमन् शंकराचार्य विरचितं शिव पंचाक्षरस्तोत्रं सम्पूर्णम्

द्वादशज्योतिर्लिंग स्मरणम्

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम्।

उज्जयिन्यां महाकाल मोंकारममलेश्वरम्।।

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम्।

सेतुबन्धे तु रामेशं नागेशं दारूकावने।।

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्रयम्बकं गौतमीतटे।

हिमालये तु केदारं घुश्मेशं च शिवालये।।

एतानि ज्योतिर्लिगांनि सायं प्रातः पठेन्नरः।

सप्तजन्मकृतं पापं स्मरणेन विनश्यति।

।सम्पूर्णम्।

लिंगाष्टकम्

ब्रह्ममुरारिसुरार्चितलिंगम् निर्मलभासितशोभितलिंगम्।
जन्मजदुःखविनाशकलिंगम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम।।
देवमुनिप्रवरार्चितलिंगम् कामदहम् करूणाकरलिंगम्।
रावणदर्पविनाशनलिंगम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।
सर्वसुगन्धिसुलेपितलिंगम् बुद्धिविवर्धनकारणलिंगम्।
सिद्धसुरासुरवन्दितलिंगम् तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम।।
कनकमहामणिभूषितलिंगम् फणिपतिवेष्टितशोभितलिंगम।
दक्षसुयज्ञविनाशनलिंगम तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।
कुंकुमचन्दनलेपितलिंगम् पंकजहारसुशोभितलिंगम।
संचितपापविनाशनलिंगम तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।
देवगणार्चितसेवितलिंगम भावैर्भक्तिभिरेव च लिंगम।
दिनकरकोटि प्रभाकरलिंगम तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।
अष्टदलोपरिवेष्टितलिंगम सर्वसमुद्भवकारणलिंगम।
अष्टदरिद्रविनाशितलिंगम तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।
सुरगुरूसुरवरपूजितलिंगम सुरवनपुष्पसदार्चितलिंगम।
परात्परं परमात्मकलिंगम तत् प्रणमामि सदाशिवलिंगम्।।
लिंगाष्टकमिदं पुण्यं यः पठेत शिवसन्निधौ।
शिवलोकमवाप्नोति शिवेन सह मोदते।।

शिव ताण्डवस्तोत्रम्

जटाटवीगलज्जल प्रवाह पावितस्थले गलेऽवलम्बय लम्बितां भुजंगतुंग मालिकाम्।
डमड्डमड्डमड् डमन्नि नादवड्डमयर्वयं चकार चण्डताण्डवं तनोतु नः शिवः शिवम ।1।
जटाकटाह सम्भ्रम भ्रमन्निलिम्प निर्झरी विलोल वीचि वल्लरी विराजमान मूर्द्धनि।
धगद्धगद्धगज्जव लल्ललाट पट्ट पावके किशोरचन्द्र शेखरे रतिः प्रतिक्षणं मम ।2।
धराधरेन्द्र नन्दिनी विलासबन्धुबन्धुर स्फुरद्दिगन्त सन्तति प्रमोदमान मानसे।
कृपाकटाक्ष धोरिणी निरूद्ध दुर्धरापदि क्वचिद्दिगम्बरे मनो विनोदमेतु वस्तुनि ।3।
जटाभुजंग पिंगलस्फुरत्फणामणि प्रभा कदम्ब कुंकुमद्रव प्रलिप्तदिग्वधूमुखे।
मदान्ध सिन्धुरस्फुरत्त्व गुत्तरीय मेदुरे मनो विनोदमद्भुतं बिभर्तु भूतभर्तरि ।4।
सहस्र लोचन प्रभृत्य शेषलेखशेखर प्रसुन धूलि धोरणी विधूसरांघ्रि पीठभूः।
भुजंगराज मालया निबद्ध जाटजूटकः श्रियै चिराय जायतां चकोर बन्धुशेखरः ।5।
ललाट चत्वरज्वलद्धनजयं स्फुलिगंभा निपीत पंचसायकं नमन्निलिम्पनायकम्।
सुधामयूख लेखया विराजमान शेखरं महाकपालि सम्पदे शिरो जटालमस्तु नः ।6।
करालभाल पट्टिका धगद्धगद्धगज्जवल द्धनजंयाहुतीकृत प्रचण्ड पंचसायके।
धराधरेन्द्र नन्दिनी कुचाग्रचित्रपत्रक प्रकल्पनैक शिलिपनि त्रिलोचने रतिर्मम ।7।
नवीनमेघमण्डली निरूद्धदुर्धर स्फुरत्कुहू निशीथि नीतमः प्रबन्धबद्ध कन्धरः।
निलिम्प निर्झरी धरस्तनोतु कृत्तिसिन्धुरः कलानिधान बन्धुरः श्रियं जगद्धुरन्धरः ।8।

प्रफुल्लनील पंकजप्रपंच कालिमप्रभा वलिम्बकठ कन्दली रूचि प्रबद्धकन्धरम्।
स्मरच्छिदं पुरच्छिदं भवच्छिदं मखच्छिदं गजच्छिदान्ध कच्छिदं तमन्तकच्छिदं भजे।9।
अखर्वसर्व मंगला कला कदम्ब मंजरी रसप्रवाह माधुरी विजृम्भणामधुव्रतम्।
स्मरान्तकं पुरान्तकं भवान्तकं मखान्तकं गजान्तकान्ध कान्तकं तमन्तकान्तकं भजे।10।
जयत्वद भ्रवि भ्रम भ्रमद्भुजंगमश्रवस द्विनिर्गमत्क्रम स्फुत्कराल भालहव्यवाट।
धिमिद्धिमिद्धिमि द्ध्वनन्मृदंग तुंगमंगल ध्वनिक्रम प्रवर्तित प्रचण्डताण्डव शिवः।11।
दृषद्विचित्र तल्पयोर्भुजंग मौक्ति कस्रजोर्गरिष्ठ रत्नलोष्ठयोः सुहृद्विपक्षपक्षयोः।
तृणारविन्द चक्षुषोः प्रजामहीमहेन्द्रयोः समप्रवत्तिकः कदा सदाशिवं भजाम्यहम्।12।
कदा निलिम्प निर्झरी निकुंज कोटरे वसन् विमुक्त दुर्मतिः सदा शिरः स्थमंजलिं वहन्।
विलोल लोल लोचनो ललामभाल लग्नकः शिवेति मन्त्रमुच्चरन् कदा सुखी भवाम्यहम्।13।
इमं हि नित्यमेव मुक्त मुत्तमोत्तमं स्तवं पठन्स्मन्ब्रवन्नरो विशुद्धिमेति सन्ततम्।
हरे गुरौ सुभक्ति माशु याति नान्यथा गतिं विमोहनं हि देहिनां सुशंकरस्य चिन्तनम्।14।
पूजावसान समये दशवक्त्रगीतं यः शम्भुपूजन परं पठति प्रदोषे।
तस्य स्थिरां रथगजेन्द्र तुरंगयुक्तां लक्ष्मीं सदैव सुमुखीं प्रददाति शम्भुः।15।

इति श्री रावणकृतं शिव ताण्डवस्तोत्रं सम्पूर्णम्

शिवसहस्रनाम स्तोत्र

सूत उवाच

श्रूयतां भो ऋषिश्रेष्ठा येन तुष्टो महेश्वरः। तदहं कथयाम्यद्य शैवं नामसहस्रकम्।1।

विष्णुरुवाच

शिवो हरो मृडो रूद्रः पुष्करः पुष्पलोचनः। अर्थिगम्यः सदाचारः शर्वः शम्भुर्महेश्वरः।2।
चन्द्रापीडश्चन्द्र मौलिर्विश्वं विश्वम्भरेश्वरः। वेदान्तसारसंदोहः कपाली नीललोहितः।3।
ध्यानाधारोऽपरिच्छेद्यो गौरीभर्ता गणेश्वरः। अष्टमूर्तिर्विश्वमूर्ति स्त्रिवर्गस्वर्ग साधनः।4।
ज्ञानगम्यो दृढप्रज्ञो देवदेवस्त्रिलोचनः। वामदेवा महादेवः पटुः परिवृढो दृढः।5।
विश्वरूपो विरूपाक्षो वागीशः शुचिसत्तमः। सर्व प्रमाण संवादी वृषांको वृषवाहनः।6।
ईशः पिनाकी खट्वांगी चित्रवेषश्चिरंतनः।
तमोहरो महायोगी गोप्ता ब्रह्मा च धूर्जटिः।7।
कालकालः कृत्तिवासाः सुभगः प्रणवात्मकः। उन्नघ्रः पुरूषो जुष्यो दुर्वासाः पुरशासनः।8।
दिव्यायुधः स्कन्दगुरूः परमेष्ठी परात्परः। अनादिमध्यनिधनो गिरीशो गिरिजाधवः।9।
कुबेरबन्धुः श्रीकण्ठो लोकवर्णोत्तमो मृदुः। समाधिवेद्यः कोदण्डी नीलकण्ठः परश्वधी।10।
विशालाक्षो मृगव्याधः सुरेशः सूर्यतापनः। धर्मधाम क्षमाक्षेत्रं भगवान भगनेत्रभित्।11।
उग्रः पशुपतिस्तार्क्ष्यः प्रियभक्त : परंतपः। दाता दयाकरो दक्षः कपर्दी कामशासनः।12।
श्मशाननिलयः सूक्ष्मः श्मशानस्थो महेश्वरः। लोककर्ता मृगपतिर्महाकर्ता महौषधिः।13।
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः। नीतिः सुनीतिः शुद्धात्मा सोमः सोमरतः सुखी।14।

सोमपोऽमृतपः सौम्यो महातेजा महाद्युतिः। तेजोमयोऽमृतमयोऽन्नमयश्च सुधापतिः।।15।

अजातुशत्रुरालोकः सम्भाव्यो हव्यवाहनः। लोककरो वेदकरः सूत्रकारः सनातनः।।16।

महर्षिकपिलाचार्यो विश्वदीप्तिस्त्रिलोचनः। पिनाकपाणिर्भूदेवः स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्सुधीः।।17।

धातृधामा धामकरः सर्वगः सर्वगोचरः। ब्रह्मसृग्विश्व सृक्सर्गः कर्णिकारप्रियः कविः।।18।

शाखो विशाखो गोशाखः शिवो भिषगनुत्तमः। गंगाप्लवोदको भव्यः पुष्कलः स्थपतिः स्थिरः।।19।

विजितात्मा विधेयात्मा भूतवाहनसारथिः। सगणो गणकायश्च सुकीर्तिश्छिन्न संशयः।20।

कामदेवः कामपालो भस्मोद्धूलितविग्रहः। भस्मप्रियो भस्मशायी कामी कान्तः कृतागमः।21।

समावर्तोऽनिवृत्तात्मा धर्मपुंजः सदाशिवः। अकल्मषश्चतुर्बाहुर्दरावासो दुरासदः।22।

दुर्लभो दुर्गमो दुर्गः सर्वायुधविशारदः। अध्यात्मयोगनिलयः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः।23।

शुभांगो लोकसारंगो जगदीशो जनार्दनः। भस्मशुद्धिकरो मेरूरोजस्वी शुद्धविग्रहः।24।

असाध्यः साधुसाध्यश्च भृत्यमर्कट रूपधृक्। हिरण्यरेताः पौराणो रिपुजीवहरो बली।25।

महाह्रदो महागर्तः सिद्धवृन्दारवन्दितः। व्याघ्रचर्माम्बरो व्याली महाभूतो महानिधिः।26।

अमृताशोऽमृतवपुः पांचजन्यः प्रभंजनः। पंचविंशतितत्त्वस्थः पारिजातः परावरः।27।

सुलभः सुव्रतः शूरो ब्रह्मवेदनिधिर्निधिः। वर्णाश्रमगुरूर्वर्णी शत्रुजिच्छत्रुतापनः।28।

आश्रमः क्षपणः क्षामो ज्ञानवान चलेश्वरः। प्रमाणभूतो दुर्ज्ञेयः सुपर्णो वायुवाहनः।29।

धनुर्धरो धनुर्वेदो गुणराशिर्गुणाकरः। सत्यः सत्यपरोऽदीनो धर्मांगो धर्मसाधनः।30।

अनन्तदृष्टिरान्दो दण्डो दमयिता दमः। अभिवाद्यो महामायो विश्वकर्म विशारदः।31।
वीतरागो विनीतात्मा तपस्वी भूतभावनः। उन्मत्तवेषः प्रच्छन्नो जितकामोऽजितप्रियः।32।
कल्याणप्रकृतिः कल्पः सर्वलोक प्रजापतिः। तरस्वी तारको धीमान् प्रधानः प्रभुरव्ययः।33।
लोकपालोऽन्तर्हितात्मा कल्पादिः कमलेक्षणः। वेदशास्त्रार्थ तत्वज्ञोऽनियमो नियताश्रयः।34।
चन्द्रः सूर्यः शनिः केतुर्वरांगो विद्रुमच्छविः। भक्ति वश्यः परब्रह्म मृगवाणार्पणोऽनघः।35।
अद्रिरद्रयालयः कान्तः परमात्मा जगद्गुरूः। सर्वकर्मालयस्तुष्टो मंगल्यो मंगलावृतः।36।
महातपा दीर्घतपाः स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः। अहःसंवत्सरकरो व्याप्तिः प्रमाणं परमं तापः।37।
संवत्सरकरो मन्त्रप्रत्ययः सर्वदर्शनः। अजः सर्वेश्वरः सिद्धो महारेता महाबलः।38।
योगी योग्यो महातेजाः सिद्धि सर्वादिरग्रहः। वसुर्वसुमनाः सत्यः सर्वपापहरो हरः।39।
सुकीर्तिशोभनः श्रीमान् वेदांगो वेदविन्मुनिः। भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्त । लोकनाथो दुराधरः।40।
अमृतः शाश्वतः शान्तो वाणहस्तः प्रतापवान्। कमण्डलुधरो धन्वी अवाङ्मनसगोचरः।41।
अतीन्द्रियो महामायः सर्वावासश्चतुष्पथः। कालयोगी महानादो महोत्साहो महाबलः।42।
महाबुद्धिर्महावीर्यो भूतचारी पुरंदरः। निशाचरः प्रेतचारी महाशक्ति र्महाद्युतिः।43।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमान् सर्वाचार्यमनोगतिः। बहुश्रुतोऽमहामायो नियतात्मा ध्रुवोऽध्रुवः।44।
ओजस्तेजोद्युतिधरो जनकः सर्वशासनः। नृत्यप्रियो नित्यनृत्यः प्रकाशात्मा प्रकाशकः।45।

स्पष्टाक्षरो बुधो मन्त्रः समानः सारसम्प्लवः। युगादिकृद्युगावर्तो गम्भीरो वृषवाहनः।46।

इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेटः सुलभः सारशोधनः। तीर्थरूपस्तीर्थनामा तीर्थदृश्यस्तु तीर्थदः।47।

अपांनिधिरधिष्ठानं दुर्जयो जयकालवित्। प्रतिष्ठितः प्रमाणज्ञो हिरण्यकवचो हरिः।48।

विमोचनः सुरगणो विद्येशो विन्दुसंश्रयः। बालरूपोऽबलोन्मत्तोऽविकर्ता गहनो गुहः।49।

करणं कारणं कर्ता सर्वबन्धविमोचनः। व्यवसायो व्यवस्थानः स्नादो जगदादिजः।50।

गुरूदो ललितोऽभेदो भावात्माऽऽत्मनि संस्थितः। वीरेश्वरो वीरभद्रो वीरासनविधिर्विराट्।51।

वीरचूडामणिर्वेत्ता चिदानन्दो नदीधरः। आज्ञाधारस्त्रिशूली च शिपिविष्टः शिवालयः।52।

वालखिल्यो महाचापस्तिग्मांशुर्बधिरः खगः। अभिरामः सुशरणः सुब्रह्मण्यः सुधापतिः।53।

मघावान्कौशिकौ गोमान्विरामः सर्वसाधनः। ललाटाक्षो विश्वदेहः सारः संसारचक्रभृत्।54।

अमोघदण्डो मध्यस्थो हिरण्यो ब्रह्मवर्चसी। परमार्थः परो मायी शम्बरो व्याघ्रलोचनः।55।

रूचिर्विरंचिः स्वर्बन्धुर्वाचस्पतिरहर्पतिः। रविर्विरोचनः स्कन्दः शास्ता वैवस्वतो यमः।56।

युक्ति रून्नतकीर्तिश्च सानुरागः परंजयः। कैलासाधिपतिः कान्तः सविता रविलोचनः।57।

विद्वत्तमो वीतभयो विश्वभर्ता निवारितः। नित्यो नियतकल्याणः पुण्यश्रवणकीर्तनः।58।

दूरश्रवा विश्वसहो ध्येयो दुःस्वप्न नाशनः। उत्तारणो दुष्कृतिहा विज्ञेयो दुस्सहोऽभवः।59।

अनादिभूर्भुवो लक्ष्मीः किरीटी त्रिदशाधिपः। विश्वगोप्ता विश्वकर्ता सुवीरो रूचिरांगदः।60।

जननो जनजन्मादिः प्रीतिमान्नीतिमान्धवः। वसिष्ठः कश्यपो भानुर्भीमो भीमपराकर्मः।61।

प्रणवः सत्पथाचारो महाकोशो महाधनः। जन्माधिपो महादेवः सकलागमपारगः।62।
तत्वं तत्वविदेकात्मा विभुर्विश्वविभूषणः। ऋषिर्ब्राह्मण ऐश्वर्यजन्ममृत्युजरातिगः।63।
पंचयज्ञ समुत्पत्तिर्विश्वेशो विमलोदयः। आत्मयोनिरनाद्यन्तो वत्सलो भक्तलोकधृक्।64।
गायत्रीवल्लभः प्रांशुर्विश्वावाशः प्रभाकरः। शिशुर्गिरिरतः सम्राट् सुषेणः सुरशत्रुहा।65।
अमोघोऽरिष्टनेमिश्च कुमुदो विगतज्वरः। स्वयं ज्योतिस्तनुज्योतिरात्म ज्योतिरचंचलः।66।
पिंगलः कपिलश्मश्रुर्भाल नेत्रस्त्रयीतनुः। ज्ञानस्कन्दो महानीतिर्विश्वोत्पत्तिरुपप्लवः।67।
भगो विवस्वानादित्यो योगपारो दिवस्पतिः। कल्याणगुणनामा च पापहा पुण्यदर्शनः।68।
उदाकीर्तिरुद्योगी सद्योगी सदसन्मयः। नक्षत्रमाली नाकेशः स्वाधिष्ठानपदाश्रयः।69।
पवित्रः पापहारी च मणिपूरो नभोगतिः। हृत्पुण्डरीकमासीनः शक्रः शान्तो वृषाकपिः।70।
उष्णो गृहपतिः कृष्णः समर्थोऽनर्थनाशनः। अधर्मशत्रुरज्ञेयः पुरुहूतः पुरुश्रुतः।71।
ब्रह्मगर्भो ब्रहदगर्भो धर्मधेनुर्धनागमः। जगद्धितैषी सुगतः कुमारः कुशलागमः।72।
हिरण्यवर्णो ज्योतिष्मान्नानाभूतरतो ध्वनिः अरागो नयनाध्यक्षो विश्वामित्रो धनेश्वरः।73।
ब्रह्ममज्योतिर्वसुधामा महाज्योतिरनुत्तमः। मातामहो मातरिश्वा नभस्वान्नागहारधृक्74।
पुलस्त्यः पुलहोऽगस्त्यो जातूकर्ण्यः पराशरः। निरावरणनिर्वारो वैरंच्यो विष्टरश्रवाः।75।
आत्मभूर निरुद्धोऽत्रिर्ज्ञान मूर्तिर्महायशाः। लोकवीराग्रणीर्वीरश्चण्डः सत्यपराक्रमः।76।
व्यालाकल्पो महाकल्पः कल्पवृक्षः कलाधरः। अलंकरिष्णुरचलो रोचिष्णुर्विक्रमोन्नतः।77।
आयुः शब्दपतिर्वेगी प्लवनः शिखिसारथिः। असंसृष्टोऽतिथिः शक्रप्रमाथी पादपासनः।78।
वसुश्रवा हव्यवाहः प्रतप्तो विश्वभोजनः। जप्यो जरादिशमनो लोहितात्मा तनूनपात्।79।
बृहदश्वो नभोयोनिः सुप्रतीकस्तमिस्रहा निदाघस्तपनो मेघः स्वक्षः परपुरंजयः।80।

सुखानिलः सुनिष्पन्नः सुरभिः शिशिरात्मकः। वसन्तो माधवो ग्रीष्मो नभस्यो बीजवाहनः।81।

अंगिरा गुरूरात्रेयो विमलो विश्ववाहनः। पावनः सुमितिर्विद्वांस्त्रैविद्यो वरवाहनः।82।

मनोबुद्धिरहंकारः क्षेत्रज्ञः क्षेत्रपालकः। जमदग्निर्बलनिधिर्विगालो विश्वगालवः।83।

अघोरोऽनुत्तरो यज्ञः श्रेष्ठो निःश्रेयसप्रदः। शैलो गगनकुन्दाभो दानवारिररिंदमः।84।

रजनी जनकश्चारूर्निः शल्यो लोकशल्यधृक्। चतुर्वेदश्चतुर्भावश्चतुरश्चतुरप्रियः।85।

आम्नायोऽथ समाम्नायस्तीर्थ देव शिवालयः। बहुरूपो महारूपः सर्वरूपश्चराचरः।86।

न्याय निर्मायको न्यायी न्यायगम्यो निरंजनः। सहस्त्रमूर्द्धा देवेन्द्रः सर्वशस्त्र प्रभंजनः।87।

मुण्डो विरूपो विक्रान्तो दण्डी दान्तो गुणोत्तमः। पिंगलाक्षो जनाध्यक्षो नीलग्रीवो निरामयः।88

सहस्त्रबाहुः सर्वेशः शरण्यः सर्वलोकधृक्। पद्मासनः परं ज्योतिः पारम्पर्य्यफलप्रदः।89।

पद्मगर्भो महागर्भो विश्वगर्भो विचक्षणः। परावरज्ञो वरदो वरेण्यश्च महास्वनः।90।

देवासुर गुरूर्देवो देवासुर नमस्कृतः। देवासुर महामित्रो देवासुर महेश्वरः।91।

देवासुरेश्वरो दिव्यो देवासुरमहाश्रयः। देवदेवमयोऽचिन्त्यो देवदेवात्म सम्भवः।92।

सद्योनिर सुरव्याघ्रो देवसिंहो दिवाकरः। विबुधाग्र चरश्रेष्ठः सर्वदेवोत्त मोत्तमः।93।

शिवज्ञानरतः श्रीमांछिखि श्रीपर्वतप्रियः। वज्रहस्तः सिद्धखड्गो नरसिंहनिपातनः।94।

ब्रह्मचारी लोकचारी धर्मचारी धनाधिपः। नन्दी नन्दीश्वरोऽनन्तो नग्नवृतधरः शुचिः।95।

लिंगाध्यक्षः सुराध्यक्षो योगाध्यक्षो युवावहः। स्वधर्मा स्वर्गतः स्वर्गस्वरः स्वरमयस्वनः।96।

वाणाध्यक्षो बीजकर्ता धर्मकृद्धर्मसम्भवः। दम्भोऽलोभोऽर्थविच्छम्भुः सर्वभूतमहेश्वरः।97।

श्मशाननिलयस्त्रयक्षः सेतुरप्रतिमाकृतिः। लोकोत्तरस्फुटा लोकस्त्रयम्बको नागभूषणः।98।

अन्धकारिर्मखद्वेषी विष्णुकन्धरपातनः। हीनदोशोऽक्षयगुणो दक्षारिः पूषदन्तभित्।99।

धूर्जटिः खण्डपरशुः सकलो निष्कलोऽनघः। अकालः सकलाधारः पाण्डुराभो मृडो नटः।100।

पूर्णः पूरयिता पुण्यः सुकुमारः सुलोचनः। सामगेयप्रियोऽक्रूरः पुण्यकीर्तिरनामयः।101।

मनोजवस्तीर्थकरो जटिलो जीवितेश्वरः। जीवितान्तकरो नित्यो वसुरेता वसुप्रदः।102।

सद्गतिः सत्कृतिः सिद्धि सज्जातिः खलकण्टकः। कलाधरो महाकालभूतः सत्यपरायणः।103।

लोकलावण्यकर्ता च लोकोत्तरसुखालयः। चन्द्रसंजीवनः शास्ता लोकगूढो महाधिपः।104।

लोकबन्धुर्लोकनाथः कृतज्ञः कीर्तिभूषणः। अनपायोक्षरः कान्तः सर्वशस्त्रभृतां वरः।105।

तेजोमयो द्युतिधरो लोकानामग्रणीरणुः। शुचिस्मितः प्रसन्नात्मा दुर्जेयो दुरतिक्रमः।106।

ज्योतिर्मयो जगन्नाथो निराकारो जलेश्वरः। तुम्बवीणो महाकोपो विशोकः शोकनाशनः।107।

त्रिलोकपस्त्रिलोकेशः सर्वशुद्धिरधोक्षजः। अव्यक्त लक्षणो देवो व्यक्ता व्यक्तो विशाम्पतिः।108।

वरशीलो वरगुणः सारो मानधनो मयः। ब्रह्मा विष्णुः प्रजापालो हंसो हंसगतिर्वयः।109।

वेधा विधाता धाता च स्रष्टा हर्ता चतुर्मुखः। कैलासशिखरावासी सर्वावासी सदागतिः।110।

हिरण्यगर्भो द्रुहिणो भूतपालोऽथ भूपतिः। सद्योगी योगविद्योगी वरदो ब्राह्मणप्रियः।111।

देवप्रियो देवनाथो देवज्ञो देवचिन्तकः। विषमाक्षो विशालाक्षो वृषदो वृषवर्धनः।112।

निर्ममो निरहंकारो निर्मोहो निरूपद्रवः। दर्पहा दर्पदो दृप्तः सर्वर्तुपरिवर्तकः।113।

सहस्रजित् सहस्रार्चिः स्निग्धप्रकृतिदक्षिणः। भूतभव्यभवन्नाथः प्रभवो भूतिनाशनः।114।

अर्थोऽनर्थो महाकोशः परकार्यैकपण्डितः। निष्कण्टकः कृतानन्दो निर्व्याजो व्याजमर्दनः।115।

सत्त्ववान्सात्त्विकः सत्यकीर्तिः स्नेहकृतागमः। अकम्पितो गुणग्राही नैकात्मा नैककर्मकृत्।116।

सुप्रीतः सुमुखः सूक्ष्मः सुकरो दक्षिणानिलः। नन्दिस्कन्धधरो धुर्यः प्रकटः प्रीतिवर्धनः।117।

अपराजितः सर्वसत्त्वो गोविन्दः सत्त्ववाहनः। अधृतः स्वधृतः सिद्धः पूतमूर्तिर्यशोधनः।118।

वाराहश्रृंगधृक्छृंगी बलवानेकनायकः। श्रुतिप्रकाशः श्रुतिमानेकबन्धुरनेककृत्।119।

श्रीवत्सलशिवारम्भः शान्तभद्रः समो यशः। भूशयो भूषणो भूतिर्भूतकृद् भूतभावनः।120।

अकम्पो भक्तिकायस्तु कालहा नीललोहितः। सत्यव्रत महात्यागी नित्यशान्तिपरायणः।121।

परार्थवृत्तिर्वरदो विरक्तस्तु विशारदः। शुभदः शुभकर्ता च शुभनामा शुभः स्वयम्।122।

अनर्थितोऽगुणः साक्षी ह्यकर्ता कनकप्रभः। स्वभावभद्रो मध्यस्थः शत्रुघ्नो विघ्ननाशनः।123।

शिखण्डी कवची शूली जटी मुण्डी च कुण्डली।

अमृत्युः सर्वदृक् सिंहस्तेजो राशिर्महामणिः।124।

असंख्येयोऽप्रमेयात्मा वीर्यवान् वीर्यकोविदः।
वैद्यश्चैव वियोगात्मा परावरमुनीश्वरः।125।
अनुत्तमो दुराधर्षो मधुरप्रियदर्शनः।
सुरेशः शरणं सर्वः शब्दब्रह्म सतां गतिः।126।
कालपक्षः कालकालः कंकणीकृतवासुकिः।
महेश्वासो महीभर्ता निष्कलंको विशृंखलः।127।
द्युमणिस्तरणिर्धन्यः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः।
विश्वत संवृतःस्तुत्यो व्यूढोरस्को महाभुजः।128।
सर्वयोनिर्निरातंको नरनारायणप्रियः।
निर्लेपो निष्प्रपंचात्मा निर्व्यंगो व्यंगनाशनः।129।
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोता व्यासमूर्तिर्निरकुशः।
निवद्यमयोपायो विद्याराशी रसप्रियः।130।
प्रशान्तबुद्धिरक्षुण्णः संग्रही नित्यसुन्दरः।
वैयाघ्रधुर्यो धात्रीशः शाकल्यः शर्वरीपतिः।131।
परमार्थगुरूर्दत्तः सूरिराश्रितवत्सलः।
सोमो रसज्ञो रसदः सर्वसत्त्वावलम्बनः।132।

शिवसहस्रनाम स्तोत्र सम्पूण्रम्

शिव के पाँच आवरणों में स्थिति सभी देवताओं की स्तुति
तथा उनसे अभीष्ट पूर्ति एवं मंगल की कामना

उपमन्युरूवाच

स्तोत्रं वक्ष्यामि ते कृष्ण पंचावरणमार्गतः। योगेश्वरमिदं पुण्यं कर्म येन समाप्यते।1।

जय जय जगदेकनाथ शम्भो प्रकृति मनोहर नित्य चित्स्वभाव।

अतिगत कलुष प्रपंचवाचामपि मनसां पदवीमतीत तत्त्वम्2।

स्वभाव निर्मलाभोग जय सुन्दर चेष्टित। स्वात्मतुल्य महाशक्ते जय शुद्ध गुणार्णव।3।

अनन्त कान्ति सम्पन्न जया सदृशविग्रह। अतर्क्य महिमाधार जयानाकुल मंगल।4।

निरंजन निराधार जय निष्कारणोदय। निरंतर परानन्द जय निर्वृत्ति कारण।5।

जयाति परमैश्वर्य जयाति करूणास्पद। जय स्वतंत्र सर्वस्व जया सदृश वैभव।6।

जयावृत महाविश्व जयनावृत केनचित्। जयोत्तर समस्तस्य जयात्यन्त निरूत्तर।7।

जयाद्भुत जयाक्षुद्र जयाक्षत जयाव्यय। जयामेय जयामाय जयाभव जयामल।8।

महाभुज महासार महागुण महाकथ। महाबल महामाय महारस महारथ।9।

नमः परमदेवाय नमः परमहेतवे। नमः शिवाय शान्ताय नमः शिवतराय ते।10।

त्वदधीनमिदं कृत्सनं जगद्धि ससुरासुरम्11।

अतस्त्व द्विहितामाज्ञां क्षमते कोऽतिवर्तितुम्।12।

अयं पुनजनो नित्य भवदेक समाश्रियः। भवानतोऽनुग्रह्यास्मै प्रार्थितम सम्प्रयच्छतु।13।

जयाम्बिके जगन्मातर्जय सर्व जगन्मयि। जयानवधिकैश्वर्ये जयानपम विग्रहे।14।

जय वांगमनसातीते जयाचिद् ध्वान्त भंजिके। जय जन्म जराहीने जय कालोत्तरोत्तरे ।15।

जयानेक विधानस्थे जय विश्वेश्वर प्रिये। जय विश्व सुराराध्ये जय विश्वविजृम्भिणि ।16।

जय मंगल दिव्यांगि जय मंगल दीपिके। जय मंगल चारित्रे जय मंगल दायिनि ।17।

नमः परमकल्याण गुण संचय मूर्तये। त्वत्तः खल समुत्पन्नं जगत्त्वय्येव लीयते ।18।

त्वद्विनातः फलं दातुमीश्वरोऽपि न शक्रुयात। जन्म प्रभृति देवेशि जनोऽयं त्वदुपाश्रितः ।19।

अतोऽस्य तव भक्तस्य निर्वर्तय मनोरथं। पंचवक्त्रो दशभुजः शुद्ध स्फटिक संनिभः ।20।

वर्ण ब्रह्मकलादेहो देवः सकलनिष्कलः। शिवमूर्तिसमारूढः शान्त्यतीतः सदाशिवः।

भक्त्या मयार्चितो मह्यं प्रार्थितं शं प्रयच्छतु ।21।

सदाशिवांकमारूढा शक्तिरिच्छा शिवाह्वया। जननी सर्वलोकानां प्रयच्छतु मनोरथम् ।22।

शिवयोर्दयितौ पुत्रौ देवौ हेरम्बषण्मुखौ। शिवानुभावौ सर्वज्ञौ शिवज्ञानामृताशिनौ ।23।

तृप्तौ परस्परं स्निग्धौ शिवाभ्यां नित्यसत्कृतौ। सत्कृतौ च सदा देवौ ब्रह्माद्यैस्त्रिदशैरपि ।24।

सर्वलोकपरित्राणं कर्तुमभ्युदितौ सदा। स्वेच्छावतारं कुर्वन्तौ स्वांशभेदैरनेकशः ।25।

ताविमौ शिवयोः पार्श्वे नित्यमित्थं मयार्चितौ। तयोराज्ञां पुरस्कृत्य प्रार्थितं मे प्रयच्छताम् ।26।

शुद्धस्फटिक संकाश मीशानाख्यं सदाशिवम्। मूर्द्धाभिमानिनी मूर्तिः शिवस्य परमात्मनः ।27।

शिवार्चनरतं शान्तं शान्त्यतीतं खमास्थितम्। पंचाक्षरान्तिमं बीजं कलाभिः पंचभिर्युतम् ।28।

प्रथमावरणे पूर्वं शक्त्या सह समर्चितम्। पवित्रं परमं ब्रह्म पार्थितं मे प्रयच्छतु ।29।

बालसूर्यप्रतीकाशं पुरूषाख्यं पुरातनम्। पूर्ववक्त्राभिमानं च शिवस्य परमेष्ठिनः ।30।

शान्त्यात्मकं मरूत्संस्थं शम्भोः पादार्चनेरतम्। प्रथमं शिवबीजेषु कलासु च चतुष्कलम्।31।
पूर्वभागे मया भक्त्या शक्त्या सह समर्चितम्। पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।32।
अंजनादि प्रतीकाशमघोरं घोरविग्रहम्। देवस्य दक्षिणं वक्त्रं देव देवपदार्चकम्।33।
विद्यापदं समारूढं वह्निमण्डल मध्यगम। द्वितीयं शिवबीजेषु कलास्वष्टकलान्वितम्।34।
शम्भोर्दक्षिण दिग्भागे शक्त्या सह समर्चितम्। पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।35।
कुंकुमक्षोद संकाशं वामाख्यं वरवेषधृक्। वक्त्रमुत्तरमीशस्य प्रतिष्ठायां प्रतिष्ठितम्।36।
वारिमण्डल मध्यस्थं महादेवार्चने रतम्। तुरीयं शिवबीजेषु त्रयोदशकलान्वितम्।37।
देवस्योत्तरदिग्भागे शक्त्या सह समर्चितम्। पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।38।
शंखकुन्देन्दुधवलं सद्याख्यं सौम्यलक्षणम्। शिवस्य पश्चिमं वक्त्रं शिवपादार्चने रतम्।39।
निवृत्तिपदनिष्ठं च पृथिव्यां समवस्थितम्। तृतीयं शिवबीजेषु कलाभिश्चाष्टभिर्युतम्।40।
देवस्य पश्चिमे भागे शक्त्या सह समर्चितम। पवित्रं परमं ब्रह्म प्रार्थितं मे प्रयच्छतु।41।
शिवस्य तु शिवायाश्च ह्न्मूर्ती शिवभाविते। तयोराज्ञां पुरूस्कृत्य ते मे कामं प्रयच्छताम्।42।
शिवस्य च शिवायाश्च शिखामूर्ती शिवााश्रिते। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।43।
शिवस्य च शिवायाश्च वर्मणा शिवाभाविते। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।44।
शिवस्य च शिवायाश्च नेत्रमूर्ती शिवाश्रिते। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।45।
अस्त्रमूर्ती च शिवयोर्नित्यमर्चनतत्परे। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं प्रयच्छताम्।46।
वामो ज्येष्ठस्तथा रूद्रः कालो विकरणस्तथा। बलो विकरणश्चैव बलप्रमथनः परः।47।

सर्वभूतस्य दमनस्ता दृशाश्चाष्टशक्तयः। प्रार्थितं मे प्रयच्छन्तु शिवयोरेव शासनात्।48।
अथानन्तश्च सूक्ष्मश्च शिवश्चाप्यकनेत्रकः। एकरूद्रस्त्रिमूर्तिश्च श्रीकण्ठश्च शिखण्डिकः।49।
तथाष्टौ शक्तयस्तेषां द्वितीयावरणेऽर्चिताः। ते मे कामं प्रयच्छन्तु शिवयोरेव शासनत्।50।
भवाद्या मूर्तयश्चाष्टो तासमपि च शक्तयः। महादेवादयश्चान्ये तथैकादशमूर्तयः।51।
शक्तिभिः सहिताः सर्वे तृतीयावरणे स्थिताः। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां दिशन्तु फलमीप्सितम्।52।
वृषराजो महातेजा महामेघसमस्वनः। मेरूमन्दर कैलासहिमाद्रिशिखरोपमः।53।
सिताभ्रशिखराकारककुदा परिशोभितः। महाभोगीन्द्रकल्पेन वालेन च विराजितः।54।
रक्तास्यशृंगचरणो रक्तप्रायविलोचनः। पीवरोन्नतसर्वांगः सुचारूगमनोज्जवलः।55।
प्रशस्तलक्षणः श्रीमान् प्रज्वलन्मणिभूषणः। शिवप्रियः शिवासक्तः शिवयोर्ध्वजवाहनः।56।
तथा तच्चरणन्यास पावितापरविग्रहः। गोराजपुरूषः श्रीमान श्रीमच्छूलवरायुधः।
तयोराज्ञां पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु।57।
नन्दीश्वरो महातेजा नगेन्द्रतनयात्मजः। सनारायणकैर्देवैर्नित्यमभ्यर्च्य वन्दितः।58।
शर्वस्यान्तः पुरद्वारि सार्द्ध परिजनैः स्थितः। सर्वेश्वरसमप्रख्यः सर्वासुरविमर्दनः।59।
सर्वेषां शिवधर्माणामध्यक्षत्वेऽभिषेचितः। शिवप्रियः शिवासक्त श्रीमच्छूलवरायुधः।60।
शिवाश्रितेषु संसक्तस्त्वनुरक्तश्च तैरपि। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे कामं प्रयच्छतु।61।
महाकालो महाबाहुर्महादेव इवापरः। महादेवश्रितानां तु नित्यमेवाभिरक्षतु।62।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवयोरर्चकः सदा। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम्।63।
सर्वशास्त्रार्थ तत्वज्ञः शास्ता विष्णोः परा तनुः। महामोहात्मतनयो मधुमांसासवप्रियः।
तयोराज्ञा पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु।64।

ब्राह्मणी चैव माहेशी कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही चैव माहेन्द्री चामुण्डा चण्डविक्रमा ।65।

एता वै मातरः सप्त सर्वलोकस्य मातरः। प्रार्थितं मे प्रयच्छन्तु परमेश्वरशासनात् ।66।

मत्तमातंगवदनो गंगोमाशंकरात्मजः। आकाशदेहो दिग्बाहुः सोमसूर्याग्निलोचनः ।67।

ऐरावतादिभिर्दिव्यैर्दिग्गजैर्नित्यमर्चितः। शिवज्ञानमदोद्भिन्नस्त्रिदशानामविघ्नकृत् ।68।

विघ्नकृच्चासुरादीनां विघ्नेशः शिवभावितः। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम् ।69।

षण्मुखः शिवसम्भूतः शक्तिवज्रधरः प्रभुः। अग्नेश्च तनयो देवो ह्यपर्णातनयः पुनः ।70।

गंगायाश्च गणाम्बायाः कृत्तिकानां तथैव च। विशाखेन च शाखेन नैगमेयेन चावृतः ।71।

इन्द्रजिच्चेन्द्र सेनानीस्तारकासुरजित्तथा। शैलानां मेरुमुख्यानां वेधकश्च स्वतेजसा ।72।

तप्तचामीकरप्रख्यः शतपत्रदलेक्षणः। कुमारः सुकुमाराणां रूपोदाहरणं महात् ।73।

शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चकः सदा। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम् ।74।

ज्येष्ठा वरिष्ठा वरदा शिवयोर्यजने रता। तयोराज्ञां पुरस्कृत्य सा मे दिशतु कांक्षितम् ।75।

त्रैलोक्य वन्दिता साक्षादुल्काकारा गणाम्बिका। जगत्सृष्टिविवृद्ध्यर्थं ब्रह्मणाभ्यर्थिता शिवात् ।76।

शिवायाः प्रविभक्ताया भ्रुवोरन्तरनिस्सृता। दाक्षायणी सती मेना तथा हेमवती ह्युमा ।77।

कौशिक्याश्चैव जननी भद्रकाल्यास्तथैव च। अपर्णायाश्च जननी पाटलायास्तथैव च ।78।

शिवार्चनरता नित्य रूद्राणी रूद्रवल्लभा। सत्कृत्यं शिवयोराज्ञां सा मे दिशतु कांक्षितम् ।79।

चण्डः सर्वगणेशानः शम्भोर्वदनसम्भवः। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु कांक्षितम् ।80।

पिंगलो गणपः श्रीमान् शिवासक्तः शिवप्रियः। आज्ञया शिवयोरेव स मे कामं प्रयच्छतु ।81।

भृंगीशो नाम गणपः शिवाराधनतत्परः। प्रयच्छतु स मे कामं पत्युराज्ञापुरस्सरम् ।82।

वीरभद्रो महातेजा हिमकुन्देन्दुसंनिभः। भद्रकालीप्रियो नित्यम मातृणां चाभिरक्षिता ।83।

यज्ञस्य च शिरोहर्ता दक्षस्य च दुरात्मनः। उपेन्द्रेन्द्रयमादीनां देवानामंगतक्षकः।84।
शिवस्यानुचरः श्रीमान् शिवशासनपालकः। शिवयोः शासनादेव स मे दिशतु कांक्षितम्।85।
सरस्वती महेशस्य वाक्सरोजसमुद्भवा। शिवयोः पूजने सक्ता सा मे दिशतु कांक्षितम्।86।
विष्णोर्वक्षः स्थिता लक्ष्मीः शिवयो पूजने रता। शिवयोः शासनादेव सा मे दिशतु कांक्षितम्।87।
महामोटी महादेव्याः पादपूजारायणा। तस्या एव नियोगेन सा मे दिशतु कांक्षितम्।88।
कौशिकी सिंहमारूढा पार्वत्याः परमा सुता। विष्णोर्निद्रा महामाया महामहिषमर्दिनी।89।
निशुम्भशुम्भ संहर्त्री मधुमांसासवप्रिया। सत्कृत्य शासनं मातुः सा मे दिशतु कांक्षितम्।90।
रूद्रा रूद्रसमप्रख्याः प्रमथाः प्रथितौजसः। भूताख्याश्च महावीर्या महादेवसमप्रभाः।91।
नित्यमुक्ता निरूपमा निर्द्वन्दा निरूपप्लवाः। सशक्तयः सानुचराः सर्वलोकनमस्कृताः।92।
सर्वेषामेव लोकानां सृष्टिसंहरणक्षमाः। परस्परानुरक्ताश्च परस्परमनुव्रता।93।
परस्परमतिस्निग्धाः परस्परनमस्कृताः। शिवप्रियतमा नित्यं शिवलक्षणलक्षिताः।94।
सौम्या घोरास्तथा मिश्राश्चान्तरालद्वयात्मिकाः। विरूपाश्च सुरूपाश्च नानारूपधरास्तथा।95।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां ते मे कामं दिशन्तु वै। देव्याः प्रियसखीवर्गो देवीलक्षणलक्षितः।96।
सहितो रूद्रकन्याभिः शक्तिभिश्चाप्यनेकशः। तृतीयावरणे शम्भोर्भक्त्या नित्यं समर्चितः।97।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मंगलम्। दिवाकरो महेशस्य मूर्तिर्दीप्तसुमण्डलः।98।
अविकारात्मकश्चाद्यः एकः सामान्यविक्रयः।99।
असाधारण कर्मा च सृष्टिस्थितिलयकमात्। एवं त्रिधा चतुर्द्धा च विभक्तः पंचधा पुनः।100।
चतुर्थावरणे शम्भोः पूजितश्चानुगैः सह। शिवप्रयः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः।101।
सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मंगलम्। दिवाकरषडंगानि दीप्ताद्याश्चाष्टशक्तयः।102।
आदित्यो भास्करो भानू रविश्चेत्यनुपूर्वशः। अर्को ब्रह्मा तथा रूद्रो विष्णुश्चादित्यमूर्तयः।103।

ऊषा प्रभा तथा प्राज्ञा संध्या चेत्यपि शक्तय।104।

सोमादिकेतु पर्यन्ता ग्रहाश्च शिवभाविताः। शिवयोराज्ञया नुन्ना मंगलं प्रदिशन्तु मे ।105।

अथ वा द्वादशादित्यास्तथा द्वादश शक्तयः। ऋषयो देवगन्धर्वाः पन्नगाप्सरसां गणाः।106।

ग्रामण्यश्च तथा यक्षा राक्षसाश्च सुरास्तथा। सप्त सप्तगणाश्चैते सप्तच्छन्दोमया हयाः।107।

वालखिल्यादयश्चैव सर्वे शिवपदार्चकाः। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे।108।

ब्रह्माथ देवदेवस्य मूर्तिर्भूमण्डलाधिपः। चतुःषष्टिगुणैश्वर्यो बुद्धितत्त्वे प्रतिष्ठितः।109।

निर्गुणो गुणसंकीर्णस्तथैव गुणकेवलः। अविकारात्मको देवस्ततः साधारणः पुरः।110।

असाधरणकर्मा च सृष्टिस्थितिलयक्रमात्। एवं त्रिधा चतुर्द्धा च विभक्तः पंचधा पुनः।111।

चतुर्थावरणे शम्भोः पूजितश्च सहानुगैः। शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः।112।

सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मंगल्। हिरण्यगर्भो लोकेशो विराट् कालश्च पुरुषः।113।

सनत्कुमारः सनकः सनन्दश्च सनातनः। प्रजानां पतयश्चैव दक्षाद्या ब्रह्मसूनवः।114।

एकादश सपत्नीका धर्मः संकल्प एव च। शिवार्चनरताश्चैते शिवभक्तिपरायणाः।115।

शिवाज्ञावगशगाः सर्वे दिशन्तु मम् मंगलम्। चत्वारश्च तथा वेदाः सेतिहासपुराणकाः।116।

धर्मशास्त्राणि विद्याभिर्वैदिकीभिः समन्विताः। परस्पराविरुद्धार्थाः शिवप्रकृतिपादकाः।117।

सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे। अथ रूद्रो महादेवः शम्भोमूर्तिर्गरीयसी।118।

वाह्नेयमण्डलाधीशः पौरुषेश्वर्यवान् प्रभुः। शिवाभिमानसम्पन्नो निर्गुणस्त्रिगुणात्मक।119।

केवलं सात्त्विकश्चापि राजसश्चैव तामसः। अविकाररतः पूर्वं ततस्तु समविक्रयः।120।

असाधाणकर्मा च सृष्टयादिकरणात्प्रथक्। ब्रह्मणोऽपि शिरश्छेता जनकस्तस्य तत्सुतः।121।

जनकस्तनयश्चापि विष्णोरपि नियामकः। बोधकश्च तयोर्नित्यमनुग्रहकरः प्रभुः।122।

अण्डस्यान्तबहिर्वर्ती रूद्रो लोकद्वयाधिपः। शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः।123।

शिवयोस्थज्ञां पुरस्कृत्य स मे दिशतु मंगलम्। तस्य ब्रह्म षडंगानि विद्येशानां तथाष्टकम्।124।

चत्वारो मूर्तिभेदाश्च शिवपूर्वाः शिवार्चकाः। शिवो भवो हरश्चैव मृडश्चैव तथापरः।
शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य मंगलं प्रदिशन्तु मे।125।
अथ विष्णुर्महेशस्य शिवस्यैव परा तनुः। वारितत्त्वाधिपः साक्षादव्यक्त पदसंस्थितः।126।
निर्गुणः सत्त्वबहुलस्तथैव गुणकेवलः। अविकाराभिमानी च त्रिसाधारणविक्रयः।127।
असाधारणकर्मा च सृष्टयादिकरणात्पृथक्। दक्षिणांगभवेनापि स्पर्धमानः स्वयम्भुवा।128।
आद्येन ब्रह्मणा साक्षात्सृष्टः स्रष्टा च तस्य तु। अण्डस्यान्तर्बहिर्वर्ती विष्णुर्लोकद्वयाधिपः।129।
असुरान्तकश्चक्री शक्रस्यापि तथानुजः। प्रादुर्भूतश्च दशधा भृगुशापच्छलादिह।130।
भूभार निग्रहार्थाय स्वच्छयावातरत् क्षितौ। अप्रमेयबलो मायी मायया मोहयंजगत्।131।
मूर्तिं कृत्वा महाविष्णुं सदाविष्णुमथापि वा। वैष्णवैः पूजितो नित्यं मूर्तित्रयमयासने।132।
शिवप्रियः शिवासक्तः शिवपादार्चने रतः। शिवस्याज्ञां पुरस्कृत्य समे दिशतु मंगलं मे।133।
वासुदेवोऽनिरूद्धश्च प्रद्युम्नश्च ततः परः। संकर्षणः समाख्याताश्चतस्त्रो मूर्तयो हरेः।134।
मत्स्यः कूर्मो वराहश्च नारसिंहोऽथ वामनः। रामत्रयं तथा कृष्णो विष्णुस्तुरगवक्त्रकः।135।
चक्रं नारायणस्यास्त्रं पांचजन्यं च शांर्गकाम्। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे।136।
प्रभा सरस्वती गौरी लक्ष्मीश्च शिवभाविता। शिवयोः शासनादेता मंगलं प्रदिशन्तु मे।137।
इन्द्रोऽग्निश्च यमश्चैव निर्ऋतिर्वरूणस्तथा। वायुः सोमः कुबेरश्चतथेशानस्त्रिशूलधृक।138।
सर्वे शिवार्चनरताः शिवसद्भावभाविताः। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां मंगलं प्रदिशन्तु मे।139।
त्रिशूलमथ वज्रं च तथा परशुसायकौ। खड्गपाशांकुशाश्चैव पिनाकश्चायुधोत्तमः।140।
दिव्यायुधानि देवस्य देव्याश्चैतानि नित्यशः। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां रक्षां कुर्वन्तु मे।141।
वृषरूपधरो देवः सौरभेयो महाबलः। वडवाख्यानलस्पर्द्धी पंचगोमातृभिर्वृतः।142।
वाहनत्वमनुप्राप्तस्तपसा परमेशयोः। तयोराज्ञां पुरस्कृत्य स मे कामं प्रयच्छतु।143।
नन्दा सुनन्दा सुरभिः सुशीला सुमस्तथा। पंच गोमातरस्वेताः शिवलोके व्यवस्थिताः।144।

शिवभक्तिपरा नित्यं शिवार्चनपरायणाः। शिवयोः शासनादेव दिशन्तु मम् वाञ्छितम्।145।
क्षेत्रपालो महातेजा नीलजीमूतसंनिभः। द्रंष्ट्राकरालवदनः स्फुरद्रक्ताधरोज्ज्वलः।146।
रक्तोर्ध्वमूर्द्धजः श्रीमान् भ्रुकुटीकुटिलेक्षणः। रक्तवृत्तत्रिनयनः शशिपन्नगभूषणः।147।
नग्नस्त्रिशूलपाशासिकपालोद्यतपाणिकः। भैरवो भैरवैः सिद्धैर्योगिनीभिश्च संवृतः।148।
क्षेत्रे क्षेत्रसमासीनः स्थितो यो स्थितो यो रक्षकः सताम्। शिवप्रणामपरमः शिवसद्भावभावितः।149।
शिवाश्रितान् विशेषेण रक्षन् पुत्रानिवौरसान्। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां स मे दिशतु मंगलम्।150।
तालजंघादयस्तस्य प्रथमावरणेऽर्चिताः। सत्कृत्य शिवयोराज्ञां चत्वारः समवन्तु माम्।151।
भैरवद्याश्च ये चान्ये समन्तात्तस्य वेष्टिताः। तेऽपि मामनुगृहणन्तु शिवशासनगौरवात्।152।
नारदाद्याश्च मुनयो दिव्या देवैश्च पूजिताः। साध्या नागाश्च ये देवा जनलोकनिवासिनः।153।
विनिर्वृत्ताधिकाराश्च महर्लोकनिवासिनः। सप्तर्षयस्तथान्ये वै वैमानिकगणैः सह।154।
सर्वे शिवार्चनरताः शिवाज्ञावशवर्तिनः। शिवयोराज्ञया मह्यं दिशन्तु समकांक्षितम्।155।
गन्धर्वाद्याः पिशाचान्ताातस्त्रो देवयोनयः। सिद्धा विद्याद्याश्च येऽपि चान्ये नभश्चराः।156।
असुरा राक्षसाश्चैव पातालतलवासिनः। अनन्ताद्याश्च नागेन्द्रा वैनतेयादयो द्विजाः।157।
कूष्माण्डाः प्रेतवेताला ग्रहा भूतगणाः परे। डाकिन्यश्चापि योगिन्यः शाकिन्यश्चापि तादृशाः।158।
क्षेत्रारामगृहादीनि तीर्थान्यायतनानि च। द्वीपाः समुद्रा नद्यश्च नदाश्चान्ये सरांसि च।159।
गिरयश्च सुमेर्वाद्याः काननानि समन्ततः। पशवः पक्षिणो वृक्षाः कृमिकीटादयो मृगाः।160।
भुवनान्यपि सर्वाणि भुवनानामधीश्वराः। अण्डान्यावरणैः सार्द्धं मासाश्च दश दिग्गजाः।161।
वर्णाः पदानि मन्त्राश्च तत्त्वान्यपि सहाधिपैः ब्रह्माण्डधारका रूद्रा रूद्राश्चान्ये सशक्तिकाः।162।
यच्च किंचिज्जगत्यस्मिन्दृष्टिं चानुमितं श्रुतम्। सर्वे कामं प्रयच्छन्तु शिवयोरेव शासनात्।163।
अथ विद्या परा शैवी पशुपाश विमोचिनी। पंचार्थ संहिता दिव्या पशु विद्या बहिष्कृता।164।
शास्त्रं च शिव धर्माख्यं धर्माख्यं च तदुन्तरम। शैवारव्यं शिव धर्माख्यं पुराणं श्रुति सम्मितम्।165।

शैवागमाश्च ये चान्ये कामिकाद्याश्चतुर्विधाः। शिवाभ्याम विशेषेण उत्कृत्येह समर्चिता।166।

ताभ्यामेव समाज्ञाता ममाभिप्रेत सिद्धये। कर्मेद मनु मन्यन्तां सफलं साध्वनुष्ठितम्।167।

श्वेताद्या नकुलीशान्ताः सशिष्याश्चापि देशिकाः। तत्संततीया गुरवो विशेषाद् गुरवो मम्।168।

शैवा माहेश्वराश्चैव ज्ञानकर्मपरायणाः। कर्मेदमनुमन्यन्तां सफलं साध्वनुष्ठितम्।169।

लौकिका ब्राह्मणाः सर्वे क्षत्रियाश्च विशः क्रमात्। वेदवेदांगतत्त्वज्ञाः सर्वशास्त्रविशारदाः।170।

सांख्या वैशेषिकाश्चैव यौगा नैयायिका नराः। सौरा ब्राह्मास्तथा रौद्रा वैष्णवाश्चापरे नराः।171।

शिष्टाः सर्वे विशिष्टाश्च शिवशासनयन्त्रिताः। कर्मेदमनुमन्यन्तां ममाभिप्रेतसाधकम्।172।

शैवाः सिद्धान्तमार्गस्थाः शैवाः पाशुपतास्तथा। शैवा महाव्रतधराः शैवाः कापालिकाः परे।173।

शिवाज्ञापालकाः पूज्या ममामि शिवशासनात्। सर्वे मामनुग्रहणन्तु शंसन्तु सफलक्रियाम्।174।

दक्षिणज्ञाननिष्ठाश्च दक्षिणोत्तरमार्गगाः। अविरोधेन वर्तन्तां मन्त्रं श्रेयोऽर्थिनो मम्।175।

नास्तिकाश्चै शठाश्चैव कृतघ्नाश्चैव तामसाः। पाषण्डाश्चातिपापाश्च वर्तन्तां दूरतो मम्।176।

बहुभिः किं स्तुतैरत्र येऽपि केऽपि चिदास्तिकाः। सर्वे मामनुग्रहणन्तु सन्तः शंसन्तु मंगलम्।177।

नमः शिवाय साम्बाय ससुतायादिहेतवे। पंचावरणरूपेण प्रपंचेनावृताय ते।178।

इत्युक्त्वा दण्डवद् भूमौ प्रणिपत्य शिवं शिवाम्। जपेत्पंचाक्षरीं विद्यामष्टोत्तरशतावराम्।179।

तथैव शक्तिविद्यां च जपित्वा तत्समर्पणम्। कृत्वा तं क्षमयित्वेशं पूजाशेषं समापयेत्।180।

एतत्पुण्यतमं स्तोत्रं शिवयोर्हृदयंगमम्। सर्वाभीष्टप्रदं साक्षाद्भक्तिमुक्त्येक साधनम्।181।

य इदं कीर्तयेन्नित्यं ऋणुयाद्वा समाहितः। स विधूयाशु पापानि शिवसायुज्यमाप्नुयात्।182।

गोघ्नश्चैव कृतघ्नश्च वीरहा भ्रूणहापि वा। शरणागतघाती च मित्रविश्रम्भघातकः।183।

दुष्टपापसमाचारो मातृहा पितृहापि वा। स्तवेनानेन जप्तेन तत्तत्पापात् प्रमुच्यते।184।

दुःस्वप्नादिमहानर्थसूचकेषु भयेषु च। यदि संकीर्तयेदेतन्न ततोऽनर्थभागभवेत्।185।

आयुरारोग्यमैश्वर्यं यच्चान्यदपि वाञ्छितम्। स्तोत्रस्यास्य जपे तिष्ठंस्तत्सर्वं लभते नरः।186।

असम्पूज्य शिवं स्तोत्रजपात्फलमुदाहृतम्। सम्पूज्य च जपे तस्य फलं वक्तुं न शक्यते।187।

आस्तामियं फलावाप्तिरस्मिन् संकीर्तिते सति। सार्द्धमम्बिकया देवः श्रुत्वैव दिवि तिष्ठति।188।

तस्मान्नभसि सम्पूज्य देवदेवं सहोमया। कृताजंलिपुटस्तिष्ठन् स्तोत्रमेतदुदीरयेत्।189।

! सम्पूर्णम् !

इसके पाठ करने के फल की प्राप्ति अलग रहे इस स्तोत्र का कीर्तन करने पर इसे सुनते ही माता पार्वती सहित महादेवजी आकाश में आकर खड़े हो जाते हैं। अतः उस समय उमासहित महादेव की आकाश में पूजा करके दोनों हाथ जोड़ खड़ा हो जाय और इस स्तोत्र का पाठ करें।

शिव मानस पूजा

रत्नैः कल्पितमासनं हिमजलैः स्नानं च दिव्याम्बरं। नानारत्नविभूषितं मृगमदामोदांकितं चन्दनम्।

जातीचम्पकबिल्वपत्ररचितं पुष्पं च धूपं तथा दीपं देव दयानिधे पशुपते हृत्कलिपतं गृह्यताम्।1।

सौवर्णे नवरत्नखण्डरचिते पात्रे घृतं पायसं भक्ष्यं पंचविधि पयोदधियुतं रम्भाफलं पानकम्।

शाकानामयुतं जलं रूचिकरं कर्पूरखण्डोज्ज्वलं ताम्बूलं मनसा मया विरचितं भक्त्या प्रभो स्वीकुरू।2।

छत्रं चामरयोर्युगं व्यजनकं चादर्शकं निर्मलं वीणाभेरिमृदंगकाहलकला गीतं च नृत्यं तथा।

साष्टांग प्रणतिः स्तुतिर्बहुविधा ह्येतत्समस्तं मया संकल्पेन समर्पितं तव विभो पूजां गृहाण प्रभो।3।

आत्मा त्वं गिरिजा मतिः सहचराः प्राणाः शरीरं गृहं। पूजा ते विषयोपभोग रचना निद्रा समाधि स्थितिः।।

संचारः पदयोः प्रदक्षिण विधिः स्तोत्राणि सर्वा गिरो। यद्यत्कर्म करोमि तत्तदखिलं शम्भो तवाराधनम्।4।

करचरणकृतं वाक्कायजं कर्मजं वा श्रवणनयनजं वा मानसं वापराधम्।

विहितमविहितं वा सर्वमेतत् क्षमस्व जय जय करूणाब्धे श्री महादेव शम्भो।5।

नित्य महामृत्युंजय हवन : सं0 2066 ज्येष्ठ मास शुल्क पक्ष दशमी 2 जून 2009 मंगलवार से शुरू हुआ जो अनवरत है।

रूद्राभिषेक एवं महामृत्युंजय हवन :
सं0 2066 श्रावण मास कृष्ण पक्ष चतुर्दशी मासशिवरात्रि '20 जुलाई 2009 सोमवार' को रूद्राभिषेक, महामृत्युंजय हवन, कीर्तन एवं सत्संग शुरू किया गया जो अनवरत है।

12 फरवरी 2010 महाशिवरात्रि (शुक्रवार)
सिद्धबाबा द्वारा 11 लीटर गौ दुग्ध द्वारा रूद्राभिषेक, महामृत्यंजय हवन, अखण्ड रामायण पाठ, रात्रि चार पहर अनुष्ठान, शाम 6 बजे 11 लीटर गाय दूध से रूद्राभिषेक, शाम 9 बजे 11 लीटर दही द्वारा रूद्राभिषेक, रात्रि 12 बजे शहद द्वारा रूद्राभिषेक एवं रात्रि 3 बजे 11 लीटर गन्ना रस द्वारा रूद्राभिषेक

13 फरवरी 2010 – अखण्ड रामायण पाठ का सभी शिव भक्तों द्वारा हवन, भण्डारा, सिद्धबाबा द्वारा श्रावण मास में पुनः मिलन की प्रार्थना, विर्सजन।

निष्काम महामृत्युंजय यज्ञ : 7 अगस्त 2010 (श्रावण मास)
विभिन्न राज्यो से आये हुये शिव भक्तों का समागम,कीर्तन, सत्संग एवं 'महामृत्युंजय अनुष्ठान' के दौरान हुए अनुभवों की चर्चा।

8 से 10 अगस्त 2010 :

रुद्राभिषेक, महामृत्युंजय यज्ञ, कीर्तन, सत्संग और ध्यान साधना का आयोजन हुआ एवं रूद्राभिषेक (रूद्री) नामक पुस्तक भक्तों एवं साधकों में वितरित की गई ।

03 मार्च 2011 महाशिवरात्रि (गुरूवार)

सिद्धबाबा द्वारा 11 लीटर गौ दुग्ध द्वारा रूद्राभिषेक, महामृत्यंजय हवन, अखण्ड रामायण पाठ, रात्रि चार पहर अनुष्ठान, शाम 6 बजे 11 लीटर गाय दूध से रूद्राभिषेक, शाम 9 बजे 11 लीटर दही द्वारा रूद्राभिषेक, रात्रि 12 बजे शहद द्वारा रूद्राभिषेक एवं रात्रि 3 बजे 11 लीटर गन्ना रस द्वारा रूद्राभिषेक

04 मार्च 2011 – अखण्ड रामायण पाठ का सभी शिव भक्तों द्वारा हवन, भण्डारा, सिद्धबाबा द्वारा श्रावण मास में पुनः मिलन की प्रार्थना, विर्सजन।

28–7–2011 (श्रावण मास) :

विभिन्न राज्यों से आये हुए शिव साधको का समागम, कीर्तन, सत्संग एवं शिव साधकों को महामृत्युंजय अनुष्ठान, महामृत्युंजय मंत्र जप के दौरान हुए अनभवों की चर्चा

29–7–2011 :

ग्यारह ब्राह्मणों द्वारा 101 लीटर दूध से एकादशिनी रूद्राभिषेक एवं शिव साधकों द्वारा पूर्व में किये गये 'महामृत्युंजय अनुष्ठान' का दशाँस हवन

20 फरवरी 2012 महाशिवरात्रि (सोमवार)

सिद्धबाबा द्वारा 11 लीटर गौ दुग्ध द्वारा रूद्राभिषेक, महामृत्यंजय हवन, अखण्ड रामायण पाठ, रात्रि चार पहर अनुष्ठान, शाम 6 बजे 11 लीटर गाय दूध से रूद्राभिषेक, शाम 9 बजे 11 लीटर दही द्वारा रूद्राभिषेक, रात्रि 12 बजे शहद द्वारा रूद्राभिषेक एवं रात्रि 3 बजे 11 लीटर गन्ना रस द्वारा रूद्राभिषेक

21 फरवरी 2012 – अखण्ड रामायण पाठ का सभी शिव भक्तों द्वारा हवन, भण्डारा, सिद्धबाबा द्वारा श्रावण मास में पुनः मिलन की प्रार्थना, विर्सजन।

-: संचालित कार्यक्रम :-

(14,15,16,17, जुलाई 2012, श्रावण मास)

14-7-2012 : विभिन्न राज्यों से आये हुए शिव भक्तो का समागम, कीर्तन, सत्संग एवं शिव भक्तों को महामृत्युंजय अनुष्ठान, महामृत्युंजय मंत्र जप के दौरान हुए अनुभवो की चर्चा

15,16-7-2012 : शिव भक्तो द्वारा 15-07-2012 को 'महामृत्युंजय अनुष्ठान' (सवा लाख मंत्र जप) का सामूहिक संकल्प, ग्यारह ब्राह्मणों द्वारा 15-07-2012 को गंगा जल (330 लीटर), 16-07-2012 को यमुना जल (330 लीटर) द्वारा एकादशिनी रूद्राभिषेक, महामृत्युंजय मंत्र जप, शिव साधको द्वारा पूर्व में किये गये 'महामृत्युंजय अनुष्ठान' के दशाँस हवन ।

17-7-2012 : ग्यारह ब्राह्मणों द्वारा 141 लीटर गौ दुग्ध से एकादशिनी रूद्राभिषेक, एवं शिव साधकों द्वारा 15-07-2012 को लिए गये संकल्प (महामृत्युंजय अनुष्ठान) का दशांस हवन

18-07-2012 : सिद्ध बाबा द्वारा संकल्पित 20-07-2009 श्रावण मास से प्रत्येक मास शिवरात्रि को शुरू किये गये रूद्राभिषेक, महामृत्युंजय हवन, कीर्तन, सत्संग के तीन साल पूर्ण होने पर उपरोक्त कार्यक्रम की पूर्णाहूति की गयी तथा निर्णय लिया गया कि प्रत्येक वर्ष के श्रावण मास में सभी साधको के सहयोग से रूद्राभिषेक, महामृत्युंजय अनुष्ठान, कीर्तन, सत्संग का आयोजन किया जायेगा।

10 मार्च 2013 महाशिवरात्रि (रविवार)
सिद्धबाबा द्वारा 11 लीटर गौ दुग्ध द्वारा रूद्राभिषेक, महामृत्यंजय हवन, अखण्ड रामायण पाठ, रात्रि चार पहर अनुष्ठान, शाम 6 बजे 11 लीटर गाय दूध से रूद्राभिषेक, शाम 9 बजे 11 लीटर दही द्वारा रूद्राभिषेक, रात्रि 12 बजे शहद द्वारा रूद्राभिषेक एवं रात्रि 3 बजे 11 लीटर गन्ना रस द्वारा रूद्राभिषेक
11 मार्च 2013 - अखण्ड रामायण पाठ का सभी शिव भक्तों द्वारा हवन, भण्डारा, सिद्धबाबा द्वारा श्रावण मास में पुनः मिलन की प्रार्थना, विर्सजन।

महामृत्युंजय अनुष्ठान

02, 03, 04, 05 अगस्त 2013 (श्रावण मास)
02-8-2013 विभिन्न राज्यों से आये हुए शिव भक्तो का समागम, कीर्तन, सत्संग एवं शिव भक्तों को महामृत्युंजय अनुष्ठान, महामृत्युंजय मंत्र जप के दौरान हुए अनुभवो की चर्चा

-: संचालित कार्यक्रम :-

27 फरवरी 2014 महाशिवरात्रि (गुरूवार)

सिद्धबाबा द्वारा 11 लीटर गौ दुग्ध द्वारा रूद्राभिषेक, महामृत्यंजय हवन, अखण्ड रामायण पाठ, रात्रि चार पहर अनुष्ठान, शाम 6 बजे 11 लीटर गाय दूध से रूद्राभिषेक, शाम 9 बजे 11 लीटर दही द्वारा रूद्राभिषेक, रात्रि 12 बजे शहद द्वारा रूद्राभिषेक एवं रात्रि 3 बजे 11 लीटर गन्ना रस द्वारा रूद्राभिषेक

21 फरवरी 2012 – अखण्ड रामायण पाठ का सभी शिव भक्तों द्वारा हवन, भण्डारा, सिद्धबाबा द्वारा श्रावण मास में पुनः मिलन की प्रार्थना, विर्सजन।

28 फरवरी 2014 – अखण्ड रामायण पाठ का सभी शिव भक्तों द्वारा हवन, भण्डारा, सिद्धबाबा द्वारा श्रावण मास में पुनः मिलन की प्रार्थना, विर्सजन।

22, 23, 24, 25 जुलाई 2014 (श्रावण मास)

22-7-2014 विभिन्न राज्यों से आये हुए शिव भक्तो का समागम, कीर्तन, सत्संग एवं शिव भक्तों को महामृत्युंजय अनुष्ठान, महामृत्युंजय मंत्र जप के दौरान हुए अनुभवो की चर्चा

23-7-2014

परमश्रेद्धय पंडित जी श्री कान्ति प्रसाद शर्मा जी, सिद्धबाबा एवं श्री राधामोहन शर्मा जी के सानिध्य में ग्यारह ब्राह्मणों द्वारा 351 लीटर गंगाजल से श्री सिद्धेश्वर महादेव जी का एकादशिनी रूद्राभिषेक किया गया। तथा सभी साधकों द्वारा सिद्धबाबा के मार्गदर्शन में महामृत्युजंय हवन हुआ जिसमें विल्वपत्रों की आहूति दी गई।

शाम को आरती के बाद शिव साधकों को महामृत्यंजय अनुष्ठान के दौरान हुये अनुभवों की चर्चा हुयी एवं परमपूज्य गुरुदेव द्वारा साधकों की जिज्ञासा/प्रश्नों/समस्यों का समाधान बताया गया।

24-7-2014

परमश्रेद्धय पंडित जी श्री कान्ति प्रसाद शर्मा जी, सिद्धबाबा एवं श्री राधामोहन शर्मा जी के सानिध्य में ग्यारह ब्राह्मणों द्वारा 351 लीटर गंगाजल से श्री सिद्धेश्वर महादेव जी का एकादशिनी रूद्राभिषेक किया गया। तथा सभी साधकों द्वारा सिद्धबाबा के मार्गदर्शन में महामृत्युजंय हवन हुआ जिसमें प्रज्वलित कपूर की आहूति दी गई।

शाम को आरती के बाद शिव साधकों को महामृत्यंजय अनुष्ठान के दौरान हुये अनुभवों की चर्चा हुयी एवं परमपूज्य गुरुदेव द्वारा साधकों की जिज्ञासा/प्रश्नों/समस्यों का समाधान बताया गया।

25-7-2014

परमश्रेद्धय पंडित जी श्री कान्ति प्रसाद शर्मा जी, सिद्धबाबा एवं श्री राधामोहन शर्मा जी के सानिध्य में ग्यारह ब्राह्मणों द्वारा 351 लीटर गंगाजल से श्री सिद्धेश्वर महादेव जी का एकादशिनी रूद्राभिषेक किया गया। तथा सभी साधकों द्वारा सिद्धबाबा के मार्गदर्शन में महामृत्युजंय हवन हुआ जिसमें जायफल की आहूति दी गई।

शाम को आरती के बाद शिव साधकों को महामृत्यंजय अनुष्ठान के दौरान हुये अनुभवों की चर्चा हुयी एवं परमपूज्य गुरूदेव द्वारा साधकों की जिज्ञासा/प्रश्नों/समस्यों का समाधान बताया गया।

17 फरवरी 2015 महाशिवरात्रि (मंगलवार)

सिद्धबाबा द्वारा 11 लीटर गौ दुग्ध द्वारा रूद्राभिषेक, महामृत्यंजय हवन, अखण्ड रामायण पाठ, रात्रि चार पहर अनुष्ठान, शाम 6 बजे 11 लीटर गाय दूध से रूद्राभिषेक, शाम 9 बजे 11 लीटर दही द्वारा रूद्राभिषेक, रात्रि 12 बजे शहद द्वारा रूद्राभिषेक एवं रात्रि 3 बजे 11 लीटर गन्ना रस द्वारा रूद्राभिषेक

18 फरवरी 2015 – अखण्ड रामायण पाठ का सभी शिव भक्तों द्वारा हवन, भण्डारा, सिद्धबाबा द्वारा श्रावण मास में पुनः मिलन की प्रार्थना, विर्सजन।

अगला कार्यक्रम – 10, 11, 12 अगस्त 2015 श्रावण मास